



अंक-05 | वर्ष-05 | 2018



राजभाषा धान

धान की उन्नति : देश की प्रगति



भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
ICAR-National Rice Research Institute
Indian Council of Agricultural Research



“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल’
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार,
सब देशन से लै करहु, भाषा माहि प्रचार ॥”

-भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र

राजभाषा धान



वार्षिक पत्रिका

N R R I

ରାଜ୍ୟନୂପ - ଜାଗାୟ ଧାନ ଗବେଷଣା ଅନୁଷ୍ଠାନ
ମାକ୍ୟାନୁପ - ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଚାଵଳ ଅନୁସଂଧାନ ସଂସ୍ଥାନ
ICAR - NATIONAL RICE RESEARCH INSTITUTE
(An ISO 9001: 2008 Certified Organization)





वर्ष-05

2018

अंक-05

संरक्षक एवं प्रकाशक

डॉ.हिमांशु पाठक

निदेशक, राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कटक

मुख्य संपादक

आशुतोष कुमार तिवारी

सहायक निदेशक (राजभाषा) सचिव, नराकास कटक

तकनीकी संपादन

डॉ.जी.ए.के.कुमार डॉ.राहुल त्रिपाठी
डॉ. अवधेश कुमार डॉ.रामलखन वर्मा

संपादकीय सहायता

बिभु कल्याण महांती

संध्यारानी दलाल

रंजन साहू

छायांकन

प्रकाश कर

भगवान बेहेरा

अर्णब मलिक

प्रारूप

सुनील कुमार सिन्हा

डिस्क्लेमर- पत्रिका में प्रकाशित लेख संबंधित लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

निदेशक

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान,

विद्याधरपुर कटक-753006, ओडिशा

फोन- 0671- 2367757

ईमेल-director.nrri@icar.gov.in

वेबसाइट : icar-nrri.in

निःशुल्क वितरण के लिए

भारती वंदना

“भारति जय, विजय करे !
कनक-शर्च्य कमलधरे !
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता-शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे !
तरु-तृण-वन-लता वसन
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार
प्राण प्रणव ओंकार,
धनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे !”

-सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’



निदेशक की कलम से

पत्रिकाएँ किसी भी समाज की क्रियाशीलता का दर्पण होती हैं। देश एवं विश्व स्तर पर घटित होने वाली घटनाओं के संदर्भ में संतुलित समझ विकसित करना, आस-पास के परिवेश तथा संपूर्ण भूमंडलीय पर्यावरण की चिंताओं के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक बनाना तथा समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की समस्याओं को व्यापक पटल पर प्रस्तुत करना पत्रिकाओं की वे निराली विशेषताएँ हैं जो इनके महत्व को सार्वभौमिक बनाती हैं।

जहां तक हिंदी पत्रिकाओं का संबंध है हम सभी यह भली-भांति जानते हैं कि हिंदी भाषा के देशव्यापी व्यवहार के कारण हिंदी पत्रिकाएँ बुद्धिजीवी वर्ग से लेकर आम भारतीय तक बहुत सहजता के साथ अपनी पहुंच बना लेती हैं। हिंदी भाषा की यही असली ताकत है। हिंदी पत्रिकाओं के इतिहास का सिंहावलोकन करने से यह पता चलता है कि पंडित जुगुल किशोर शुक्ल ने सन 1826 में 'उदंत मार्टड' पत्रिका के द्वारा हिंदी पत्रिका की जिस परंपरा की शुरुआत की थी वह 'प्रजामित्र' (1834) 'तत्वबोधिनी' (1865) एवं 'सोमप्रकाश' (1866) पत्रिकाओं के साथ अग्रसर होते हुए 'सरस्वती' (1900) तथा 'हंस' (1930) में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंची और जब इस परंपरा को 1921 में हिंदी नवजीवन के रूप में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का संबल प्राप्त हुआ तब हिंदी पत्रिका सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय जनजागृति तथा सामाजिक संस्कृति की प्रतीक बन गई।

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की राजभाषा पत्रिका धान हिंदी पत्रिकाओं के पूर्वस्थापित राष्ट्रीय मूल्यों से अनुप्रेरित है। इस अंक में विभिन्न लेखकों ने विशेषकर हिंदीतर भाषी (तमिल, तेलुगु, बांग्ला, ओडिया भाषी) लेखकों ने विविध विषयों पर हिंदी में जो मौलिक लेखन का प्रयास किया है, वह अत्यंत प्रशंसनीय है और प्रकारांतर से उनका यह प्रयत्न हिंदी की राष्ट्रीय एकता तथा समन्वय की मूल चेतना को रेखांकित करता है।

मैं सभी लेखकों का हृदय से आभार प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि भविष्य में भी उनका यह सहयोग हमें ऐसे ही प्राप्त होता रहेगा। मैं पत्रिका के संकलन, संपादन एवं प्रकाशन कार्य में सम्मिलित संस्थान के सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूं।

हिंदू

डॉ. हिमांशु पाठक
निदेशक

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान



धान



हिंदी जन की बोली है

एक ऊर में सबको जो है बाँधती
वह हिंदी है,
हर भाषा को सगी बहन जो मानती
वह हिंदी है।

भरी-पूरी हों सभी बोलियाँ
यही कामना हिंदी है,
गहरी हो पहचान आपसी
यही साधना हिंदी है,
सौत विदेशी रहे न रानी
यही भावना हिंदी है।

तत्सम, तदभव, देश विदेशी
जैसे आप बोलना चाहें
वही मधुर, वह मन भाती,
नए अर्थ के रूप धारती
हर प्रदेश की माटी पर,
“खाली-पीली-बोम-भारती”

बंबई की चौपाटी पर,
चौरंगी से चली नवेली
प्रीति-पियासी हिंदी है।

बहुत-बहुत तुम हमको लगती
‘भालो-बाशी, हिंदी है।

उच्च वर्ग की प्रिय अंग्रेजी
हिंदी जन की बोली है,
वर्ग-भेद को खत्म करेगी
हिंदी वह हमजोली है,
सागर में मिलती धाराएँ

हिंदी सबकी संगम है,
शब्द, नाद, लिपि से भी आगे
एक भरोसा अनुपम है,
गंगा कावेरी की धारा
साथ मिलाती हिंदी है,

पुरब-पश्चिम कमल-पंखुरी
सेतु बनाती हिंदी है।

- गिरिजाकुमार माथुर



धान



संपादकीय

काव्य रचना का उद्देश्य क्या है इस पर विचार करते हुए आचार्य मम्मट ने 'काव्य प्रकाश' में कहा है 'काव्यं यशस्सेर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये । सद्यः परिनिवृत्तये कांतासम्मितयोपदेशयुजे ।' अर्थात् यश एवं अर्थ की प्राप्ति, व्यावहारिक ज्ञान में अभिवृद्धि, शिवतत्व की रक्षा, आनंद की प्राप्ति तथा उपदेश अथवा शिक्षा रचनाकार के प्रमुख प्रयोजन हैं । मम्मट के अतिरिक्त अन्य भारतीय काव्यशास्त्रीय आचार्यों जैसे भरतमुनि, भामह, रुद्रट, आनंदवर्धन तथा कुंतक के साथ-साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय विद्वानों विशेषकर प्लेटो, अरस्तु, कॉलरिज तथा वर्डसवर्थ ने काव्य प्रयोजन पर जो विचार व्यक्त किए तथा आधुनिक युग में मादाम दा स्ताल की अगुवाई में साहित्य के समाजशास्त्रीय आलोचना की जो शुरुआत हुई उन सभी का समग्र विवेचन करें तो कम से कम चार ऐसे प्रमुख तत्व प्राप्त होते हैं जो रचना के उद्देश्य के मूल तत्व के रूप में सर्वमान्य से प्रतीत होते हैं- 1. यश की कामना 2. लोकमंगल 3. शिक्षा 4. मनोरंजन

पत्रिकाओं का रचना संसार भी इन्ही प्रमुख तत्वों से अनुप्राणित होकर साकार होता है और धान पत्रिका का पंचम अंक इसका एक निदर्श है । धान का यह अंक विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गए लेखों, कविताओं एवं कहानियों का एक ऐसा संग्रह है जो समग्र रूप में पाठकवर्ग को शिक्षित करता है, उनको जनकल्याण हेतु प्रेरित करता है, उनका मनोरंजन करता है और परोक्ष रूप में संस्थान के यश की कामना भी करता है ।

सभी लेखकों द्वारा लिखे गए लेख अत्यंत आकर्षक हैं जो अपने विषय चयन तथा विषय विश्लेषण से पाठक वर्ग को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं । इस अंक में जो कविताएँ लिखी गई हैं उनमें ज्यादातर कविताएँ नई कविताएँ हैं जिनमें विचार प्रमुख हैं और वे छंदमुक्त हैं किंतु लयात्मकता सर्वत्र देखी जा सकती है । कुछ कविताएँ भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की रचनाशैली का स्मरण कराती हैं और कुछ कविताओं में द्विवेदी युग की झलक दिखाई देती है । किंतु इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी तथा हिंदीतर रचनाकारों ने हिंदी के उत्थान के लिए हिंदी भाषा में मौलिक रूप से रचनाएँ की हैं । यह सामूहिक एवं मौलिक प्रयास ही वास्तव में, हिंदी पत्रिकाओं तथा हिंदी भाषा की संजीवनी शक्ति है ।

आशा करता हूँ कि पाठकवर्ग के लिए यह पत्रिका रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी । पत्रिका से संबंधित सुझाव संस्थान के निदेशक महोदय के नाम से भेजे जा सकते हैं ।

आशुतोष कुमार तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)



प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय हिंदी समिति की बैठक (दिनांक 6 सितंबर 2018)



विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
लेख		
1.	राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान: कार्यकलाप, उपलब्धियाँ एवं आकांक्षाएँ	डॉ. हिमांशु पाठक 1
2.	देश में खाद्य पदार्थों की बरबादी	श्री आशुतोष कुमार तिवारी 5
3.	संपर्क भाषा के रूप में हिंदी	श्री सत्यव्रत महांती 12
4.	योग एवं मानव स्वास्थ्य	श्रीमती सुप्रिया ब्रह्म 15
5.	वैज्ञानिक तरीके से सुरक्षित भंडारण	डॉ. शिवमंगल प्रसाद 16
6.	धान की फसल में सूक्रकृमि की समस्या	डॉ. शंकरी मीना, डॉ. सोमनाथ एस पोखरे 18
7.	प्लास्टिक बैग को ना कहें	डॉ. लोटन कुमार बोस 21
8.	जल की बूंद जीवन की बूंद	ई मनीष देवनाथ 23
9.	सोशल मीडिया	डॉ. नीतीश ओझा 25
10.	उत्कृष्ट जीवन	श्री रंजन साहु 29
11.	पानी बचाओं पृथ्वी बचाओ	डॉ. लोटन कुमार बोस, डॉ. प्रकाश चंद्र रथ 33
12.	खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए छोटी देशी मछली	श्री अरबिंद महांती 35
13.	खाद्य सुरक्षा में जीन आभियांत्रिकी का योगदान	डॉ. श्रीकांत लेंका, डॉ. प्रदीप कुमार साहु 37
14.	धान फसल के नाशककीटों का पारंपरिक नियंत्रण एवं उपाय	डॉ. प्रकाश चंद्र रथ, डॉ. लोटन कुमार बोस 39
कविताएँ		
15.	इस कदर चुप ना रहा कीजिए	श्रीमती शैल सिंह 43
16.	वैयक्तिक द्वेष से किसी की मेधा को चुनौती देने वालों पर कविता	श्रीमती शैल सिंह 44
17.	भारत के किसान	डॉ. शिवमंगल प्रसाद 45
18.	पर्यावरण	श्री संदीप कुमार वर्मा 46
19.	मेरा हाल ये हुआ	श्रीमती मिताश्री रथ 47
20.	वो दिन जब याद आए	सुश्री सृष्टि प्रसाद 48
21.	पापा	सुश्री आरती मुदगल 49
22.	प्लास्टिक के आगोश में समाती ये दुनिया	श्री शैलेश अवस्थी 50
कहानी		
23.	टिकियाबन आलूबर्गर	श्रीमती उमारानी माथुर 53
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कटक तथा संस्थान में राजभाषा संबंधी आयोजन		57
इंद्रधनुष		67



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान: कार्यकलाप, उपलब्धियाँ एवं आकांक्षाएँ

डॉ. हिमांशु पाठक, निदेशक

भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक



चावल विश्व की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है और संसार की लगभग आधी आबादी का मुख्य भोजन है। चावल की खेती विभिन्न प्रकार की जलवायु परिस्थितियों में एक व्यापक शृंखला में उत्तर कोरिया से लेकर ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण तक लगभग 160 मिलियन हैक्टर की भूमि में की जाती है। भारत के केरल में समुद्र तल के 6 फीट नीचे से लेकर हिमालय पर समुद्र तल से 2700 फीट ऊंचाई पर इसकी खेती होती है। चावल की फसल कई एशियाई देशों की आजैविका, संस्कृति एवं परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

भारत के लोग चावल की खेती पिछले 7000 वर्षों से करते रहे हैं। भारत की दो-तिहाई से अधिक जनसंख्या का यह प्रमुख आहार है। वर्ष 1950 से पहले चावल की खेती मुख्यतः मानसून वर्षा पर निर्भर थी एवं पारंपारिक तरीकों से की जाती थी। वर्षा की कमी या फिर अत्यधिक वर्षा के कारण प्रमुख अजैविक दबावों जैसे सूखा एवं बाढ़ की घटनाएँ प्रायः होती थीं। इन अजैविक दबावों के कारण व्यापक रूप से फसल की हानि, भूखमरी और यहां तक की अकाल की घटनाएँ भी होती थीं जैसे कि सन 1866 का ओडिशा का भीषण अकाल (नंक दुर्भिक्ष) जिसमें लगभग 10 लाख लोगों की मृत्यु हुई एवं सन 1943 में घटित भीषण बंगाल अकाल में लगभग 20 लाख लोग मारे गए थे। इस अकाल की पृष्ठभूमि में, भारत सरकार ने सन 1946 में 23 अप्रैल को ओडिशा के कटक के विद्याधरपुर में ओडिशा सरकार द्वारा प्रदत्त 60 हैक्टर के परीक्षण खेत सहित केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की स्थापना का निर्णय लिया जिसे अब राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के नाम से जाना जाता है। डॉ. के. रमेया, सुप्रसिद्ध धान प्रजनक इसके संस्थापक निदेशक थे। बाद में सन 1966 में संस्थान की प्रशासनिक नियंत्रण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को स्थानांतरित हो गया। वर्तमान संस्थान में

अनुसंधान के लिए 117 हैक्टर भूमि है तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के अधीन दो अनुसंधान केंद्र कार्यरत हैं। उपरीभूमि वर्षाश्रित पारिस्थितिकी के लिए एक केंद्र हजारीबाग, झारखंड में तथा वर्षाश्रित निचलीभूमि बाढ़-प्रवण पारिस्थितिकी के लिए दूसरा केंद्र असम के गेरुआ में स्थित है। तटीय चावल क्षेत्रों की समस्याओं के निपटान हेतु आंध्र प्रदेश के नायरा में तीसरा अनुसंधान केंद्र स्थापित किया जा रहा है। एनआरआरआई के अधीन कटक के संथपुर में तथा झारखंड के हजारीबाग के कोडरमा में दो कृषि विज्ञान केंद्र भी कार्यरत हैं।

संस्थान ने अब तक अधिक उपज देने वाली 133 चावल किस्में, कई फसल उत्पादन एवं सुरक्षा प्रौद्योगिकियां तथा प्रक्षेत्र उपकरण विकसित किए हैं। देश में 18-20 प्रतिशत चावल की खेती की जाने वाली भूमियों में इस अग्रणी चावल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित किस्मों की खेती की जा रही है। यह संस्थान 120 मिलियन टन गुणवत्ता बीज उत्पादन करता है जिससे देश की 26 प्रतिशत बीज की मांग पूरी होती है। संस्थान ने देश के चावल के उत्पादन में वृद्धि हेतु महत्वपूर्ण रूप से योगदान किया है तथा वर्ष 1950 में 20 मिलियन टन के उत्पादन से वर्तमान 112 मिलियन टन तक के स्तर तक पहुंच चुका है। देश लगभग 10 मिलियन टन चावल वार्षिक निर्यात करता है जिससे एक बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जन हो रहा है।



CR Dhan 802: A Climate-smart Variety of NRRI

सभी खाद्यान्नों में, चावल एक महत्वपूर्ण खाद्य है किंतु सामान्य रूप से इसमें 6-7 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा होती है जिससे



गंभीर पौष्टिक समस्या होती है। पूरे संसार में संस्थान ने पहली बार **सीआर धान 310** तथा **सीआर धान 311** नामक दो उच्च प्रोटीनयुक्त चावल किस्में विकसित की हैं जिसमें चावल की कुटाई के बाद औसत प्रोटीन की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक है। जलवायु परिवर्तन की उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए संस्थान ने **सीआर धान 801** एवं **सीआर धान 802** नामक दो जलवायु-अनुकूल किस्में विकसित की हैं जिसमें फिर से प्रथम बार सूखा, बाढ़ तथा जैविक दबावों के प्रति अनुकूलनीयता है।



संस्थान ने राष्ट्रीय जीन बैंक में दीर्घकालिक भंडारण के रूप में 35,600 प्रविष्टियां संरक्षित की हैं तथा मध्यम अवधि भंडारण के रूप में 20,000 प्रविष्टियां एनआरआरआई के जीन बैंक में संरक्षित की हैं। संस्थान ने नत्रजन एवं फॉस्फोरस प्रयोग कार्यक्षमता में वृद्धि के लिए माइक्रोबायल सूक्त्रण, अनुकूलतम फसल प्रबंधन हेतु कैलीब्रेटेड एवं मान्यकृत सिम्यूलेशन नमूने विकसित की हैं, चावल अपशिष्टों के पर्यावरण-मैत्री एवं किफायती प्रयोगों के विकल्प की पहचान की है, छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए 30 से अधिक उपकरण तैयार की है, समन्वित कृषि प्रणाली नमूनों का प्रदर्शन किया है तथा जलवायु परिवर्तन अनुकूलनीयता एवं प्रशमन के लिए प्रौद्योगिकियां एवं रणनीतियां विकसित की हैं।

चावल के नाशककीटों के विरुद्ध प्रतिरोधिता के नए स्रोतों की खोज के लिए 1,25,000 से अधिक जीनप्ररूपों का परीक्षण किया है। संस्थान ने जीवाणुज पत्ता अंगमारी एवं भूरा पौध माहू के विरुद्ध प्रतिरोधी जीनप्ररूपों की पहचान की है। संस्थान ने समन्वित नाशककीट प्रबंधन प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में पर्यावरण-मित्र पौधों के तेल निचोड़ के प्रयोग तथा भंडारित चावल नाशककीटों के विरुद्ध फॉस्फाइन धूमक के प्रयोग की पहचान की है। इसने व्यावसायिक चावल-मछली समन्वित कृषि प्रणाली के लिए कई नमूनों का विकास किया है एवं उनका प्रोत्साहन किया है।

संस्थान ने किसानों की आजीविका में सुधार करने एवं समृद्धि लाने के लिए तथा चावल विज्ञान में हुए विकास कार्यों को किसानों से अवगत कराने के लिए चावल प्रणाली के लिए स्व-निर्भरशील, स्थायी बीज प्रणाली, किसान प्रक्षेत्र नवोन्मेष संसाधन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मेरा गांव मेरा गौरव एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम आरंभ किए हैं। पिछले पाँच वर्षों में संस्थान ने 144 गांवों का दौरा किया है, 27,000 से अधिक किसान परिवारों को लाभ पहुंचाया है, 5 किसान उत्पादक समूहों की स्थापना की है, 50 से अधिक कंपनियों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, 60,000 हितधारकों को कृषि-परामर्शी सेवाएँ प्रदान की हैं तथा चावल प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए एवं प्रतिक्रिया प्रणाली सहित अंग्रेजी, हिंदी एवं ओडिया भाषा में एक राइस एक्सपर्ट ऐप्प विकसित किया है जिसमें आवाज की रिकार्डिंग की सुविधा उपलब्ध है।





धान

चावल पर अग्रणी अनुसंधान करने के लिए संस्थान में अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ एवं उपकरणों से लैस सुविधाएँ हैं। संस्थान के पास जड़ की आकृति, लंबाई, क्षेत्र एवं मात्रा, टोपोलॉजी, बनावट एवं रंग के अध्ययन के लिए उच्च रिजोल्यूशन वाली लट स्कैनलाइजर, पौध एवं मृदा में नत्रजन तथा कार्बन की मात्रा निर्धारित करने के लिए नाइट्रोजन ऑटो-एनालाइजर, पौधों की स्वास्थ्य का पता लगाने के लिए क्लोरोफिल फ्लोरेसेंस इमेजिंग सिस्टम, एमिनो एसिड की रूपरेखा तथा फ्लेवोनोएड्स के विश्लेषण के लिए अति उच्च प्रदर्शन वाली लिक्विड क्रोमाटोग्राफी, ग्रीन हाउस गैस के माप के लिए गैस क्रोमाटोग्राफ, मृदा, पौध एवं जल में धातु एवं उपधातुओं के मूल्यांकन के लिए एटामिक अवसरण स्पेक्ट्रोफोटोमीटर तथा इंडक्टिव कपल्ड प्लाज्मा-ऑपटिकल एमिशन स्पेक्ट्रोमीटर, किसी वांछित जीन या डीएनए के विशिष्ट क्षेत्र की प्रतिलिपि करने के लिए पीसीआर/थर्मल साइक्लर, जीन प्रकटीकरण प्रोफाइलिंग के लिए आरटी-पीसीआर, मेटाबोलिक फिंगरप्रिंट के द्वारा पर्यावरणीय सूक्ष्मजैविकों की पहचान हेतु बायोलॉग, डीएनए, आरएनए एवं प्रोटीन मात्राओं के निर्धारण के लिए नैनो-स्पेक्ट्रोमीटर, प्राकृतिक पर्यावरण में जीवाणुज आनुवंशिक विविधता के मूल्यांकन के लिए डीनेच्यूरिंग ग्रेडिएंट जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस, फ्लोरेसेंस माइक्रोस्कोप एवं स्टीरियो माइक्रोस्कोप मौजूद हैं।

संस्थान ने हाल ही में पूर्ण विकसित अत्याधुनिक केंद्रीय जीनोमकी एवं गुणवत्ता प्रयोगशाला की स्थापना की है। समाजविज्ञान प्रभाग के लिए नया भवन, संथपुर में कृषि विज्ञान केंद्र का नया प्रशासनिक भवन तथा एक सभागार का निर्माण किया है।

संस्थान द्वारा नियमित रूप से न्यूजलेटर, तकनीकी बुलेटिनों, पॉलिसी पेपर, विजन डाक्यूमेंट एवं पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है।



यह संस्थान साझेदारी मोड पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कई संस्थानों, विश्वविद्यालयों, मानद विश्वविद्यालयों एवं विदेशी संस्थानों के साथ सहयोग करता है। यह अपने प्रयोगशाला सुविधाओं, प्रक्षेत्र अनुसंधान मार्गों को अद्यतन करने के लिए लगातार प्रयासरत है तथा किसानों की आय बढ़ाने एवं नए, मान्य प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए किसानों के साथ संपर्क रखता है।



यह संस्थान चावल विज्ञान के विभिन्न अध्ययनशाखाओं में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण अवसर प्रदान करता है। एनआरआरआई में मानव संसाधन विकास संबंधी कार्यकलाप में एमएससी/ एमटेक/ समतुल्य डिग्री, पीएचडी डिग्री एवं प्रशिक्षण शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी डिग्री के विद्यार्थियों के लिए एनआरआरआई-आईआरआरआई कार्यक्रम से फैलोशिप के लाभ की प्राप्ति के लिए एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है जिसमें 25 अध्येतावृत्ति प्रदान की जाती है। हजारीबाग का उपकेंद्र उस क्षेत्र के आँचलिक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए एमएससी विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण देता है तथा पीएचडी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है। पिछले पाँच वर्षों में 5000 व्यक्तियों को चावल आधारित प्रौद्योगिकियों एवं कृषि-उद्यमशीलता पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया है तथा 120 एमएससी एवं 30 पीएचडी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया गया है। इसके अतिरिक्त एनआरआरआई नाइजिरिया, तांजानिया एवं नाइजर जैसे विकासशील देशों के चावल अनुसंधानकर्ताओं को पोस्ट डॉक्टरल या अतिथि अध्येता के रूप में प्रशिक्षित कर चुका है।

कृषि अनुसंधान एवं विस्तार के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदानों की मान्यता में, सरदार पटेल श्रेष्ठ आईसीएआर संस्थान पुरस्कार (2008) तथा आईसीएआर की श्रेष्ठ वार्षिक



धान

प्रतिवेदन पुरस्कार (2016-17) से संस्थान को पुरस्कृत किया गया है।

वर्तमान, कम उत्पादकता, कम आय, आंशिक कारक उत्पादकता में गिरावट, प्राकृतिक संसाधन आधार का



न्यूनीकरण, जलवायु परिवर्तन के संकट, बढ़ती श्रम एवं ऊर्जा कमियाँ एवं धान पुआल के जलाने के कारण प्रदूषण जैसे कई उभरती चुनौतियों से चावल क्षेत्र को सामना करना पड़ रहा है।

एनआरआरआई में संरचनात्मक विकास तथा किसानों के कल्याण एवं देश की खाद्य एवं पौष्टिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इन चुनौतियों के समाधान के लिए अभिनव चावल अनुसंधान की प्रगति त्वरित हुई है। संस्थान **सुपर उपज (10 टन प्रति हैक्टर)**, जलवायु अनुकूल, पोषक-कार्यक्षम एवं पोषकतत्त्वों से समृद्ध किस्में विकसित करने, **सी4** चावल तथा अधिक उत्पादकता, लाभप्रदता, जलवायु अनुकूलनीयता एवं चावल की खेती की स्थिरता के लिए के लिए कार्य कर रहा है।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



देश में खाद्य पदार्थों की बरबादी

आशुतोष कुमार तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा)
भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

बेहतर तकनीकी तथा कुशल प्रबंधन के अभाव के कारण प्रतिवर्ष देश में लगभग 67 मिलियन टन खाद्य पदार्थों का नष्ट हो जाना और शादी व अन्य समारोहों में देशवासियों की असंवेदनशीलता के कारण भारी मात्रा में पके-पकाए भोजन को कूड़े के ढेर में फेंका जाना कम से कम एक ऐसे देश के लिए बहुत ही चिंता और आत्ममंथन का विषय है जिसकी पुरानी पीढ़ियों की अधिकांश जनता भीषण अकाल चक्रों में अन्न के लिए तरसती हुई मौत के मुंह में समा चुकी हो और जहां आज भी 20 करोड़ देशवासी प्रतिदिन भूखे पेट सोने के लिए मजबूर हों।

भूखमरी और भारतवर्ष का संबंध बहुत पुराना है। लेकिन इतिहास लेखन का आभिजात्य प्रेम इतना गहरा और एकांतिक है कि इसमें राजतंत्रों और राजदरबारों के वैभव और संपत्ति का यशोगान और महिमामंडन जोर-शोर से किया गया लेकिन आम जनता की दशा के बारे प्रायः चर्चा तक नहीं की गई। राजदरबारों की संपन्नता को पूरे देश की खुशिहाली का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया गया जबकि देश की जनता की वास्तविक स्थिति इससे बिल्कुल अलग थी। अधिकांश किसानों के पास अपनी कृषिभूमि नहीं थी और जिनके पास अपनी स्वयं की कृषियोग्य जमीन थीं उस पर उनको राजस्व भी देना पड़ता था। दुर्भिक्ष के कारण बड़ी संख्या में असमय मृत्यु आम बात थी। इसके साथ ही राजाओं के अहंकार के टकराव और क्षेत्र विस्तार की लालसा के कारण भीषण युद्धों में बड़ी संख्या में किसानों की हत्याएं कर दी जातीं, उनकी खड़ी फसलें रोंद दी जातीं और शत्रुतावश उनके खलिहानों में आग लगा दी जाती। इस प्रकार आम जनता की स्थिति दयनीय थी। उदाहरण के तौर पर मुगल शासक अकबर के जिस शासन काल के वैभव का गुणागान इतिहासकारों द्वारा किया गया है उसी शासन काल के दौरान जनता की वास्तविक स्थिति का वर्णन गोस्वामी तुलसीदास ने इन शब्दों में किया है-

1. 'कलि बारहिं बार दुकाल पड़े
बिन अन्न दुखी सब लोग मरे।'
2. 'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली
बनिक को न बनिज, चाकर को न चाकरी।
जीविकाविहीन लोग सीद्यमान सोच बस।
कहें एक एकन साँ, कहां जाई, का करी।'

आधुनिक काल पर नजर डालें तो अकाल और भुखमरी की स्थिति में कोई कमी नहीं आई बल्कि और भी भयावह दशा रही। 1764 के बक्सर युद्ध के बाद भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी (अंग्रेजी सत्ता) की स्थापना से लेकर 1947 में सत्ता के हस्तांतरण तक का इतिहास भारत की भुखमरी का सबसे पीड़ादायक अध्याय है। इस समय अवधि में छोटे-बड़े कुल 11 अकालों में लगभग 55 लाख लोग काल-कवलित हुए जबकि कुल जनसंख्या लगभग 331 लाख थी। इनमें बंगाल के भीषण अकाल को कौन भूल सकता है जिसमें बंगाल प्रांत की लगभग तीन लाख आबादी समाप्त हो गई। इस अकाल का मार्मिक वर्णन कवि हरिवंशराय बच्चन ने कुछ इस प्रकार किया है-

**मृत्यु अपना मुख शत-योजन खोलती
खाती और चबाती
मोद मनाती,
मग्न हो मृत्यु नृत्य करती।
नग्न हो मृत्यु नृत्य करती
देती परम तुष्टि की ताल
पड़ गया बंगाले में काल
भरी कंगालों से धरती
भरी कंकालों से धरती।** (बंगाल का काल 1946 में रचित)



(द स्टेट्समैन, 22 अगस्त 1943 साभार विकीपीडिया)

1943 के बंगाल के भीषण अकाल ने सरकार को भी झकझोर दिया और भारत में अनेक प्रभावशाली कदम उठाने के लिए मजबूर किया। 23 अप्रैल 1946 को केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की स्थापना कटक में की गई और प्रख्यात चावल वैज्ञानिक डॉ. के.रमेया के नेतृत्व में बंगाल और ओडिशा में धान की फसल की कीटों से संरक्षण हेतु कारगर कदम



उठाने तथा चावल की नई एवं अधिक पैदावार वाली किस्मों के अनुसंधान का कार्य आरंभ हुआ जिसने भुखमरी को दूर करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। आज भी यह संस्थान राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के नाम से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा तथा किसानों की संपन्नता के अपने संकल्प के साथ निरंतर अग्रसर है।

आजादी के बाद साठ के दशक में हरित क्रांति हुई जिसके प्रमुख घटक कार्यक्रम इस प्रकार थे-

1. 1960 में सघन क्षेत्र विकास कार्यक्रम (आईएडीपी) जिसे सात राज्यों के सात जिलों में अपनाया गया। 1965 में इसका नामकरण सघन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (आईएएपी) कर दिया गया और इसे देश के 144 जिलों में लागू किया गया।
2. 1966 में उच्च पैदावार किस्म कार्यक्रम (एचवाईवीपी) अपनाया गया। इस हरित क्रांति के कारण 1960-61 के दशक में खाद्यान्न उत्पादन जो लगभग 82 मिलियन टन था वह 1980-81 के दशक में बढ़कर 130 मिलियन टन के उच्च स्तर पर पहुंच गया।

वर्तमान में भारत का कुल खाद्यान्न उत्पादन (2017-18)

277.49 मिलियन टन है जिसमें-

1. चावल - 111.01 मिलियन टन (रिकार्ड)
2. गेहूं - 97.11 मिलियन टन
3. मोटे अनाज - 45.42 मिलियन टन (रिकार्ड)
4. मक्का - 27.14 मिलियन टन (रिकार्ड)
5. दलहन - 23.95 मिलियन टन (रिकार्ड)
6. चना - 11.10 मिलियन टन (रिकार्ड)
7. तूर - 4.02 मिलियन टन
8. उड्ढ - 3.23 मिलियन टन (रिकार्ड)
9. तिलहन-29.88 मिलियन टन

(स्रोत- प्रेस विज्ञप्ति, 27 फरवरी, 2018, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)

यह देश की गौरवमयी उपलब्धि है और भारत खाद्यान्न के मामले में आज विश्वशक्ति बन चुका है। गेहूं और चावल के उत्पादन में विश्व में द्वितीय स्थान, दाल एवं तिलहन में प्रथम स्थान और मोटे अनाज के उत्पादन में पाँचवां स्थान इसका प्रमाण है।

किंतु इन उपलब्धियों के बावजूद देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन और खाद्य पदार्थों/भोज्य पदार्थों का बहुत बड़ा भाग प्रति वर्ष नष्ट हो जाता है।

***संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम** के अनुसार, भारत में कुल खाद्य पदार्थों के उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत भाग प्रति वर्ष नष्ट हो जाता है।

*खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के वर्ष 2017 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रतिवर्ष नष्ट होने वाले खाद्य पदार्थों का कुल मूल्य लगभग 92,000 करोड़ रुपये है।

क्लीन इंडिया जर्नल के मई 2018 के एक लेख में कहा गया है कि भारत में प्रति वर्ष लगभग 67 मिलियन टन खाद्य पदार्थ नष्ट हो जाते हैं।

***सीएसएआर जर्नल** के अनुसार ब्रिटेन में प्रति वर्ष जितनी मात्रा में खाद्य पदार्थों की खपत होती है उतनी ही मात्रा भारत में प्रति वर्ष नष्ट हो जाती है।

एक ऐसे देश में जहाँ आज भी लगभग 20 करोड़ लोग रात में भूखे पेट सोने को मजबूर हों और जहाँ लगभग 65 मिलियन लोगों को भोजन नसीब न हो और जहाँ 190 मिलियन लोग कृपोषण का शिकार हो उस देश में खाद्य पदार्थों/भोज्य पदार्थों की ऐसी बरबादी अत्यंत चिंताजनक है।

भारत में खाद्य पदार्थों/भोज्य पदार्थ की बड़े पैमाने पर इस बरबादी के तीन प्रमुख आधारिक कारण हैं-

1. देश में खाद्यान्नों (Food grains) का नष्ट होना।
2. सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं अन्य कल्याणकारी योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार।
3. शादी व अन्य समारोहों, होटल, रेस्तरां आदि में पकेपकाए भोजन की भारी बरबादी।

जहाँ तक खाद्यान्नों (Food grains) के नष्ट होने का प्रश्न है, उसके संदर्भ में आँकड़ा यह है कि भारत में फसल कटाई के बाद खाद्यान्नों की होने वाली बरबादी (पीएचएल) 12-16 मिलियन मैट्रिक टन है। विश्व बैंक के अनुसार इतनी मात्रा से भारत के एक-तिहाई गरीबों का पेट भरा जा सकता है। नष्ट होने वाले इस खाद्यान्न का कुल मूल्य लगभग 50,000/- करोड़ रुपये है। (स्रोत: ग्रेन लॉस इन इंडिया एंड गवर्नमेंट पॉलिसिज-एम.नागपाल एवं ए.कुमार)

खाद्यान्नों के नष्ट होने का प्रथम कारण है-किसानों तक वैज्ञानिक तकनीकों के प्रसार का अभाव।

भारत में कृषि कार्य में अधिकतर पारंपरिक तौर-तरीकों का प्रयोग किसानों द्वारा किया जाता है। फसलों की कटाई में कंबाइन मशीनों का प्रयोग कम होने तथा पारंपरिक तरीके जैसे हंसिए आदि के अधिक प्रयोग से फसल की कटाई करने के कारण दाने बिखर जाते हैं और नष्ट होते हैं। प्रायः फसल कटने के सही समय का चुनाव भी गलत होता है। अगर फसल पहले काटी जाती है तो दाने टूटते हैं और कीड़े लगते हैं और



अगर फसल देर से काटी जाती है तो दाने बिखर जाते हैं और पक्षी खा जाते हैं।

भारत में खाद्यान्नों के नष्ट होने का द्वितीय एवं सबसे महत्वपूर्ण कारण है-खाद्यान्नों के भंडारण की अवैज्ञानिक पद्धति। भारत में खाद्यान्नों की सर्वाधिक बरबादी भंडारण के स्तर पर होती है।

भारत में 50-60% खाद्यान्नों का भंडारण किसानों द्वारा किया जाता है जिसमें प्रायः परंपरागत तरीके जैसे डेहरी/ कोठी/ कंजा आदि ही अपनाए जाते हैं जिसके कारण खाद्यान्नों का रख-रखाव समुचित ढंग से नहीं हो पाता और खाद्यान्न नष्ट हो जाते हैं। **द हिंदू के विजनेस लाइन समाचारपत्र** के मई 2018 में छपे एक लेख के अनुसार भारत में आधुनिक भंडारण की कमी के कारण प्रति वर्ष लगभग 14 बिलियन डालर के खाद्यान्न का नुकसान होता है। समाचारपत्र के अनुसार भारत में वैज्ञानिक तरीके से युक्त भंडारणगृहों की बहुत कमी है। अभी केवल अदानी एग्री लॉजिस्टिक्स लिमिटेड एकमात्र कंपनी है जो सीलो स्टोरेज सुविधा प्रदान करती है और जिसकी कुल क्षमता 8.75 लाख टन ही है। **उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय** के दिनांक 12 फरवरी 2019 को लोकसभा के एक अतारांकित प्रश्न के उत्तर में जारी प्रेस विज्ञप्ति में यह सूचना दी गई कि भारतीय खाद्य निगम, केंद्रीय भंडारण निगम तथा राज्य भंडारण गृहों की कुल भंडारण क्षमता 85.15 मिलियन टन है। खाद्यान्न में उत्पादन के रिकार्ड स्तर को देखते हुए यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भंडारण के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।



साभार mint.com

भारत में खाद्य पदार्थों/भोज्य पदार्थों की बरबादी दूसरा आधारिक कारण है खाद्यान्नों के सार्वजनिक वितरण में कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार। सरकारी तंत्र में व्याप्त इस मानसिकता ने लक्षित एवं वंचित वर्ग से उनका खाद्यान्न ही एक तरह से छिन लिया है और उन्हें भुखमरी की दशा की ओर

धकेला है।

देश के लोगों की खाद्यसुरक्षा के प्रति अपनी दायित्व को निभाते हुए भारत सरकार ने **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013** बनाया जो 10 सितंबर 2013 से लागू हो गया। इसके अंतर्गत लोगों को रियायती दर पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है। यह खाद्य सुरक्षा को समाज कल्याण के एक उपाय के बजाय कानूनी अधिकार के रूप में मान्यता देता है। इस अधिनियम से 75 प्रतिशत ग्रामीण आबादी तथा 50 प्रतिशत शहरी आबादी लाभान्वित है। यह देश के दो-तिहाई आबादी को लाभ पहुंचाता है। लेकिन खाद्य सुरक्षा के लिए जारी समाज कल्याण योजनाओं तथा वितरण प्रणाली में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा कुप्रबंधन के कारण खाद्यान्न का बहुत बड़ा हिस्सा उन लोगों तक नहीं पहुंच पाता जो इसके हकदार हैं। इस भ्रष्ट आचरण के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

- सीएजी रिपोर्ट 2015** के अनुसार सार्वजनिक वितरण प्रणाली के द्वारा धान के खरीद और मिलिंग के नाम पर लगभग 40,000 करोड़ रुपये का घोटाला किया गया जो लगभग पाँच वर्षों से बदस्तूर जारी था। सीएजी रिपोर्ट 2017 के अनुसार एफसीआई डिपो में काम करने वाले कुछ प्रॉक्सी मजदूरों को 2 से 3 लाख रुपये प्रति माह मजदूरी दी गई। इसी डिपो के दस्तावेज में सीएजी ने पाया कि कुछ मजदूरों द्वारा व्यक्तिगत रूप से एक दिन में 1776 खाद्यान्नों के बोरे ढोए गए।
- इंडियन एक्सप्रेस (16 नवंबर 2018) के अनुसार भारतीय खाद्य निगम के **मीनांगड़ी फुड सप्लाई डिपो**, केरल से 2399 खाद्यान्नों के बोरे निजी डीलरों को बेच दिए गए। यह खाद्यान्न गरीबों के लिए था और जिसका मूल्य कुल 3879861 रुपये था। सीबीआई द्वारा इसकी जाँच जारी है।
- 2002-2010 के बीच जारी उत्तर प्रदेश के खाद्यान्न घोटाले ने सबको चौंका दिया था और इसे सभी खाद्यान्नों घोटालों की जननी कहा गया। इस घोटाले में 350 बिलियन मूल्य का अनाज जिसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा काम के बदले अनाज योजना के द्वारा मजदूरों एवं गरीबों को वितरित किया जाना था उसे भ्रष्ट अधिकारियों ने खुले मार्केट में गैर-कानूनी ढंग से बेच दिया और जो कालाबाजारी के माध्यम से नेपाल और बांग्लादेश तक भेजा गया।

भारत में खाद्य पदार्थों/भोज्य पदार्थों के नष्ट होने का **तीसरा प्रमुख आधारिक कारण** है शादी एवं अन्य समारोहों में पके-पकाए भोजन की भारी बरबादी।



यह बात कहने और देखने में छोटी सी लगती है लेकिन अगर गहराई से इस पर विचार करें तो इससे होने वाले भोजन की बरबादी का सहज अनुमान किया जा सकता है और इस बात का अनुभव किया जा सकता है कि हमारी एक छोटी-सी गलती अथवा असंवेदनशीलता कितनी बड़ी समस्या का कारण बन जाती है। भारत सांस्कृतिक समारोहों एवं त्यौहारों का देश है। यहां प्रतिदिन भारी संख्या ऐसे समारोह आयोजित किए जाते हैं जिनमें भोजन की व्यवस्था अनिवार्यतः की जाती है। प्रायः देखा जाता है कि इन समारोहों में आमंत्रित लोग आवश्यकता से अधिक भोजन अपनी प्लेट में लेते हैं और जो चीजें उन्हें पसंद नहीं आती अथवा जिस अतिरिक्त भोजन को खाने की क्षमता नहीं होती उसे कूड़ेदान में फेंक देते हैं।



इकोनोमिक्स टाइम्स के अनुसार भारत में प्रतिदिन 244 करोड़ रुपये का भोजन कूड़े में फेंक दिया जाता है।

खाद्य पदार्थों/भोजन की बरबादी और भारत में भूखमरी के वर्तमान स्वरूप को देखते हुए आज समय की मांग है कि संस्थागत तथा व्यक्तिगत स्तर पर ऐसे त्वरित प्रयासों की आवश्यकता है जिनकों अपनाकर इस भोज्य पदार्थों की बरबादी को रोका जा सके। ऐसे कुछ प्रयास इस प्रकार हो सकते हैं।

क- संस्थागत स्तर पर-

1. भंडारण की आधुनिक तकनीकी अपनाई जानी चाहिए। खाद्यान्न की अधिकतर बरबादी भंडारण के स्तर पर होती है क्योंकि भारत में भंडारण के लिए मुख्यतः पारंपरिक तरीके अपनाए जाते हैं। भारतीय खाद्य निगम के भंडारणगृह भी परंपरागत तरीके के हैं जिसके कारण भारी मात्रा में अनाज के सङ्घरण और नष्ट होने की घटनाएँ सामने आती हैं।

भारतीय खाद्य निगम के इन परंपरागत भंडारणगृहों के स्थान पर आधुनिक वैज्ञानिक तरीके के सीलो (silo) का निर्माण किया जाना चाहिए जिससे कि अनाज की बरबादी न हो।

2. अनाज की खरीद से लेकर उसे भंडारण और वितरण के लिए सर्वाधिकार प्राप्त संगठन-भारतीय खाद्य निगम के अधिकार क्षेत्र में कमी की जानी चाहिए। भारतीय खाद्य



सीलो

निगम को केवल अनाज के खरीद तथा उसके भंडारण के दायित्व तक सीमित किया जाना चाहिए।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली तथा अन्य सामाजिक कल्याण योजनाओं के लिए खाद्यान्न के वितरण के लिए एक स्वतंत्र केंद्रीय एजेंसी की स्थापना की जानी चाहिए जिसमें कृषि विशेषज्ञ, प्रबंधन विशेषज्ञ एवं प्रशासनिक सदस्यों के साथ-साथ एक न्यायिक सदस्य की भी नियुक्ति की जानी चाहिए।

3. भारतीय खाद्य निगम के देश भर में फैले सप्लाई डिपो का वैज्ञानिक तरीके से नवीनीकरण किया जाना चाहिए तथा सप्लाई डिपो में लापरवाही के कारण खाद्यान्नों के खराब होने तथा सङ्घरण जैसी घटनाओं को संज्ञेय अपराध की श्रेणी में रखा जाना चाहिए।
4. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए क्योंकि किसानों की संपन्नता, युवा वर्ग को रोजगार और विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि का सबसे संभावनायुक्त उद्योग यही है। इसको अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जाना चाहिए। वर्तमान में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शुरू की गई प्रधान मंत्री किसान संपदा योजना (2016-2020), नाबार्ड में खाद्य प्रसंस्करण निधि (300 मिलियन डालर) की स्थापना, डेयरी प्रसंस्करण एवं अवसंरचना विकास निधि (DIDF) बनाया जाना इस दिशा में अत्यंत सार्थक कदम है। इनके बारे में आम किसान को जागरूक किया जाना चाहिए।

ख- व्यक्तिगत स्तर पर

1. प्रत्येक भारतीय नागरिक को भोजन नष्ट करने से बचना चाहिए। शादी समारोह में उतना ही भोजन प्लेट में लें जितना खा सकते हैं बल्कि इससे उत्तम यह है कि जितना खा सकते हैं उससे कम भोजन लेना चाहिए। ऐसा करने



धान

से अपनी स्वयं की और देश की दोनों की सेहत अच्छी होगी।

2. शादी समारोहों के आयोजन में भोजन की व्यवस्था में व्यंजनों की संख्या सीमित रखें। प्रायः प्रतिस्पर्धा एवं प्रदर्शन के लिए बहुत अधिक प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं और उतनी ही मात्रा उनकी बरबादी भी होती है। यह एक प्रकार का नैतिक अपराध है।



3. कुछ प्रसिद्ध स्वयं सेवी संगठनों जो भूखमरी को रोकने और भोजन वितरण के लिए कार्यरत हैं उनके बारे में स्वयं जाने और दूसरों को भी बताएँ और शादी समारोहों में इन संगठनों को जरूर आमंत्रित करें जिससे कि बचा हुआ भोजन गरीबों में वितरित हो जाए। भारत में कार्यरत ऐसे कुछ संगठनों के नाम इस प्रकार हैं- भूख, फिर्डीग इंडिया, रॉबिन हुड आर्मी, रोटी बैंक, एक्शन एगेंस्ट हंगर, अक्षय पात्र, फाइट एगेंस्ट हंगर, नो हंगरी चाइल्ड, इम्ब्रेसिंग द वर्ल्ड, ग्लो टाइड, स्कीप ए मिल।

4. देश के प्रत्येक सक्षम नागरिक को अपनी खरीदारी की आदतों में सुधार करने की आवश्यकता है। प्रायः आर्थिक

रूप से सक्षम नागरिक खाद्यान्नों के निजी स्टोर में खरीदारी के लिए जाते हैं और अनावश्यक रूप से अधिक से अधिक खाने पीने की वस्तुओं को खरीदते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे खरीदी गई सभी वस्तुओं का उपभोग नहीं कर पाते और वे खाद्य पदार्थ सब्जी, फल आदि फ्रिज में रखे-रखे सड़ जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं। आज इन आदतों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है क्योंकि हमारे देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग इन चीजों के लिए तरसता है।

खाद्य एवं कृषि संगठन ने **16 अक्टूबर 2018** को विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर अपने जारी रिपोर्ट में हमें अनावश्यक खाद्य पदार्थों के खरीदारी से बचने का सुझाव दिया है और इसके लिए **स्मार्ट बजट** एवं **खरीदारी** की आदत विकसित करने की बात कही है जिसमें शॉपिंग स्टोर जाने के पूर्व घर पर ही जरूरत की चीजों की लिस्ट बनाना, लिस्ट में शामिल सभी वस्तुओं के सामने उनका लगभग मूल्य लिखना और शॉपिंग स्टोर में जाने के बाद लिस्ट में शामिल वस्तुओं को ही उनके तुलनात्मक मूल्य के अनुरूप खरीदने का सुझाव दिया गया है।

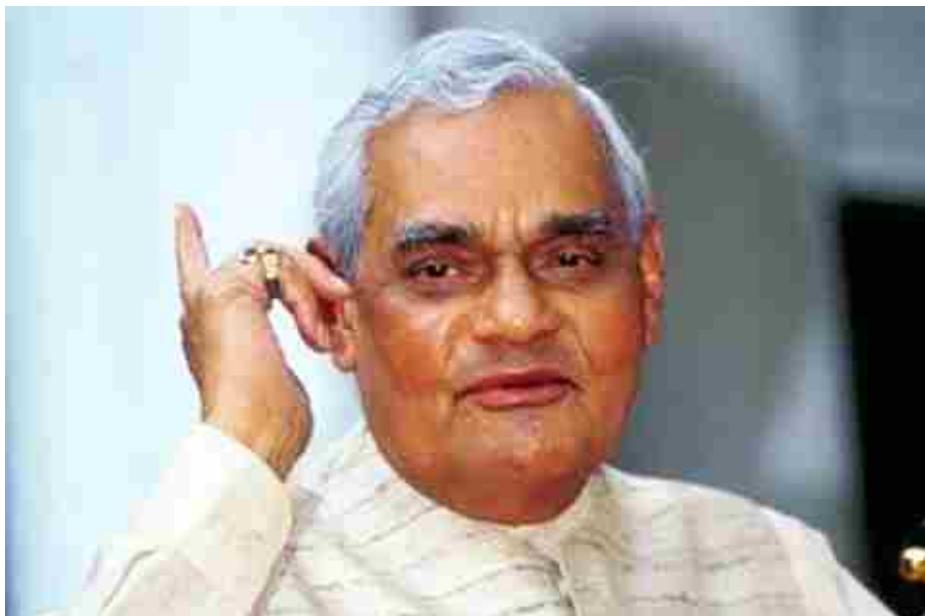
निष्कर्षतः देश में खाद्य पदार्थों की बड़े पैमाने पर बरबादी आज की गंभीर समस्या है। इसके रोकने के लिए अगर समय रहते कारगर कदम नहीं उठाए गए तो स्थिति और भी भयावह हो सकती है।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



जिन्हें हम भूला न सकेंगे.....



अटल बिहारी वाजपेयी
(25 दिसंबर 1924 से 16 अगस्त 2018)

कदम मिला कर चलना होगा

“बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रुदन में, तूफानों में,
अमर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।”



संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

सत्यब्रत महान्ति, तकनीकी सहायक
 भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संथान, कटक

भारत एक विशाल राष्ट्र है। इसके विराट और विस्तृत भू-भाग में सेंकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभाषा पर गर्व करता है। यहाँ तक कि किसी भी समृद्ध भाषा बोलने वाला व्यक्ति अपनी मातृभाषा को दूसरी भाषा से समृद्ध और उन्नत मानता है। ऐसी स्थिति में किसी विशाल राष्ट्र के हर प्रांत के लोगों में संबंध तथा संपर्क स्थापित करने के लिए एक ऐसी भाषा की बड़ी आवश्यकता होती है, जिसके बोलने और समझनेवालों की संख्या अधिक हो और समूचे राष्ट्र में थोड़ी बहुत बोली जाए और समझी जाए। तभी तो हमारे मनीषियों ने भारत की जनता में संपर्क सूत्र खींचकर इसकी एकता और अखंडता को कायम रखने के लिए एक जोड़ भाषा या संपर्क भाषा (Link Language) की आवश्यकता पर बल दिया था। उन्होंने भारत के पूरव से लेकर पश्चिम और उत्तर से लेकर दक्षिण तक के प्रांतों में प्रचलित समस्त भाषाओं में सबसे सशक्त और लोकप्रिय भाषा हिंदी को इस कार्य के लिए माध्यम के रूप में चुना था। साधारणतः प्रत्येक स्वाधीन राष्ट्र की संपर्क भाषा ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होती है। किन्तु यदि किसी देश में राष्ट्रभाषा न हो तो कोई न कोई संपर्क भाषा अवश्य रहती है जिस भाषा में वहाँ के नागरिक बात करते हैं और समझ सकते हैं।

वस्तुतः किसी संपर्क भाषा के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह साहित्यिक दृष्टि से अन्य प्रादेशिक भाषाओं से अधिक उन्नत बल्कि हो उसके बोलने वालों की संख्या अधिक होनी चाहिए। साथ ही उस राष्ट्र के हर नागरिक को उस भाषा ज्ञान का ज्ञान होने की आवश्यकता नहीं होती। उसके लिए सामान्य काम चलाउ ज्ञान भी काफी है। उसका पूरा ज्ञान प्राप्त करना उस लोगों के लिए आवश्यक है जो केंद्र तथा राज्यों में हर काम के लिए संबंध रखते हैं। इस प्रकार संपर्क भाषा उसे कहते हैं जिसके राष्ट्र के एक कोने से दूसरे कोने तक के लोग समझ सकते हैं और-जिसके माध्यम से राष्ट्र के किसी कोने से जाने पर वहाँ की जनता से संपर्क किया जा सकता है। अंग्रेजी में इसे Link Language कहा जाता है।

इस प्रकार संपर्क भाषा का आशय जनभाषा है। संपर्क भाषा की परिभाषा पर अपना विचार स्पष्ट करते हुए डॉ. महेन्द्र सिंह राणा ने कहा है “परस्पर अवोधगम्य भाषा या भाषाओं की उपस्थिति के कारण जिस सुविधा जनक विशिष्ट भाषा के माध्यम से दो व्यक्ति, दो राज्य, कोई राज्य और केंद्र तथा दो देश संपर्क स्थापित कर पाते हैं, उस भाषा विशेष को संपर्क

भाषा या संपर्क साधक भाषा (Contact Language or Inter Language) की संज्ञा दी जा सकती है।

प्राचीन समय में हमारे देश में संस्कृत और यूरोप में लैटिन का प्रमुख स्थान था। भारत में संस्कृत भाषा विद्वानों की सामान्य भाषा थी। लेकिन आम जनता की व्यवहारिक भाषा नहीं थी। संस्कृत के अभिजात वर्ग में सीमित रह जाने पर पालि जनता की जनभाषा बनी। फिर यह भाषा धीरे धीरे संपूर्ण भारत में नहीं विश्व के अन्य कई देशों में गौतम बुद्ध के उपदेशोंके माध्यम से परिचित और परिव्याप्त हो गई। फिर पालि से प्राकृत और विविध अपभ्रंशों का प्रचार प्रसार होने लगा। कालान्तर में पश्चिम हिंदी भारत में संपर्क भाषा के रूप में विकसित हुई। वास्तव में यह कहना असमीचीन नहीं है कि हिंदी का विकास जन भाषा के रूप में शुरू से ही देखते को मिलता है। हमारे देश में फारसी अथवा अंग्रेजी को राजभाषा बनाये रखने के बावजूद हिंदी हमेशा हिंदुस्तान की संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती रही। इतना ही नहीं हिंदी देश की एकता और अखंडता को कायम रखने में अहम् भूमिका अदा करती रही है। उसी प्रकार मध्यकाल में मुसलमान शासकों ने पूरे देश में हिंदी की लोकप्रियता को एवं जन संपर्क की भाषा के रूप में उसके महत्व को देखते हुए इसे स्वीकारा और दरबारों में हिंदी नबीसं रखे जाने लगे। मध्यकाल में सांस्कृतिक चेतना का विकास इसी भाषा से हुआ था। भक्तिकालिन सांस्कृतिक आन्दोलन के सूत्रधार भारत के विविध प्रान्तों में रहनेवाले महापुरुष थे। ये सूत्रधार हिंदु और मुसलमान दोनों संप्रदायों के थे। इन सभी ने मिलकर संपर्क भाषा हिंदी के पहचान से पूरे देश में चेतना उत्पन्न की थी। भक्तिकाल में हिन्दी ही एक व्यापक स्थाई भाषा के रूप में देश में फलने-फूलने लगी।

19वीं सदी में जब पुनर्जागरण का काल आया तब तत्कालीन लोकनायकों ने प्रचार के लिए हिंदी को ही अपनाया। बंगाल में ब्रह्म समाज के नेता राज रायमोहन राय और केशव चंद्र सेन, गुजरात में आर्यसमाज के प्रतिष्ठाता स्वामी दयानंद सरस्वती तथा श्रीमती एनी बेसेंट ने अपनी थियोसोफिकल सोसाइटी के द्वारा समाज में चेतना उत्प्रेरक यानी पुनर्जागरण के लिए हिंदी को ही संपर्क भाषा का माध्यम बनाया था। उसी समय लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानंद आदि भी राजनीतिक क्षेत्र में हिंदी माध्यम से कार्य करते हुए राष्ट्र की बहुत बड़ी सेवा की। ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी का प्रसार



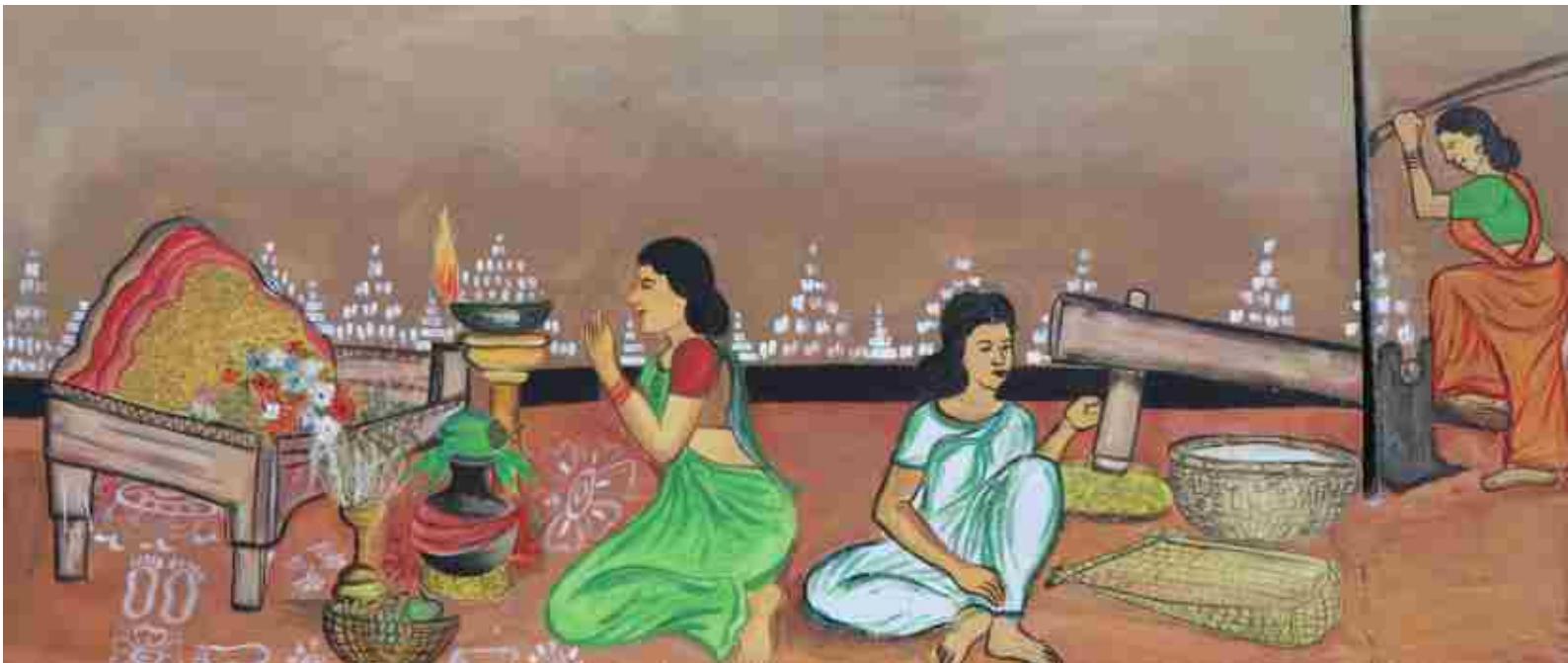
धान

बढ़ा। इस युग में हिंदी का सर्वाधिक प्रचार और-प्रसार हिंदी प्रदेश की अपेक्षा हिंदीतर भाषी प्रदेशों में सर्वाधिक हुआ।

पराधीन भारत में भारत के जन नायकों ने महसूस किया था कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के बिना पूरे राष्ट्र की जनता में जागरण लेना संभव नहीं है। महात्मा गांधी ने सन 1918 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच पर हिंदी में भाषण दिया और- कुछ लोगों से विरोध-करने पर उन्होंने कहा था - "मैंने सन 1915 से कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में भाग लिया है। इन अधिवेशनों का मैंने इस अभिप्राय से अध्ययन किया है कि कार्यवाही को अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दुस्तानी में चलाने से कितनी उपयोगिता बढ़ जाएगी। मैंने सैंकड़ों प्रतियोगियों और हजारों अन्य व्यक्तियों से बातचीत की है और मैंने अन्य व्यक्तियों से अधिक विशाल क्षेत्र का दौरा किया है और अधिक शिक्षित तथा अशिक्षित लोगों से मिला हूँ- लोकमान्य तिलक और श्रीमती एनी बेसेंट से भी अधिक और मैं इस दृढ़ निश्चय पर पहुँचा हूँ हिन्दुस्तानी के अलावा संभवतः कोई ऐसी भाषा नहीं है, जो विचार विनिमय या राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए राष्ट्रीय माध्यम बन सके।" (यंग इंडिया)। इससे

पता चल जाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका कैसी बलिष्ठ और महत्वपूर्ण थी। इस प्रकार स्वाधीनता संग्राम में अपनी भागीदारी के साथ हिंदी ने स्वतंत्र भारत में राजकाज की भाषा के रूप में अपना दावा पेश किया। भारत के स्वतंत्र होने के बाद हिंदी में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। यह अब संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा आदि - राजभाषा भी है।

वस्तुतः: एक संपर्क भाषा के रूप में उसकी लोकप्रियता व्यापक है। पूरे हिन्दुस्तान में समाचार माध्यमों, फिल्मों, दूरदर्शन, धार्मिक संगठनों, राजनीतिक कार्यक्रमों आदि में इसका प्रयोग दिन दूनी रात चौगुनी होता जा रहा है। इसकी लोकप्रियता को देखते हुए विदेश चैनेल भी हिंदी में बहुत सारे कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। निःसन्देह हिंदी केवल संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं है बल्कि विरोध के बावजूद देश की राजकाज की भाषा यानी राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप अपना स्थान सुदृढ़ कर रही है। भारत जैसे विशाल बहु भाषी राष्ट्र के लिए हिंदी जैसी भाषा के माध्यम से भविष्य की सारी संभावनाएँ पूरी होनी चाहिए।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पैटिंग



“असहमति को अवसर दो। सहिष्णुता को आचरण दो
 कि बुद्धि सिर ऊँचा रख सके.....
 उसे हताश मत करो काइयाँ स्वार्थों से
 हरा-हरा कर।
 अविनय को स्थापित मत करो,
 उपेक्षा से खिन्न न हो जाए कहीं
 मनुष्य की साहसिकता।
 अमूल्य थाती है यह सबकी,
 इसे स्वर्ग के लालच में छीन लेने का
 किसी को अधिकार नहीं।...
 आह, तुम नहीं समझते पिता, नहीं समझना चाह रहे,
 कि एक-एक शील पाने के लिए
 कितनी महान आत्माओं ने कितना कष्ट सहा है.....
 सत्य, जिसे हम सब इतनी आसानी से
 अपनी-अपनी तरफ मान लेते हैं सदैव
 विद्रोही-सा रहा है।
 तुम्हारी दृष्टि में मैं विद्रोही हूँ
 क्योंकि मेरे सवाल तुम्हारी मान्यताओं का उल्लंघन करते हैं।
 नया जीवन-बोध संतुष्ट नहीं होता
 ऐसे जवाबों से जिनका संबंध
 आज से नहीं अतीत से है
 तर्क से नहीं रीति से है।”

-आत्मजयी (नचिकेता), बाबू कुँवर नारायण



योग एवं मानव स्वास्थ्य

श्रीमती सुप्रिया ब्रह्मा

- पत्नी, डॉ एल के बोस, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

योग संस्कृत शब्द “युज” से आया है जिसका अर्थ है जोड़ना या संगठित करना। योग अनुशासन का एक रूप है। यह एक शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक अभ्यास है। यह मन और शरीर को नियंत्रित करने की एक तकनीक है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी। योग के माध्यम से, व्यक्ति अपने भीतर या अपने आप को शांतिपूर्ण आनंद के लिए अपना रास्ता खोजने में सक्षम हो पाता है। मन और शरीर एक-दूसरे के साथ संतुलित हो जाते हैं, जिससे आत्मज्ञान प्राप्त होता है। योग एक व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि मानसिक रूप से भी लाभ देता है।



किसी भी उम्र में चाहे वह पुरुष हो या महिला योगाभ्यास कर सकते हैं। योगाभ्यास में विभिन्न शैलियाँ एवं मुद्राएँ होती हैं, जिन पर उनका प्रदर्शन किया जाता है। योग एक हल्का प्रतिरोध कसरत है-लचीलापन, मांसपेशियों की ताकत बनाने में मदद करता है। योग रीढ़ के लचीलेपन में सुधार करने में मदद करता है। पीठ के दर्द को ठीक करता है। साइटिका और गर्दन का दर्द, रक्तचाप को नियंत्रित करता है, रक्त शर्करा को नियंत्रित करता है जिससे परोक्ष रूप से हृदय के स्वास्थ्य में सुधार होता है। योग हमारी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में सुधार करता है, आत्मविश्वास को बढ़ाता है, प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद करता है, जिससे आम बीमारियों में कमी आती है। कुछ योगिक व्यायाम थायरॉइड ग्रंथि की कार्यक्षमता में सुधार करने में मदद करते हैं जिससे चयापचय में सुधार होता है- कुछ योगासन अग्न्याशय को रक्त की आपूर्ति में सुधार करते हैं, इसे कुशलता से कार्य करने और सही मात्रा में इंसुलिन का उत्पादन करने में सक्षम बनाते हैं जो

मधुमेह को प्रबंधित करने और नियंत्रित करने में मदद करता है।

विभिन्न योगासन पेट की मांसपेशियों को मजबूत करके पाचन तंत्र को मजबूत करते हैं। इससे आंतों की गतिशीलता में सुधार होता है जो आम बीमारियों जैसे कब्ज, पेट फूलना, सूजन, एसिड रिफ्लक्स आदि में राहत मिलती है। किसी व्यक्ति के शरीर और मन को संतुलित करने में योग सहायक है। यह तनाव और चिंता को कम करने में सहायता करता है। योगासन को शक्ति, लचीलापन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाना जाता है।

योग के स्वास्थ्य लाभ

- मांसपेशियों के गठन में सुधार होता है।
- शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली में मजबूती आती है।
- पाचन तंत्र बेहतर होता है।
- आंतरिक अंगों को मजबूत करता है।
- अस्थमा को ठीक करता है।
- मधुमेह को ठीक करता है।
- दिल से संबंधित समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है।
- त्वचा को स्वस्थ रखने में मदद करता है।
- शक्ति और सहनशक्ति को बढ़ावा देता है।
- आंतरिक अंगों को टोन करता है।
- एकाग्रता में सुधार करता है।
- मन और विचार नियंत्रण में मदद करता है।
- चिंता, तनाव और अवसाद पर काबू पाने से मन शांत रहता है।
- रक्त परिसंचरण को दुरुस्त करता है।
- वजन घटाता है।

योग एक बहुत ही उपयोगी अभ्यास है जो करना आसान है और कुछ गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से छुटकारा पाने में मदद करता है जो आज की जीवन शैली में आम हैं। इस प्रकार, योग एक चमत्कार है और एक बार पालन करने पर, यह आपको पूरे जीवन का मार्गदर्शन करेगा। प्रतिदिन 20-30 मिनट शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक स्वास्थ्य के बीच संतुलन को बढ़ावा देकर लंबे समय में आप अपने जीवन में बदलाव ला सकते हैं।



वैज्ञानिक तरीके से सुरक्षित भण्डारण

डॉ. शिव मंगल प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक

भारतीय विज्ञान परिषद् विज्ञान अनुसंधान केंद्र, हजारीबाग

उचित भण्डारण के अभाव में या गलत तरीके से भण्डारण करने पर उत्पादक या फिर कहें किसानों को उनके मेहनत का एक बहुत बड़ा हिस्सा आँखों के सामने अनाज तथा बीजों के शत्रुओं जैसे कीट, फफूद, चूहों इत्यादि के द्वारा नष्ट कर दिया जाता है। अनाजों एवं बीजों के ये शत्रु मात्रा तथा गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करते हैं। इनके द्वारा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों प्रकार से हानि पहुँचाई जाती है। सामान्य तौर पर कीटों से प्रभावित अनाजों एवं बीजों में पोषक तत्वों का नष्ट हो जाना, मानवीय उपयोग के अनुरूप न होना, मूल्य में गिरावट, अंकुरण क्षमता में गिरावट तथा उनके परिमाण (मात्रा) में कभी का होना देखा जा सकता है। प्रतिवर्ष कुल उत्पादन का लगभग 15-18 प्रतिशत उपज सुरक्षित भण्डारण के अभाव में नष्ट हो जाती है जिसका आकलन लगभग 18 अरब रुपये किया गया है। इसके पीछे कई कारण हैं:- हमारे गाँवों जहाँ कि उत्पादन होता है, का सुदूर इलाके में बसा होना यातायात के लिए गाँवों तक पक्की सड़कों का न होना, ग्रामीण स्तर पर भण्डार गृहों का न होना, भण्डारण के सुरक्षित तरीकों के बारे में जानकारी का अभाव इत्यादि हैं।

भण्डारण की सही एवं सुरक्षित विधियों को अपनाकर अपने कठोर श्रम द्वारा उत्पादित अनाज एवं बीजों को नष्ट होने से ग्रामीण स्तर पर भी बचाया जा सकता है तथा प्रतिवर्ष होने वाले देश की सम्पदा के क्षति को रोका जा सकता है। भण्डारण के पूर्व बाद की सावधानियाँ तथा भण्डारण की सुरक्षित विधियाँ निम्नलिखित हैं:-

- फसल को अच्छी तरह पकने के बाद कटाई करें।
- दौनी (थ्रेसिंग) करने वाले स्थान की अच्छी तरह सफाई करें।
- दौनी करने वाले स्थान पर अलग-अलग फसल को / प्रजाति को अलग-अलग रखें।
- दौनी करने के बाद अनाज या बीजों की अच्छी तरह सफाई करें, फसल अवशेष, मिट्टी, टूटे दानों और छोटे सिकुड़े दानों को अलग करें।
- नमी की अधिकता के कारण कवकों, कीड़ों तथा अन्य सूक्ष्म जीवों को अच्छा सुयोग मिल जाता है और वे दिन दूनी रात चौगुनी बृद्धि कर भण्डारित वस्तुओं को अपने उपयोग में लाने लगते हैं और बर्बादी होने लगती है।

अनाजों के भण्डारण के लिए 12 प्रतिशत और बीजों के लिए 7-8 प्रतिशत के करीब नमी रहनी चाहिए। अच्छी तरह सुखाये गये दानों को दाँत के नीचे दबाकर देखें, यदि कट के आवाज के साथ दाने ढूट जायें तो समझे कि भण्डारित किया जा सकता है।

- बीज या अनाज को धूप से छाँव में लावें तथा सूखी जगह पर रखें। जब वे घर के अन्दर के तापमान पर आ जायें तब उन्हें नये बोरों या साफ सुधरे उपचारित बोरों या पूसा बीन या पूसा कोठार इत्यादि में भण्डारित करें।
- अनाज तथा बीज का भण्डारण अलग-अलग करें। नये नया पुराने अनाजों को अलग-अलग भण्डारित करें।
- भण्डार गृहों को ऊँचाई पर बनायें ताकि बरसात में जलजमाव की समस्या न रहे।
- भण्डारण से पूर्व, भण्डार गृह की अच्छी तरह सफाई करें।
- यदि हो सके तो चूना में मालाथिओन नाम दवामिलाकर पुताई करें। प्रति लीटर चूने के घोल में 3 मि.ली.दवा दें।
- भण्डार गृह में यदि दरार हो, छिद्र या सुराख हो तो उन्हें बन्द करें इसके लिए सीमेन्ट का प्रयोग करें।
- भण्डारण के लिए पूसा बीन, पूसा कोठार (कोठी) जो कि ग्लेवेनाइण्ड चादरों की बनी होती है अच्छी रहती है।
- यदि पुराने बोरों को उपयोग में लाना है तो उसे साफ करें मालाथिओन दवा का 3 मि.ली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर, घोल में आधा घन्टा डुबोकर फिर बोरों को सुखाकर भण्डारण के काम में लायें।
- भण्डारगृहों में पॉलीथीन बिछायें तब लकड़ी के तख्ते रखें या फिर गेहूँ का सूखा भूसा रखें तब फिर अनाज या बीज के बोरों को रखें। छल्ला लगायें।
- बोरों को रखते समय या छल्ला (थाक) लगाते समय यह ध्यान रखें कि वे भण्डारगृह के दीवारों से डेढ़ फीट की दूरी पर हों।
- भण्डार गृह को चूहों से मुक्त रखा जाए।
- भण्डार गृह को हवादार बनायें पर बरसात के मौसम में बन्द रखें। धूप वाले दोनों में खोल सकते हैं।



धान

- जून मध्य से लेकर अक्टूबर के महीनों में प्रत्येक सप्ताह भण्डारगृह का निरीक्षण करें।
- प्रति क्विन्टल के हिसाब से अल्युमिनियम फॉस्फाइड की 3 ग्राम टिकिया का प्रयोग किया जा सकता है।
- बीजों में मालाथिओन (5 प्रतिशत धूल) पाउडर 250 ग्राम प्रतिक्विन्टल के हिसाब से मिलाकर भण्डारित करें।
- वर्षा ऋतु में भण्डार गृहों में कीटों का पता चले तो धूप वाले दिन बोरों को भण्डार गृह से दूर ले जाकर कीड़ों की सफाई करें। मालाथिओन का भुरकाव भी किया जा सकता है।
- ग्रामीण स्तर पर नीम, करंज, सेनवार, तम्बाकू इत्यादि के पत्रों को छाँव में सुखाकर, अनाज में मिलाकर भण्डारित करते हैं यह भी सुरक्षित तरीका है।
- अनाज, बीज को बोरों में भरकर गेहूँ के भूसे में भी रखा जाता है यह भी ठीक है।
- प्रत्येक तरीके में नमी पर ध्यान देना है क्योंकि नमी सबसे मुख्य कारण है, रोग, कीट एवं अन्य नाशीजीवों के आक्रमण के लिए।

उपर बताये गये बातों पर ध्यान देकर आप अनाज तथा बीज का सुरक्षित भण्डारण कर सकते हैं। अपने को बहुत बड़ी हानि से बचा सकते हैं एवं राष्ट्रीय क्षति से देश को बचाकर एक कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकते हैं।

ध्यान देने वाली कुछ महत्वपूर्ण बातें:

- घरेलू स्तर पर थोड़ी मात्रा में अनाज या बीज का भण्डारण करते हैं तब धूप में खूब अच्छी तरह सुखाकर प्लास्टिक या लोहे के चादरे (ग्लेवेनाइज्ड शीट) से बनी डब्बों या ड्रम या कोठी में अच्छी तरह से ढक्कन लगाकर रख सकते हैं।
- भण्डारण से पूर्व यदि नीम, करंज, बैकैन, पुटूस, शरीफा या यूक्लिप्टस इत्यादि के पत्तों को छाँव में सुखाकर उन अनाज या बीजों में मिलाकर रख सकते हैं।
- प्रतिदिन व्यवहार में लाये जाने वाली दालों या अन्य खाद्य सामग्रियों में लहसुन की कलियाँ मिलाकर रखने से कीटों का आक्रमण नहीं होता।
- सूखी खड़ी लाल मिर्च भी मिलाकर रखने से कीटों के आक्रमण से बचाया जा सकता है।
- माचिस की तिलियाँ भी कीटों के आक्रमण को रोकता है।
- दालों के साथ सूखा नमक एवं लाल मिर्च पाउडर मिलाकर रखने से कीटों के आक्रमण को रोका जा सकता है।
- चना, दाल, उरद, मूँग, बादाम, मटर, काजू, मक्का एवं अन्य प्रतिदिन उपयोग में लाये जाने वाली खाद्य पदार्थों में झांझू कंपनी (आयुर्वेद) की पार टिकिया (मुग्ध रस) मिलाकर रखने से भी कीट नहीं लगते। यह सस्ता और सुरक्षित तरीका है। सूती कपड़े के टुकड़ों में गोली (टिकिया) को बाँधकर रखेंगे तो और सुरक्षित रहेगा।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



धान की फसल में सूत्रकृमि की समस्या एवं रोकथाम

डॉ. शंकरी मीना के. वैज्ञानिक, डॉ. सोमनाथ एस. पोखरे वरिष्ठ वैज्ञानिक

डॉ. एम.जेना प्रधान वैज्ञानिक एवं डॉ. पी.सी.रथ प्रधान वैज्ञानिक

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

चावल दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसलों में से एक है और यह दुनिया की आधी से अधिक आबादी के लिए कार्बोहाइड्रेट का प्राथमिक स्रोत है। हालांकि, पौध परजीवी सूत्रकृमि (पीपीएन) की 200 से अधिक प्रजातियों के चावल की फसल से जुड़े होने की सूचना है, लेकिन कुछ ही आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती हैं जैसे-चावल जड़गाँठ सूत्रकृमि, मेलोयोडोगाइन ग्रामिनीकोला, चावल जड़ सूत्रकृमि, हिर्शामालिना एसपीपी, सफेद टिप सूत्रकृमि, एफेलेकोइड्स बेसेइ, चावल तना सूत्रकृमि, डिटलेनचस, चावल सिस्ट सूत्रकृमि, हेटरोडेरा एसपीपी और चावल घाव सूत्रकृमि प्रैटिलेंकस एसपीपी। पौध परजीवी सूत्रकृमियां औसतन चावल उत्पादन में 25% तक वार्षिक उपज हानि का कारण बन सकते हैं।

हाल के दिनों में, चावल की जड़ गाँठ सूत्रकृमी पूरे उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण देशों में एक बड़े खतरे के रूप में उभरा है। जहां चावल की खेती होती है और इस सूत्रकृमी के कारण होने वाले नुकसान 16-80% के बीच है।

चावल की जड़ गाँठ सूत्रकृमी से प्रभावित चावल के पौधों में उन पौधों के समान लक्षण दिखाई देते हैं जिनमें पोषक तत्वों की कमी होती है। सूत्रकृमी से संक्रमित पौधे की वृद्धि कम होती है, पीलापन, पत्ती का आकार कम, खराब दौजियां और देरी से आने वाली बालियां जैसे लक्षण पैदा दिखाई देते हैं।

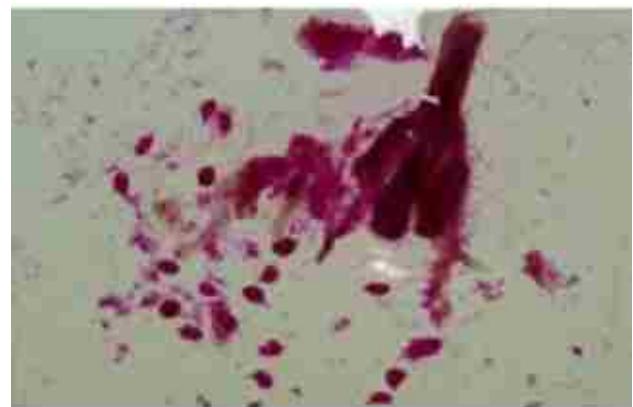
जड़ के अग्र भागों पर मदली हुक आकार के क्षत विशिष्ट लक्षण आते हैं। गंभीर संक्रमण की स्थिति में, कोई बालियां नहीं होती हैं। लक्षणों का प्रकट होना संक्रमण के समय, पौधों की आयु और इनोकुलम लोड और पोषण, मिट्टी के प्रकार, तापमान, नमी आदि से संबंधित अजैविक कारकों पर निर्भर करता है। सूत्रकृमि क्षति अन्य रोगजनकों जैसे कि कवक और जीवाणुओं के पारस्परिक क्रिया द्वारा बढ़ जाती है (सिद्धीकी, 1986)।

यह सूत्रकृमि बीजक्यारियों और उपरीभूमि चाल की एक गंभीर समस्या है और भारत के कई राज्यों में भी गहरे पानी और सिंचित चावल में व्यापक रूप से पाया जाता है (प्रसाद, 1985, जयराजपुरी और बहादुर, 1991)। इसके छोटे जीवन चक्र और विस्तृत परजीवी श्रंखला, कई खरपतवार

प्रजातियों सहित जो चावल के खेतों में आम हैं, इस प्रजाति को नियंत्रित करना मुश्किल बनाते हैं (डी वेले और एल्सेन, 2007)।



चित्र - जड़ के अग्र भागों पर मछली हुक आकार के क्षत



चित्र - जड़ के भीतर सूत्रकृमि के अंडे एवं मादा सूत्रकृमि

हाल के दिनों में, पर्यावरण बाधित होने और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप पानी की कमी ने सीधी आर्द्र बुआई या एरोबिक चावल की खेती को बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए प्रेरित किया है जिससे मेलोयोडोगाइन ग्रामिनीकोला के विकास/गुणन में बढ़ोत्तरी हुई है। (दत्ता, 2012)।

प्रबंधन -

बेहतर फसल प्रबंधन प्रविधियों को अपनाकर परजीवी सूत्रकृमि से होने वाले नुकसान को सीमित करना संभव है। सूत्रकृमि समस्या को कम करने के लिए आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली कुछ प्रविधियाँ निम्नलिखित हैं।



धान

परजीवी पौध प्रतिरोध

इस सूत्रकृमि के कारण होने वाली समस्याओं का एक बेहतर समाधान है जो कि सूत्रकृमि प्रतिरोध के लिए उत्तरदायी जीन वाले पौधे जर्मप्लाज्म संग्रह की उपलब्धता को बढ़ाकर किया जा सकता है। इसे अकेले या प्राथमिक कीट प्रबंधन प्रविधियों में एक प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।

जैविक नियंत्रण

इसे सूत्रकृमि प्रतिपक्षी सूक्ष्मजीव के अनुप्रयोग के माध्यम से या स्वदेशी प्रतिपक्षी रोगाणुओं के संरक्षण और वृद्धि के माध्यम से पूरा किया जा सकता है।

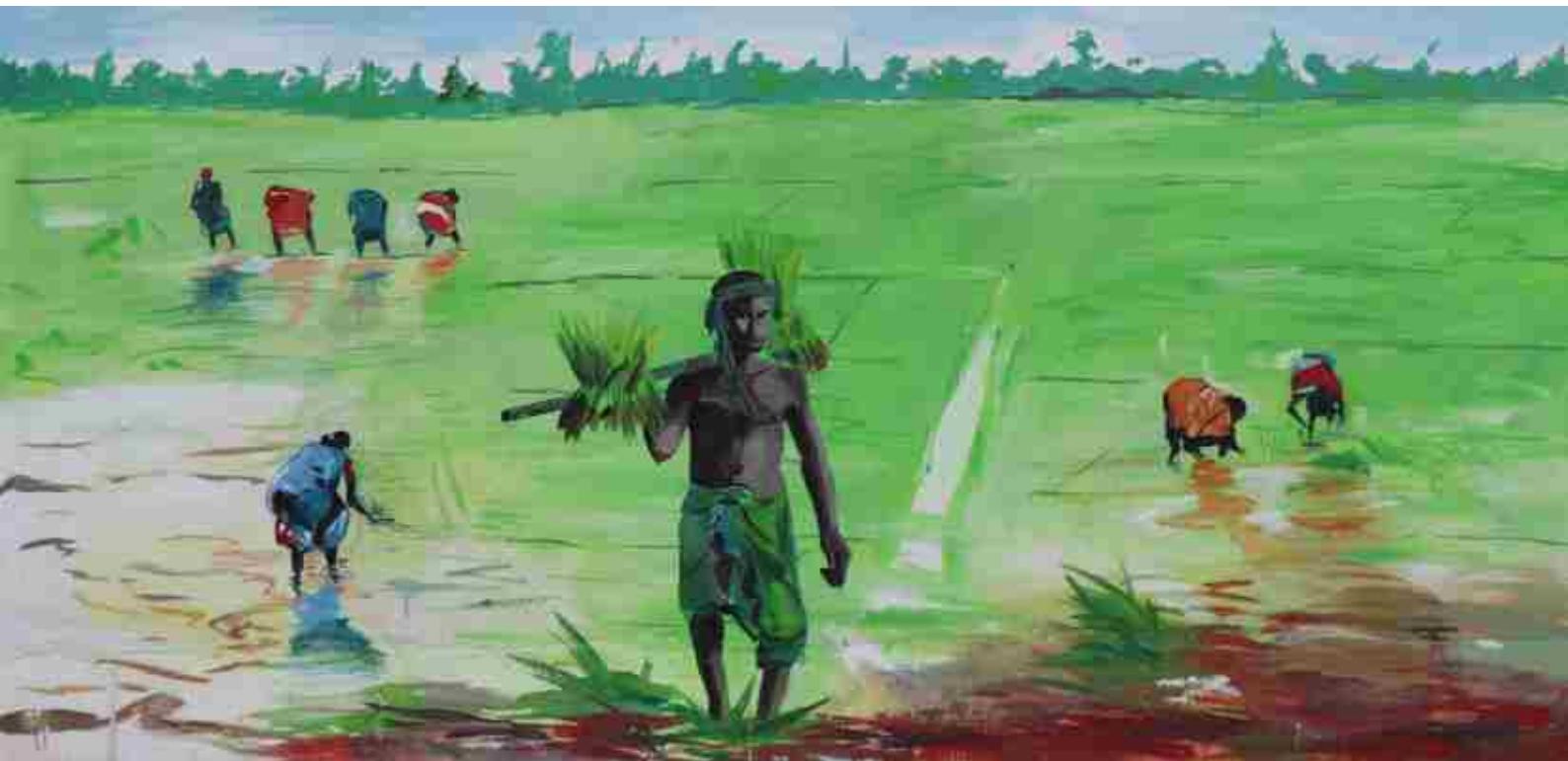
पारंपरिक नियंत्रण

इसमें आम खेती-प्रथाओं जैसे कि मिट्टी में डिकैफिनेटेड चाय अपशिष्ट या पानी की जलकुंभी खाद मिलाना (रॉय, 1976)

बैंगन जैसी गैर-परजीवी फसल सहित फसल अनुक्रम (रामकृष्ण, 1995), शकरकंद, लोबिया, तिल, अरंडी, सूरजमुखी, सोयाबीन, शलजम सहित फसल अनुक्रम (राव, 1985) गेंदा सहित मूल रूप में हरी खाद का प्रयोग (पोल्थनी और यामाजाकी, 1996) स्वस्थ और कीटाणुरहित नर्सरी लगाना, परजीवी खरपतवारों को हटाना, गर्मियों में जुताई और रोपाई करने से पहले मुख्य खेतों को कीचड़युक्त करना (पंकज, 2010) शामिल हैं।

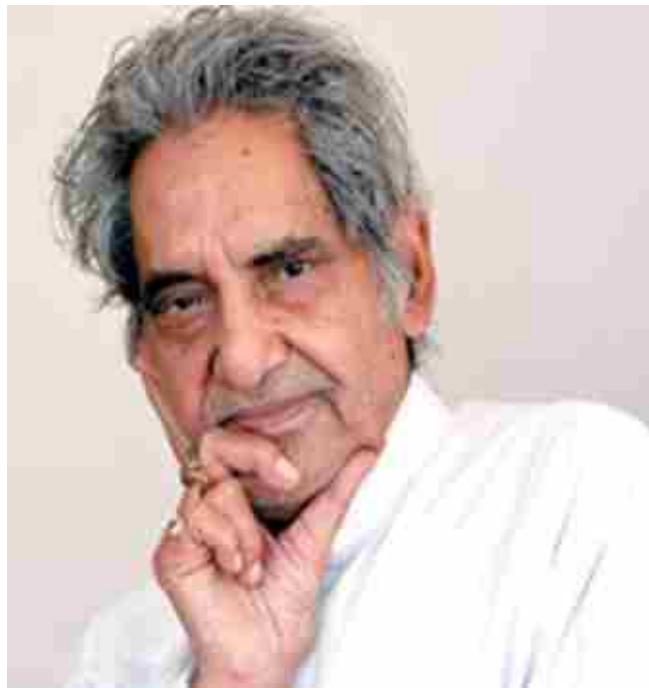
रासायनिक नियंत्रण

कार्बोफ्यूरान का प्रयोग नर्सरी में 0.3 ग्राम/वर्गमीटर और 1 किलोग्राम की दर से रोपाई करने के 45 दिनों के बाद करने से सूत्रकृमि संक्रमण को कम कर सकता है और चावल की पैदावार बढ़ा सकता है।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग

जिन्हें हम भूला न सकेंगे.....



गोपालदास 'नीरज'
(4 जनवरी 1925 से 19 जुलाई 2018)

“सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी।
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी ॥
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही
भले ही दीवाली यहाँ रोज आए।
जलाओ दीये पर रहे ध्यान इतना
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए ॥”



प्लास्टिक बैग्स को ना कहें डॉ लोटन कुमार बोस, प्रधान वैज्ञानिक भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

यह जानकर हैरानी होती है कि प्रत्येक वर्ष संसार में लगभग एक ट्रिलियन प्लास्टिक बैग का उपयोग किया जाता है। हर साल, कम से कम 8 मिलियन टन प्लास्टिक महासागरों में जमा होता है, जो कि प्रत्येक मिनट एक पूर्ण कचरा ट्रक के बराबर है। हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक का पचास प्रतिशत एकल-उपयोग होता है या डिस्पोजेबल होता है। हम हर मिनट एक मिलियन प्लास्टिक की बोतलें खरीदते हैं। हम जो भी कचरा पैदा करते हैं उसका 10 प्रतिशत हिस्सा प्लास्टिक होता है। 1960 के दशक में प्लास्टिक लोकप्रिय होने लगी। पॉलीथीन, जो आज दुनिया के सबसे प्रचुर मात्रा में प्रयोग की जाने वाली प्लास्टिक में से एक है, 1898 में बनाया गया था और फिर 1933 में इसमें सुधार किया गया। वर्ष 1953 में ही उच्च घनत्व वाले पॉलीथीन को प्लास्टिक का रूप दिया गया था जिसे रीसाइकिलिंग सिस्टम में नंबर दो के रूप में पहचाना गया था और जिसे आमतौर पर किराने की दुकान बैग बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग 20वीं शताब्दी में जीवन शैली का एक हिस्सा बन गया है। लोग दुकानों के पास खाली हाथ जाते हैं और प्लास्टिक की थैलियों के भार के साथ लौटते हैं। पर्यावरण के प्रति प्लास्टिक की थैलियों की समस्या बहुत बड़ी है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

प्लास्टिक की थैलियां ज्यादातर पॉलीथीन से निर्मित होती हैं जो पेट्रोलियम से बनी होती हैं। यदि आप किसी भी प्लास्टिक बैग पर पीई शब्द पाते हैं, तो यह जान लें कि यह पॉलिएथिलीन से बना है। पेट्रोलियम जैसा कि हम जानते हैं कि एक सीमित प्राकृतिक संसाधन है और इसके अंधाधुंध इस्तेमाल से यह पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा। इसके अलावा, पॉलीथीन के निर्माण के दौरान इससे कई जहरीले रसायनों का रिसाव होता है। एक बार जमीन पर फेंका गया प्लास्टिक के थैले को पूरी तरह से नष्ट होने में सदियाँ लग जाती हैं। चूंकि हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले अधिकांश प्लास्टिक बैग बायोडिग्रेडेबल नहीं होते हैं, अतः बस छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं और मिट्टी में पूरी तरह से विघटित नहीं होते हैं। कचरे के रूप में छोड़े गए प्लास्टिक के थैले वन्यजीवन को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। आवारा कुत्ते और गाय उन्हें बचे हुए खाने के साथ ही खा जाते हैं। समुद्री जीव गलती से इन प्लास्टिक के टुकड़ों को जेली मछली या छोटी

मछली समझ कर उन्हें खा जाते हैं। यहां तक कि समुद्री पक्षी और कछुए भी प्लास्टिक थैलियों के टुकड़ों को किसी तरह का शिकार समझकर उन्हें खा जाते हैं। इस तरह का सेवन प्राणियों में लगभग तुरंत या लंबे समय में घातक है।



प्लास्टिक की थैलियों का कचरा जल निकासी प्रणालियों को अवरुद्ध करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। जब शहरों में बाढ़ आती है, तो प्लास्टिक के थैले नालियों के पानी को बंद करके आपदाओं को बढ़ाते हैं। जैसा कि प्लास्टिक की थैलियों को विघटित होने में सदियाँ लगते हैं, वे धीरे-धीरे सिंथेटिक कणिकाओं में परिवर्तित हो जाती हैं। कैरी बैग से मिश्रित मिट्टी निश्चित रूप से प्रदूषित होगी। इसके अलावा, प्लास्टिक मिश्रित भूमि पर पौधे उगेंगे हैं और जानवर ऐसे पौधों को खाएंगे। कुछ दशकों के बाद, सिंथेटिक दानेदार प्लास्टिक भोजन श्रुंखला का एक हिस्सा बन जाएगा। इस प्रकार प्लास्टिक सभी जीवजंतुओं के लिए हानिकारक है। प्लास्टिक बैग को ना कहना आसान है मुश्किल नहीं। अपने साथ पटसन या कॉटन से बना बैग रखें। यदि आपको प्लास्टिक बैग की आवश्यकता नहीं है, तो प्लास्टिक बैग के लिए आग्रह न करें। यदि आपने कोई एक दो चीजें खरीदी हैं, तो उसे हाथ से ले जाएं। पुराने प्लास्टिक बैग को लापरवाही से न फेंकें। कपड़े या कैनवास बैग का उपयोग करें। इससे पुराने एवं अनचाहे कपड़े और कैनवास का उपयोग करने में मदद मिलेगी साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन होगा और गरीबी उन्मूलन में मदद मिलेगी। जब भी कोई प्लास्टिक की थैली पर निर्भर होना चाहता है, वह इस तथ्य से अवगत है कि यह पृथ्वी पर सदियों तक रहेगा। तो आइए हमारी धरती को स्वच्छ रखें।



तुम और मैं

“तुम तुंग-हिमालय-शृंग
और मैं चंचल-गति सुर-सरिता ।
तुम विमल हृदय उच्छवास
और मैं कांत-कामिनी-कविता ।
तुम प्रेम और मैं शांति,
तुम सुरा-पान-धन अंधकार,
मैं हूँ मतवाली भ्रांति ।
तुम दिनकर के खर किरण-जाल,
मैं सरसिज की मुस्कान,
तुम वर्षों के बीते वियोग,
मैं हूँ पिछली पहचान ।
तुम योग और मैं सिद्धि,
तुम हो रागानुग के निश्छल तम,
मैं शुचिता सरल समृद्धि ।
तुम मृदु मानस के भाव
और मैं मनोरंजिनी भाषा,
तुम नंदन-वन-घन विटप
और मैं सुख-शीतल-तल शाखा ।
तुम प्राण और मैं काया,
तुम शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म
मैं मनोमोहिनी माया ।
तुम प्रेममयी के कंठहार,
मैं वेणी काल-नागिनी,
तुम कर-पल्लव-झंकूत सितार,
मैं व्याकुल विरह-रागिनी ।
तुम पथ हो, मैं हूँ रेणु,
तुम हो राधा के मनमोहन,
मैं उन अधरों की वेणु ।
तुम पथिक दूर के श्रांत

और मैं बाट-जोहती आशा
तुम भवसागर दुस्तर
पार लाने की मैं अभिलाषा ।
तुम नभ हो, मैं नीलिमा,
तुम शरत-काल के बाल-इंदु
मैं हूँ निशीथ-मधुरिमा ।
तुम गंध-कुसुम-कोमल पराग,
मैं मृदुगति मलय-समीर,
तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष,
मैं प्रकृति, प्रेम-जंजीर ।
तुम शिव हो, मैं हूँ शक्ति,
तुम रघुकुल-गौरव रामचंद्र,
मैं सीता अचला भक्ति ।
तुम आशा के मधुमास,
और मैं पिक-कल-कूजन तान,
तुम मदन-पंच-शर-हस्त
और मैं हूँ मुग्धा अनजान !
तुम अंबर, मैं दिग्वसना,
तुम चित्रकार, घन-पटल-श्याम,
तैं तड़ित् तूलिका रचना ।
तुम रण तांडव-उन्नाद नृत्य
मैं मुखर मधुर नुपुर-ध्वनि,
तुम नाद-वेद ओंकार-सार,
मैं कवि-शृंगार शिरोमणि ।
तुम यश हो, मैं हूँ प्राप्ति,
तुम कुंद-इंदु-अरविंद-शुभ्र
तो मैं हूँ निर्मल व्याप्ति”

- सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’



जल की बूँद-जीवन की बूँद जल संरक्षण-जीवन संरक्षण

इंजीनियर मनीष देबनाथ

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

सभी जीवधारियों के लिए पानी सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है। कुछ जीवों में, उनके शरीर के वजन का 90% पानी से निर्मित होता है। एक वयस्क मानव शरीर में 60% तक जल है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है। वैश्विक आबादी में तीव्र वृद्धि के कारण पेय जल की मांग दिनानुदिन बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र अर्थशास्त्र और सामाजिक मामले विभाग की रिपोर्ट (UNDESA, 2015) के अनुसार वर्तमान विश्व की जनसंख्या 7.3 बिलियन है जो 2030 तक 8.5 बिलियन हो जाएगी, इसके 2050 में 9.7 बिलियन और 2100 में 11.2 बिलियन तक पहुंचने की उम्मीद है।

बढ़ती हुई जनसंख्या का मतलब है प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता कम हो रही है। यह पाया गया है कि स्थानीय आबादी में तेजी से विस्तार हो रहा है तथा पानी के उपयोग में वृद्धि के कारण 20वीं शताब्दी में दुनिया भर में पानी की कमी की स्थिति में लगभग 16 गुना बृद्धि हुई है (कुम्मु, 2016)।

भारत में, 2001 और 2011 में प्रति व्यक्ति औसत जल उपलब्धता क्रमशः 1,820 घन मीटर और 1,545 घनमीटर थी और यह अनुमान लगाया गया है कि यह घट कर 2034 और 2050 तक क्रमशः 1,341 और 1140 घनमीटर तक हो सकती है। 1,700 क्यूबिक मीटर से कम प्रति व्यक्ति पानी की वार्षिक उपलब्धता को पानी की कमी वाली स्थिति मानी जाती है, जबकि 1,000 क्यूबिक मीटर से नीचे वार्षिक प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता को पानी की घोर कमी वाली स्थिति मानी जाती है।

पानी का उपयोग न केवल पीने के उद्देश्य के लिए किया जाता है, बल्कि इसका उपयोग कृषि, औद्योगिक और अन्य क्षेत्रों के लिए भी किया जा रहा है। इन क्षेत्रों में पानी की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। उत्तरी और पूर्वी भारत, मध्य पूर्व, कैलिफोर्निया और ऑस्ट्रेलिया के कई क्षेत्रों में जल संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से मीठे पानी की उपलब्धता में गंभीर गिरावट आई है। भारत के 60-70% से अधिक क्षेत्र सूखे की चपेट में हैं। भारत में कई क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता राष्ट्रीय औसत से कम है और इस स्थिति को पानी की गंभीर कमी या पानी की कमी वाली स्थिति मानी जाती है।

पानी की कमी या पानी की गुणवत्ता में कमी स्वास्थ्य संबंधी

समस्याएं बढ़ती हैं। चिकित्सालय, स्थानीय रेस्तरां, सार्वजनिक स्थान और कई अन्य स्थानों पर सफाई के लिए बहुत कम पानी का उपयोग करने के लिए मजबूर किया जाता है। यह कर्मचारियों और उन लोगों के स्वास्थ्य के साथ से एक प्रकार समझौता है जो सुविधाओं का उपयोग करते हैं। नासा की रिपोर्ट के अनुसार, पानी की कमी सदी की प्रमुख पर्यावरणीय चुनौती बनने जा रही है। पानी की कमी से पानी से संबंधित बीमारियों और पर्यावरण के दृष्टिं होने की घटनाओं में वृद्धि होती है (निएंबा, 2010)।



बहुत सारे पानी का उपयोग खेती करने और जानवरों की देखभाल करने के लिए भी किया जाता है। विश्व स्तर पर हमारे दैनिक जल उपयोग का लगभग 70% कृषि और सिंचाई के लिए होता है और केवल 10% मात्रा का उपयोग घरेलू जरूरतों के लिए किया जाता है। कम पानी का मतलब है खेती और दूसरी फसलें जिन्हें उगाने के लिए पानी की जरूरत होती है, उनकी पैदावार में कमी होना। इसका अर्थ है कि खेती के लिए उपयोग किए जाने वाले पशुओं का और अन्य पशुओं का बीमार होना। पानी की कमी का परिणाम निरंतर भूख और प्यास और जीवन की निम्न गुणवत्ता है।

व्यक्ति द्वारा पानी की बरबादी से दीर्घ अवधि में मानव समाज और बड़े पैमाने पर पृथ्वी पर तबाही का कारण हो सकती है। इसलिए, हमें से हर व्यक्ति को पानी की बरबादी से सावधान रहना चाहिए। हमें अपनी आवश्यकता से अधिक पानी के उपयोग को रोकना चाहिए, जब हमें इसकी आवश्यकता नहीं होती है तो पानी के नल को बंद करके, बाथरूम का शॉवर बंद करके जब हम इसका उपयोग नहीं करते हैं, और फसलों की सिंचाई के लिए ड्रिप और स्प्रिंकल सिंचाई जैसी सबसे कुशल सिंचाई तकनीकों का उपयोग करके पानी की बरबादी को रोक सकते हैं।

अपने जीवन में पानी को सबसे कीमती वस्तु के रूप में मानकर और इसके अपव्यय को कम करके हम लाखों लोगों की जान बचा सकते हैं और इस प्रकार धरती को पानी की कमी के हानिकारक प्रभावों से बचाया जा सकता है।



“जैसी दृष्टि”

- आचार्य बिनोबा

रामदास रामायण लिखते जाते और शिष्यों को सुनाते जाते थे। हनुमान भी उसे गुप्त रूप से सुनने के लिए आकर बैठते थे। समर्थ रामदास ने लिखा, “हनुमान अशोक बन में गये, वहाँ उन्होंने सफेद फूल देखे।”

यह सुनते ही हनुमान झट से प्रकट हो गये और बोले, “मैंने सफेद फूल नहीं देखे थे। तुमने गलत लिखा है, उसे सुधार दो।”

समर्थ ने कहा, “मैंने ठीक ही लिखा है। तुमने सफेद फूल ही देखे थे।”

हनुमान ने कहा, “कैसी बात करते हो! मैं स्वयं वहां गया और मैं ही झूठा।”

अंत में झगड़ा रामचंद्रजी के पास पहुंचा। उन्होंने कहा, “फूल तो सफेद ही थे, परंतु हनुमान की आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं, इसलिए वे उन्हें लाल दिखाई दिये।”

इस मधुर कथा का आशय यही है कि संसार की ओर देखने की जैसी हमारी दृष्टि होगी, संसार हमें वैसा ही दिखाई देगा।



सोशल मीडिया-अभिशाप या वरदान

डॉ. नीतीश ओझा, सहायक प्रोफेसर
डीआईटी विश्वविद्यालय, देहरादून-248001

भारत की जनसंख्या में युवावर्ग की सर्वाधिक संख्या भारत में सोशल मीडिया को अपना पाँव जमाने में बखूबी मदद कर रही है, जनसंख्या और फेसबुक के यूजर्स के आंकड़ों के आधार पर यह सामान्य रूप से कहा जा सकता है की 2017 तक भारत सर्वाधिक फेसबुक यूजर्स वाला देश हो जाएगा। वैसे एक तथ्य यह भी है की दुनिया भर में फेसबुक उपयोगकर्ताओं की संख्या में कमी आ रही है, (चीन में तो फेसबुक पर प्रतिबंध है) लेकिन विकासशील देशों में इसके उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है और इसके साथ ही बढ़ रहा है सोशल मीडिया का मानसिक और सामाजिक दुष्प्रभाव। आजकल के वैश्विक परिदृश्य में सोशल मीडिया के प्रयोग और अत्यधिक प्रयोग से एक नए प्रकार के खतरे का जन्म हुआ है।

हर चीज की तरह सोशल मीडिया के भी दो रूप हैं सकारात्मक और नकारात्मक। हाल के वर्षों में देखें तो सोशल मीडिया का प्रयोग एक राजनैतिक औजार की तरह किया गया है क्योंकि यह लोगों को जोड़ता है। सन 2011 के जनवरी महीने में फेसबुक के द्वारा ही मिस्र देश में वहाँ की तत्कालीन सरकार के खिलाफ जनांदोलन खड़ा किया गया जिसके फलस्वरूप वहाँ तत्कालीन राष्ट्रपति होसनी मुबारक को इस्तीफा देना पड़ा, इसी की भाँति अरब और अन्य खाड़ी देशों में भी तमाम आंदोलन चले जैसे अरब स्प्रिंग। भारत में भी इस प्रकार के सीमित उदाहरण देखने को मिल जाते हैं जैसे की दिल्ली में जनलोकपाल को लेकर किया गया 'अन्ना' आंदोलन।

सोशल मीडिया के अब बदलते हुए रूप को ध्यान से देखे तो कई बार सोशल मीडिया/ व्हाट्सएप के वायरल हुए संदेशों के आधार पर ही मेन स्ट्रीम मीडिया भी अपनी मुख्य खबर बनाने लगता है यही

कारण है कि अब तमाम राजनैतिक दल, धार्मिक संगठन, और उनसे जुड़े हुए नेताओं ने सोशल मीडिया पर अलग से पेज रखने शुरू कर दिये हैं ताकि उनकी जनसामन्य तक पहुँच आसान हो सके और वो ज्यादे से ज्यादे लोगों तक अपनी बात पहुँचा सके, आखिर इसकी पहुँच भारत के शहरों तक ही सीमित नहीं वरन् दूर दराज के गाँवों तक अपनी बात पहुँचा सके, व्यक्तिवाचक रूप में है और इस प्लेटफार्म की इस सकारात्म पहुँच का दुरुपयोग कुछ लोग घृणा, द्वेष, सामूहिक वैमनस्य को फैलाने में लगे हैं। अंततः स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है की सोशल मीडिया के जरिये अपराधिक घटनावों को भी अंजाम दिया जाने लगा। एक गैर सरकारी संगठन के सर्वे पर आधारित रिपोर्ट में तो यहाँ तक देखने में आया है कि अपराधिक प्रवृत्ति के लोग एक दूसरे के खिलाफ सामूहिक रूप से निदां पेज बनाकर दुष्प्रचार और अन्य फोटो जैसी सामग्रियाँ डालकर आपसी दुश्मनी निकाल रहे हैं। सन 2013 में सम्पूर्ण भारत वर्ष में आईटी एक्ट और इंडियन पेनल कोड के विभिन्न धाराओं के तहत 5523 मामले दर्ज किए गए जिसमें 2 हजार से ज्यादा मामले सोशल मीडिया के प्रमुख पेज फेसबुक पर आपराधिक और आपत्तिजनक फोटो को डालने से जुड़ा हुआ है, जिसमें ज्यादातर किशोरवर्ग आरोपित है जो स्कूली शिक्षा प्राप्त कर रहा है। एसोचैम के द्वारा किए गए सर्वे के आधार पर एक रिपोर्ट में यह भी कहा गया है की सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहे सभी छात्रों में से 73 प्रतिशत बच्चे 13 साल से कम उम्र के हैं, और वो फेसबुक द्वारा स्थापित नियम (13 साल से कम उम्र के बच्चे का फेसबुक एकाउंट नहीं खुल सकता) का पालन नहीं कर रहे। सर्वे में ये भी कहा गया है की इस समूह में आने वाले ज्यादातर बच्चों के माता-पिता नौकरीपेशा हैं जो अपने बच्चों को स्वयं से जुड़ने के लिए फोन उपलब्ध कराते हैं परंतु फोन के समुचित



सकारात्मक और संतुलित प्रयोग पर उनका ध्यान नहीं जा पाता।

सोशल मीडिया के मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभावों की बात करे तो चिकित्सकों का यहाँ तक मानना है की सोशल मीडिया में दिलचस्पी लेने वाले यूजर्स इस कदर इसके गिरफ्त में आ जाते हैं की निजी और पारिवारिक प्रतिबद्धता छोड़कर वों अपना ज्यादातर समय मोबाइल फोन को ही देने लगते हैं। बहरहाल इसमें दो राय नहीं की सोशल मीडिया जनसामान्य को अभिव्यक्ति का एक जोरदार और बहुआयामी प्लेटफार्म उपलब्ध कराता है लेकिन सोशल मीडिया पर अंजाने में वों किसी खास विषय पर अपनी राय रखते समय एक समान विचारधारा वाले मंच से जुड़ जाता है जिसमें दो ही स्थितया होती हैं या तो वह पक्ष में होता है या विपक्ष में होता है, अमूमन हर व्यक्ति अपनी विचारधारा से इतर विचारधारा के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित नजर आता है। अगर आपके विचार दूसरे की विचारधारा से मेल नहीं खाते तो तत्काल आपको उसका विरोधी या किसी विचारधारा विशेष का भक्त या दलाल साबित कर दिया जाएगा और आपकी पोस्ट पर बिना कुछ सोचे समझे निंदनीय अपशब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

और फिर यहाँ से एक सामान्य यूजर किसी मंच का सामान्य सदस्य न होकर उनलोगों के लिए एक औजार का कार्य करता है जो एक खास मकसद के तहत सोशल मीडिया पर मौजूद हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सोशल मीडिया को “जनमत” तैयार करने का उपक्रम मानते हैं और इसका दुरुपयोग भी करते हैं। सोशल मीडिया का तमाम स्वरूप इस तथाकथित उद्देश्यपूर्ति में किसी भी प्रकार से रोकने या बाध्यकारी तत्व का कार्य नहीं करता। सोशल मीडिया इसी बिन्दु पर सामान्य प्रिंट मीडिया से अलग हो जाता है, जहाँ प्रिंट मीडिया में किसी भी विषय पर राय रखने के पहले लेखक, प्रकाशक, विज्ञापनकर्ता, विषयविद्वान, और वितरक, सरकार के तमाम प्रकल्प इत्यादि जेसी संरचना मौजूद है वही सोशल मीडिया में एक व्यक्ति लेखक, संपादक, प्रकाशक, आलोचक

स्वयं है जहाँ किसी भी विषय वस्तु पर कोई राय रखने के लिए किसी की मनाही या सहमति की आवश्यकता नहीं होती वों अपनी अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र है। सोशल मीडिया पर इनदिनों इस प्रकार के यूजर्स की संख्या बढ़ी है जो अपने कृतिस्त विचारों को आगे प्रचारित प्रसारित करने हेतु सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर रहे। हाल ही में सोशल मीडिया में तमाम संवेदनशील मुद्दों पर बहुपक्षीय और सामूहिक नकारात्मक राय देखने को मिली जो किसी भी देश के आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती है, जिसमें संभव हो कि अन्य देशों के यूजर्स का छिपा हुआ संगठित योगदान हो। सन 2014 में सोशल मीडिया के अफवाहों के आधार पर दक्षिणी भारत में रहने वाले पूर्वोत्तर के लोगों में भाव उत्पन्न किया गया और उनमें से हजारों लोग परेशानी उठाने को मजबूर हुए। वही पिछले साल उत्तर प्रदेश में मुजफ्फरनगर के दंगों में कुछ लोगों द्वारा नकली वीडियो उपलोड करके एक खास धर्म के लोगों को आतंकित करने का प्रयास किया गया।

लोगों के अभिव्यक्ति के अधिकार का पूरा समर्थन किया जाना चाहिए मगर सुरक्षा की कीमत पर नहीं। साइबर दुनिया के गलत इस्तेमाल पर अंकुश लगाना जरूरी है और साथ में इस बात का भी ध्यान रखना होगा की यूजर क्या साझा कर रहा है या फारवर्ड कर रहा है। सोशल मीडिया मानसिक रूप से किस तरह युवाओं को प्रभावित कर रहा है इसे यूं भी देख जा सकता है की युवा अब सोशल मीडिया को लेकर अतिसक्रिय हैं और वो बहुत तेजी से एक दूसरे को वीडियोज और विलप और फोटो शेयर और फारवर्ड कर रहे हैं। बीते दिनों हरियाणा में एक सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर सुसाइड नोट डालने के बाद एक 20 वर्षीय युवक ने अपने घर में कथित रूप से आत्महत्या कर ली। आत्महत्या के चंद घंटे पहले उसने सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर अपना सुसाइड नोट अपलोड किया था। इससे यह पता चलता है कि सोशल साइटों का कुछ लोग किस तरह की मानसिकता से उपयोग करते हैं और दुर्भाग्य की बात है कि लोगों ने उस यूजर के पेज

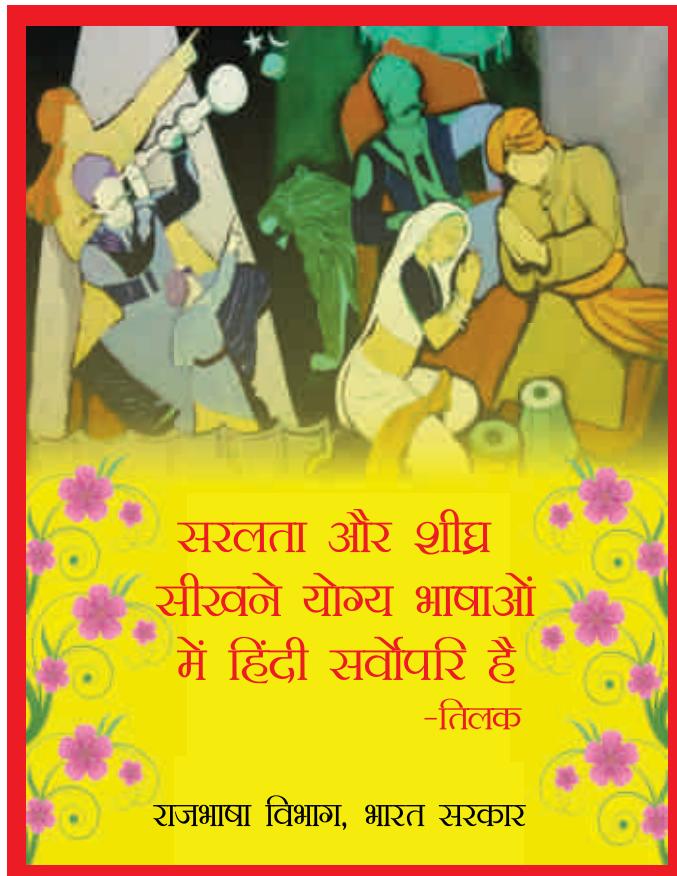
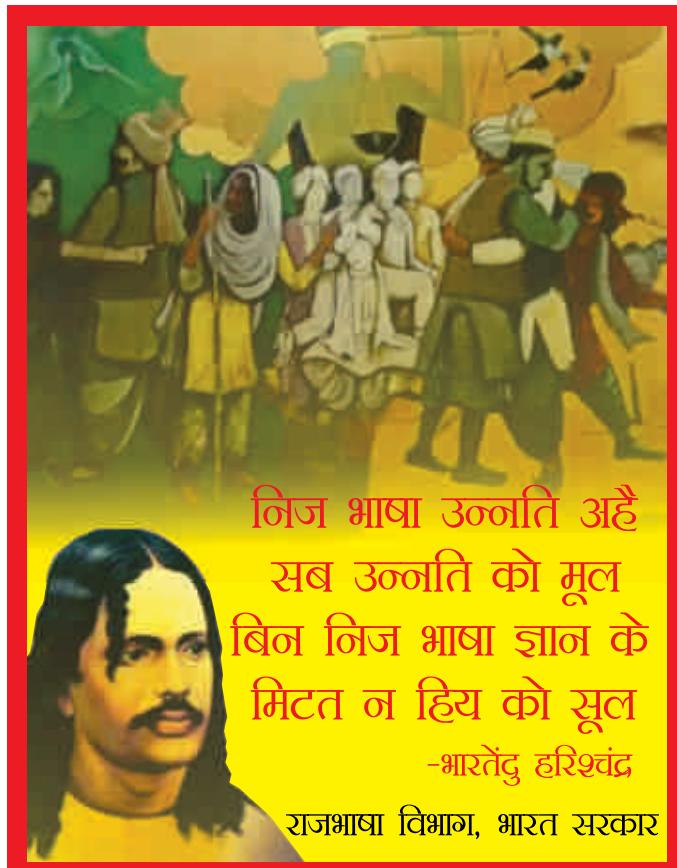


पर चटखारे वाले कमेन्ट भी किए और इसे शेयर भी किया जो हमारी खत्म होती संबोदना को भी बताता है।

इस प्रकार की प्रवृत्ति धार्मिक उन्माद बढ़ाने वाले वीडियो और अश्लील वीडियो को लेकर भी पाया गया है जिसे शेयर करने में युवा अतिसक्रिय हैं बगैर उसकी सत्यता और दुष्प्रभाव जाने। शोध बताते हैं कि छेड़छाड़ और बलात्कार की घटनाओं के पीछे पोर्नोग्राफी साहित्य तथा मोबाईल का बड़ा योगदान हैं जो सामान्य रूप से अत्यंत कम मूल्य पर उपलब्ध हैं और लोग बेधड़क इस प्रकार की सामग्री को शेयर भी कर रहे, और सकूली छात्रों में इस प्रकार की गहन प्रवित्ति पाई गई है।

देखा जाये तो सोशल मीडिया की वजह से लोग एकाकीपन के शिकार हो रहे हैं। अपने परिवार और अपनों से अलग होते जा रहे हैं जो उचित नहीं हैं। इनका समाज और परिवार के प्रति प्रेम कम होता जा रहा है। सोशल नेटवर्किंग की वजह से युवाओं में मानसिक अवसाद और आत्म हत्या की भी निरंतर बढ़ती जा रही हैं।

सोशल मीडिया आगे आने वाले समय में क्या रूप धारण करेगा यह तो आने वाला समय ही बतायेगा, लेकिन इसके वर्तमान स्वरूप में इसके द्वारा व्यवस्था परिवर्तन की दिशा में किसी रचनात्मक परिणाम की उम्मीद करना बेमानी होगा।





उत्कृष्ट जीवन

श्री रंजन साहु, प्रवर श्रेणी लिपिक
भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

सिद्धांत से अभ्यास

प्रणालीगत ज्ञान ही विज्ञान है और विज्ञान दो श्रेणियों में बांटा गया है - शुद्ध एवं प्रायोगिक। शुद्ध विज्ञान सिद्धांतिक प्रस्ताव व उपाय, विचार, शोध और एक तार्किक निष्कर्ष उपलब्ध कराता है। लेकिन शुद्ध विज्ञान जीवन की बनावट और गुणवत्ता में सीधे तौर पर सुधार नहीं कर सकता है। यह विज्ञान प्रायोगिक है, जिसे दूसरे शब्दों में 'तकनीक' कहा जाता है जिसे शुद्ध विज्ञान द्वारा उन सिद्धांतों और निष्कर्षों को मानव जाति के व्यावहारिक उपयोग हेतु तब्दील करता है।

सैद्धांतिक रूप से हम दसवीं सदी तक बिजली के बारे में जानते थे। लेकिन, उन्नीसवीं शताब्दी तक आकर विद्युत सम्भवा में बदलने के लिए हमें नौ सौ साल लग गए। इन नौ सौ वर्षों में केवल प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही मानव जाति के लिए यह उपयोगी साबित हुआ। हमें यह जानना आवश्यक था कि बिजली कैसे पैदा होती है, उसे स्थानांतरित कैसे किया जाता है और पहुंचाया कैसे जाता है, इसे घरेलू प्रयोजनों के लिए सुरक्षित तरीके से कैसे इस्तेमाल किया जाए इत्यादि लेकिन बल्कि के आविष्कार के बाद ही हम अपने जीवन में प्रकाश लाने के लिए बिजली का उपयोग कर सके हैं। इस प्रकार मानव जाति के लिए बिजली को उपयोगी बनाने के लिए लगभग 900 वर्ष समय लगा। आज, आधुनिक सम्भवा बिजली पर इतना निर्भर करती है कि इसके बिना हमारी कई गतिविधियों में एक ठहराव में आ जाएगा।

शुद्ध विज्ञान दर्शन का बोध -सोच का तर्कसंगत अनुक्रम है जो इस परिवर्तनशील दुनिया के पीछे एक स्थायी वास्तविकता को दर्शाता है। लेकिन इन दार्शनिक निष्कर्ष को यदि अच्छी तरह से अध्ययन किया जाए तो, हमारे जीवन में एक छोटी सी खुशी नहीं ला सकती है।

हम यह आश्वस्त हो सकते हैं कि हर एक में एक अस्तित्व का स्पार्क है जिसके बिना शरीर एक मृत शव के समान है। जीवन के उस जीवंत स्पर्श के बिना, मैं न तो दुनिया के बाहर से कुछ भी हासिल कर सकता हूं और न ही अपने मन से कुछ भी कल्पना कर सकता हूं। जीवन की उस चिंगारी की

अनुपस्थिति में, सभी गतिविधियां बंद हो जाती हैं। यह सब तर्कसंगत रूप से हमारे लिए बहुत स्पष्ट हो सकता है, लेकिन यह हमारे जीवन में खुशी नहीं ला सकती है।

दर्शन के विभिन्न प्रणालियां हमें सोचने का विवरण देती हैं लेकिन वे स्वयं अपने आप में हमें खुशी नहीं दे सकते हैं। उन सिद्धांतों को हमारे रोजगार के जीवन में अभ्यास के रूप में डाल देना चाहिए और वांछित परिणाम प्राप्त करने से पहले, हमारे अपने व्यक्तिगत अनुभव का एक हिस्सा बनाना होगा। इसलिए, प्रौद्योगिकी आवश्यक है।

तकनीक

व्यक्तिप्रक विज्ञान की तकनीक को भारत में योग कहा जाता है, जबकि पूरे विश्व में इसे धर्म कहा जाता है। योग का मतलब है कि हमारी मानसिकता को एक उच्च वास्तविकता को एक उच्च वास्तविकता में ले जाना, मन को मनन करते हुए, कामुक विचारों से ध्यान हटाने हुए, एक उच्च दिव्य बिंदु पर ध्यान देना। चाहे हम इसे धर्म या योग कहते हैं, इसमें तकनीक शामिल होती है, जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने दिमाग को छोड़ सकता है, कम से कम अस्थायी रूप से, भावनाओं की



दुनिया के साथ अपनी भागीदारी और उस परम शक्ति पर एक स्थिर चिंतन के साथ इसे शांत कर सकता है।

इसी उद्देश्य के लिए अध्यात्म की दुनिया के महान व्यक्तियों ने धीरे-धीरे चर्च, मस्जिद और मंदिरों की स्थापना की, सैकड़ों तकनीकों निर्धारित की, उपवास से तीर्थयात्रा तक, अध्ययन, और चर्चा करने के लिए विभिन्न तरीकों, एक गुरु तक पहुंच, अपने आप को एक मठ की सदस्यता लेना और एक त्याग को स्वीकार करना, आदि ऐसे सभी विषय जो धर्म के अंतर्गत आता है। ये सभी एक साधारण व्यक्ति के मन को अनुशासित करने के विभिन्न तरीके हैं।

आज, व्यक्ति के रूप में, हम खुद को एक सीमित अहंकार में रखकर देखते हैं, जिनसे हमारी शारीरिक इच्छाएं, हमारी भावनात्मक आवश्यकताएं और हमारी बौद्धिक अपेक्षाएं अनुशासित होती हैं, आदेश दिया जाता है, निर्धारित, या



धान

निर्देशित किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक आवश्यकताएँ सीमित होती हैं और हम अपनी पूरी जिंदगी में इन जरूरतों को जहां तक हो सके, बेहतर ढंग से पूरा करने की कोशिश कर रहे हालेते हैं। यहां पर धर्म का पदार्पण होता है और हमें बताता है कि एक उच्च उद्देश्य के लिए हमारा जन्म हुआ है और मनुष्य के तर्कसंगत बुद्धि के कारण उसके ध्यान को, भोग के सामान्य

क्षेत्रों से चिंतन के उच्च स्थान पर ले सकते हैं। हालांकि मन को प्रशिक्षित करने के लिए और बाहरी दुनिया से इसका ध्यान आकर्षित करने और इसे उस परामात्मा की ओर पुनर्निर्देशित करने के लिए, कुछ तकनीकों को आवश्यक है। यहाँ धर्म के विभिन्न पहलुओं का आगमन होता है।

आंतरिक भक्ति मन के विचारों को अनुशासित करने के लिए नैतिक नियमों और जीवन के मूल्यों को तैयार किया जाता है। जब मन को शुद्ध किया जाता है, तो उसे एक वेदी पर निर्धारित करने की कला सीखनी पड़ती है- चाहे वह चर्च, मस्जिद या मंदिर में हो। जब आप भक्ति के एक दृष्टिकोण में रिथर रहते हैं, तो मन का वातावरण एक परिवर्तन से गुजरता है मन की चर्चालता दूर हो जाती है, और मन के आंदोलन, तूफान शांत हो जाते हैं। मन निरंतर, उत्साहपूर्वक, भक्ति की वेदी पर खुशी से बैठ जाता है। इसे ही भक्ति का मार्ग कहा जाता है। इसी भक्ति को विकसित करने के लिए हमारे पास भगवान के विभिन्न घर हैं और उनके विभिन्न छवियां और मूर्तियां हैं। ये खूबसूरती से संगठित और प्रदर्शित किए जाते हैं; संगीत, घंटियां, अगरबत्ती साधारणत व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करती है जो बाहरी दुनिया से आता है, जहां उसका मन लगातार बाहर निकलना चाहता है। घटनाओं की दुनिया से दूर मस्तिष्क का ध्यान खींचते हुए, सुंदर संगीत, भजन और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में इस्तेमाल किए जाने वाले यंत्रों द्वारा, एक सुंदर तरीके से पेश करके, मन को अस्थायी रूप से शांत करने का प्रयास किया जाता है।

इस तरह एक शांत मन के साथ, हम भक्ति की वेदी पर हमारा ध्यान केंद्रित करते हैं। जब मन शांत हो जाता है, तो इसकी क्षमता बढ़ जाती है। आम तौर पर जब हमारा मन वहिमुखी, उत्तेजित हो जाता है, और बाहर की दुनिया के तनाव से चिंतित रहता है, तो हमारी दक्षता निम्न स्तर पर पहुंच जाता है। जब हमारा मन शांत और स्थिर होता है, तो बाहर की दुनिया में हमारी दक्षता बढ़ जाती है। आज, मन का अपव्यय विश्व की बीमारी बन गई है। कैंसर और एड्स शारीरिक बीमारियां हैं, लेकिन हमारी मानसिक बीमारी बहुत गंभीर है। हम मानसिक रूप से कमज़ोर हैं और हमारी समस्याओं का चाहे वे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक या व्यक्तिगत हो,

सामना करने के लिए कम शक्ति या कोई शक्ति नहीं हैं। इसलिए लोग दवाओं और शराब की ओर रुख करते हैं, अपने को अपर्याप्तता और अक्षमता में डुबोते हैं। समस्या का सामना करने के लिए हमारी मानसिक अक्षमता के कारण जीवन में हर छोटी समस्या एक बड़ी संकट बन जाती है। यह सब मन के अपव्यय के कारण है।

चिंताओं को दूर करना

मानसिक ऊर्जा के संरक्षण के तरीकों में से एक यह है कि मन को भूतपूर्व, वर्तमान और भविष्य के तीन अवधियों के समय में अपनी ऊर्जा को नष्ट न करना है। हममें से कुछ अतीत के सभी यादों से पीड़ित होकर वर्तमान में परेशान रहते हैं। दस साल पहले एक विफलता मुण्डे यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि मैं अब भी असफल रहूँगा। अतीत को स्मरण करते हुए, मैं वर्तमान की सुंदर स्थिति को खराब करूँगा जहां मैं जीत हासिल कर सकता था। हममें से कुछ एक की आदत है एक भयानक, दुखद भविष्य की कल्पना करना। किसी ठोस आधार के बिना, हम एक निराशजनक भविष्य की कल्पना करते हैं। इस तरह हमारे अपने मन के कैनवस में चित्रित चित्र हमें डराता है और हमारी दक्षता को कम करता है। मानसिक ऊर्जा का अपव्यय का तीसरा कारण वर्तमान की उत्तेजना है। हम एक दिन में सौ चीजें करने की योजना बनाते हैं और फिर चिंता करते हैं कि ये सभी कैसे करें। हमें लगता है कि हम उन्हें कभी भी पूरा नहीं कर पाएंगे। इसका समाधान उन्हें एक-एक करके पूरी तरह से मन लगाकर करना होता है। एक विचलित मन के साथ किसी स्थिति को ताकत के साथ सामना नहीं किया जा सकता है। प्रदर्शन तीसरी दर्ज का बनता है और अपूर्ण प्रदर्शन से कभी भी महान उपलब्धियां नहीं बनती हैं।

जब मन केंद्रित होता है तब चित्रकला, आर्किटेक्चर या मूर्तिकला में मास्टरपीस बनते हैं। आइंस्टीन अपनी अविष्कारों में इसलिए सफल थे क्योंकि वे अपने विषय से पूरी तरह मोहित थे और उनका मन कभी इससे भटका नहीं था। हमारे विचार आम तौर पर विखरे हुए होते हैं- कार्यालय में हम घर के बारे में और घर में कार्यालय के बारे में चिंता करते हैं। नतीजतन, हम दोनों कुछ भी हासिल नहीं कर सकते हैं। लेकिन भक्ति के साथ, हम एक नई आदत पालते हैं जहां मन प्राकृतिक हो जाता है। एक बार जब आपके मन में समर्पण की भावना पैदा हो जाती है, तो प्रभु के प्रति समर्पण की एक दृष्टिकोण बाहर दुनिया में अपना काम पूरा कर सकते हैं चाहे आपकी कार या मोटरसाइकिल की मरम्मत हो, चाहे आपके कमरे की सफाई हो या चाहे घर का निर्माण करें या समुदाय के लिए भविष्य का निर्माण हो- अपना मन वहां लगाएं। वर्तमान में मन बहुत दूर है।



धान

बौद्ध धर्म के एक महान गुरु से मिलने के लिए एक ऑस्ट्रेलियाई जापान आया और लगभग तीन/चार साल के लिए उनके साथ बिताया और गुरुजी की जीवनशैली का अध्ययन किया, उससे बहुत बारीकी से और समझदारी से देखा। अंत में, एक दिन ऑस्ट्रेलियाई ने कहा, 'गुरुजी, मैं आपके साथ कुछ चीजों पर चर्चा करना चाहता हूँ' गुरु ने सहमति व्यक्त की। "गुरुजी, आप और मेरे बीच क्या फर्क है?" उसने पूछा। "आप जो भी कर रहे हैं वह मैं भी करता हूँ। आप सुबह जल्दी उठते हैं, साफ होते हैं, फिर दलिया खाते हैं और पैदल चलते हैं। मैं इन सभी चीजों को भी कर रहा हूँ। लेकिन आप एक गुरु हैं और मैं कोई नहीं हूँ। ऐसा क्यों? गुरु ने कहा, "बहुत अंतर है जब मैं स्नान कर रहा हूँ, मैं स्नान करता हूँ। जब मैं खा रहा हूँ, तो मैं खाता हूँ। जब मैं चल रहा हूँ, तो मैं चलता हूँ। आप खाने के समय ऐसा नहीं करते हैं, आप चिंतित हैं कार्यालय के बारे में, जब आप कार्यालय में होते हैं, तो आप घर के बारे में चिंतित हैं। अपना मन वहीं रखें जहां आपके हाथ हैं, अगर यह किया जाता है, तो आप सबसे महान योगी होंगे।" तुम्हारा हर कार्य उत्कृष्ट होना चाहिए। उत्कृष्ट प्रदर्शन से उत्कृष्ट परिणाम मिलता है यह ब्रह्मांड का नियम है। हम बाहर की दुनिया में असफल होते हैं क्योंकि हमारे पास एकीकृत मन नहीं है। भक्ति हमारे भीतर के व्यक्तित्व में बहुत बदलाव लाती है, मन को एकीकृत करती है और इससे अधिक ध्यान केंद्रित होता है। इस प्रक्रिया से दुनिया के बाहर

सफलता मिलती है। एक एकीकृत मन से ही उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं परिणाम होते हैं। यही कारण है कि जब व्यापार कम हो जाता है, जब स्थिति खराब होती हैं, आप आम तौर पर चर्चा या मंदिर में जाते हैं, एक पुजारी या एक स्वामी के शरण में जाते हैं। वे सभी आपको सलाह देते हैं कि आप नियमित रूप से प्रार्थना करें, कुछ मंत्र का पालन करें और चिंता न करें। वे आपको आश्वस्त करते हैं कि चीजें ठीक हो जोएंगी। तब आपको शान्ति महसूस होती है, यह महसूस करते हुए कि आपका भाग्य बदल जाएगा क्योंकि आपको उनके आर्शीवाद मिलेंगे। आपका मन दिशा बदलता है और अधिक सकारात्मक हो जाता है, अतीत की चिंताएं और भविष्य की चिंताएं दूर जाती हैं। यह मन की मदद करने के लिए एक तकनीक है। मक्का या मदीना, यरुशलेम या बनारस की तीर्थ यात्रा करने पर मानसिक शांति मिलती है तथा मन अधिक सकारात्म एवं प्रभावी हो जाता है। मन को शांत करें और फिर अपने आप को किसी भी कार्यकलाप, किसी भी काम में संलग्न करें: आप देखेंगे कि यह काम अपने आप को सबसे अधिक संतुष्टि, सबसे बड़ी पूर्ति और खुशी देगा और आपका वह काम कला का रूप ले लेती है। इस प्रकार, भक्ति धर्म का मूल है-एक तकनीक है जिसके द्वारा आप मन को शांत कर सकते हैं। एक शांत मन के साथ, आप परमात्मा से तादात्मय करके न केवल आध्यात्मिक स्तर पर प्रगति करते हैं, बल्कि भौतिक दुनिया में भी सफलता प्राप्त करते हैं।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग

“आरती लिए तू किसे छूँडता है मूरख,
मन्दिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में ?
देवता कहीं सङ्कों पर गिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदण्ड बनने को हैं,
धूसरता सोने से श्रृँगार सजाती है ;
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।”

- रामधारी सिंह ‘दिनकर’



पानी बचाओ, पृथ्वी बचाओ

डॉ. लोटन कुमार बोस (प्रधान वैज्ञानिक) डॉ. प्रकाश चंद्र रथ (प्रभागाध्यक्ष)
भारूअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

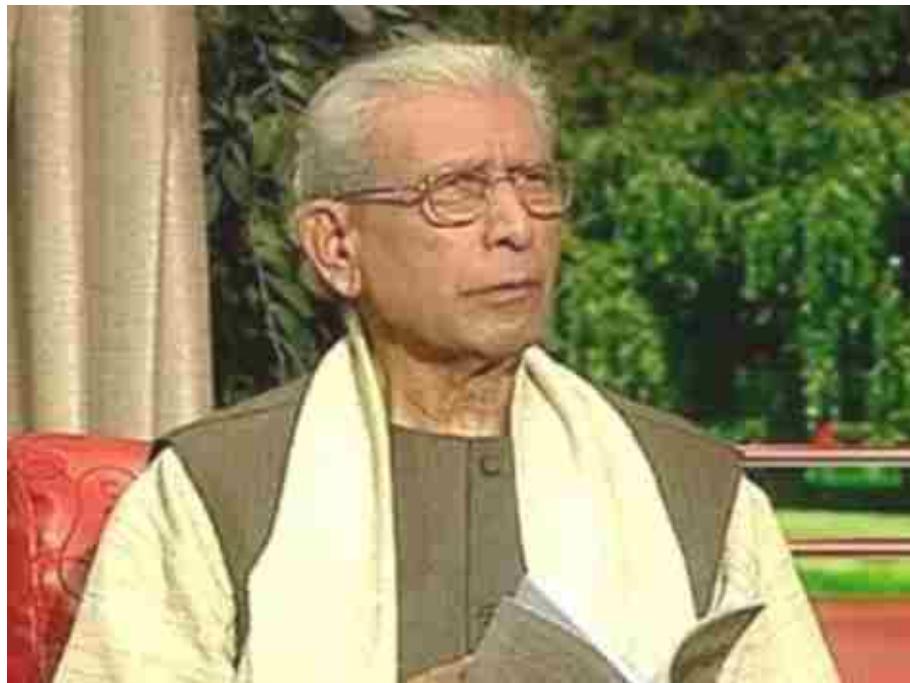
जल मानवता के सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी पर जीवन की सबसे पहले उत्पत्ति पानी में ही हुई थी। हमारे ग्रह का लगभग 70 फीसदी हिस्सा पानी से घिरा हुआ है और इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हमें अपने दैनिक जरूरतों और गतिविधियों के लिए पानी की आवश्यकता होती है परन्तु इन कार्यों में हम काफी ज्यादे मात्रा में जल व्यर्थ कर देते हैं। यह वह समय है जब हमें इस मामले की गंभीरता को समझने की आवश्यकता है और यदि हमें पृथ्वी पर जीवन को बचाना हैं तो इसके लिए हमें सर्वप्रथम जल को बचाना होगा क्योंकि "जल ही जीवन है"। बढ़ती आबादी और मौजूदा जलवायु परिवर्तन वैश्विक ताजा जल संसाधन के लिए एक बढ़ी चुनौती है। भारत एक क्लासिक मामला है इस खुला परिदृश्य का। भारत में प्रति व्यक्ति ताजे पानी की उपलब्धता 1544 क्यूबिक मीटर (2011 में) है। 2017 के संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या अनुमान (संशोधित) से पता चलता है कि भारत होगा इस ग्रह पर 2024 तक चीन से अधिकतर आबादी वाला देश। 2030 तक, शहरी क्षेत्रों में भारत में 600 मिलियन लोग रहने की भी संभावना है, वर्तमान स्तर से लगभग 380 मिलियन अधिक। यह ध्यान देने योग्य हो सकता है कि पानी अधिक बाध्यकारी बाधा होने की संभावना है यहां तक कि भूमि से भी भारतीय कृषि के लिए, और इसलिए यह बदलने का समय है। चावल हाइड्रोलॉजिकल स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला में बढ़ने की क्षमता में प्रमुख खाद्य फसलों के बीच अद्वितीय है, मिट्टी के प्रकार और मौसम चावल की महत्वपूर्ण कृषि-पारिस्थितिकी में ऊपरीभूमि चावल, वर्षाश्रित चावल, निचली भूमि चावल, सिंचित, कम भूमि चावल और बाढ़ प्रवण चावल। हालांकि, विडंबना यह है कि विश्व के चावल उत्पादक देश जैसे चीन और भारत भी हैं अग्रणी देशों को विश्व स्तर पर वर्तमान और भविष्य के पानी के जोखिम का सामना करना पड़ा रहा है (ओईसीडी, 2017)। सिंचाई के तहत चावल का फसल क्षेत्र 24.99 मिलियन हैक्टर है जो थोड़ा सा है चावल की खेती के तहत कुल क्षेत्र का 60 प्रतिशत से कम। चावल सिंचाई अकेले कुल सकल सिंचित क्षेत्र 5 में से लगभग 28 प्रतिशत खपत होती है, देश शारीरिक जल उत्पादकता को कृषि के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है सभी उपलब्ध स्रोतों से खपत पानी की मात्रा में उत्पादन सिंचाई, वर्षा आदि सहित (प्रति घन मीटर के उत्पादन का किलो फसल की वृद्धि के दौरान पानी का उपभोग (वाष्प-प्रत्यारोपण के माध्यम से)। सिंचाई जल उत्पादकता को फसल उत्पादन

के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है किसान/सिंचाई प्रणाली द्वारा लागू सिंचाई पानी या तो सतह नहरों, टैंक, तालाब या अच्छी तरह से और ट्यूबवेल के माध्यम से फसल की वृद्धि। इस प्रकार सिंचाई एक आर्थिक गतिविधि है और किसान को पानी (किलो/एम 3) लागू करने के लिए कुछ व्यय करना पड़ता है। आर्थिक जल उत्पादकता को मूल्य के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है पानी की खपत या मात्रा में फसल उत्पादन किसान द्वारा लागू सिंचाई पानी (रूपये/एम 3 के रूप में व्यक्त)। चावल एशिया का प्रधान खाद्य है और यह लगभग विश्व जनसंख्या का आधे की खाद्य सुरक्षा के लिए केंद्रीय है। चावल भी सबसे बड़ा पानी उपभोक्ताओं में से एक है दुनिया में और फसल को 34-43 प्रतिशत तक प्राप्त होता है कुल दुनिया की सिंचाई पानी। आईआरआरआई ने अनुमान लगाया कि कुल मौसमी 100 दिन की चावल की फसल के लिए आवश्यकता 670 मिमी-4450 मिमी जितनी अधिक हो सकती है 1500 मिमी/सीजन के विशिष्ट मूल्य के साथ। पानी के लिए इस तरह की प्रतियोगिता के रूप में दुनिया के कई चावल उत्पादन क्षेत्रों में संसाधन दोहन हो रहा है। फसल उत्पादन के लिए पानी के अक्षम उपयोग ने एक्वाइफर्स को कम कर दिया है और नदी बहती है, और सिंधु, कृष्ण और कई नदी धाटी नदी की मांगों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पानी नहीं है कृषि, उद्योग और शहरी केंद्र।

ताजा पानी के लिए प्रतिस्पर्धी मांग के रूप में पानी और सतह की आपूर्ति करने के लिए पानी और ऊर्जा की वास्तविक लागत और भूजल तीव्रता, उनके खेती प्रणालियों की जल उत्पादकता, चावल उत्पादकों को काफी सुधार करने की आवश्यकता होगी। दुनिया में चावल की खेती के तहत भारत का सबसे बड़ा क्षेत्र लगभग 27 प्रतिशत है। चावल भारत की सबसे महत्वपूर्ण अनाज फसल है और इसकी व्यापक रूप से भिन्न स्थितियों के तहत खेती की जाती है। वर्तमान में, भारत को उपलब्ध जल संसाधनों में कमी का सामना करना पड़ा रहा है जिसका भारत के कृषि क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है। देश के कई क्षेत्रों में पानी का तनाव अनुभव कर रहे हैं। यदि पानी की उपयोग दक्षता में सुधार नहीं होता है, तो देश अगले 1 से 2 दशकों में पानी की कमी के कारण पीड़ित हो सकता है। यह बेहद जरूरी है कि कृषि क्षेत्र जल उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों और संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करके स्थिति के विस्तार को रोकने में योगदान देना है। कृषि क्षेत्र में पानी के उपयोगकर्ताओं की जागरूकता और अभिविन्यास अधिक जल कुशल उत्पादन विधियों पर स्विच करने के लिए देश को पानी की कमी के खिलाफ मदद कर सकता है।



जिन्हें हम भूला न सकेंगे.....



नामवर सिंह

(1 मई 1927 से 19 फरवरी 2019)
हिंदी साहित्य के प्रख्यात आलोचक

प्रमुख कृतियाँ-

आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, छायावाद,
इतिहास और आलोचना, कहानी-नई कहानी,
कविता के नए प्रतिमान, दूसरी परंपरा की
खोज



खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए छोटी देशी मछली

डॉ. अरबिंद महांती, तकनीक सहायक, डॉ. श्रीकांत लेंका, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. प्रदीप कुमार साहु, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
भाकृ अनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक-753006

“शून्य भूख”(Zero Hunger) संयुक्त राष्ट्र के “सतत विकास लक्ष्य” (Sustainable Development Goals) कार्यक्रम के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है। यह तब हासिल किया जा सकता है जब सभी वर्गों के लोगों की आहार संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तक पहुंच हो। चूंकि बढ़ती आबादी के साथ भूमि संसाधन कम हो रहे हैं, खाद्य उत्पादन में वृद्धि के लिए वैकल्पिक कार्यनीतियों को खोजा जा रहा है। एकीकृत खेती प्रणाली उन कार्यनीतियों (Integrated farming) में से एक है जिसे न केवल कृषि उत्पादन बढ़ाता है बल्कि किसान की आय में भी वृद्धि होती है। भारत में एकीकृत फसल के अंतर्गत मुख्य रूप से चावल, मछली और मुर्ग की खेती की जाती है।

चावल भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों के लिए मुख्य भोजन है। यह कार्बोहाइड्रेट का मुख्य स्रोत है। हालांकि, कार्बोहाइड्रेट के अलावा अन्य पोषक तत्व, जैसे प्रोटीन, तेल (फैटी एसिड), खनियों और विटामिन मानव स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। आहार में प्रोटीन की अपर्याप्तता से क्वाशरकोर और मैरस्मस जैसी बीमारिया होती हैं। इसी प्रकार, विटामिन और खनियों की अपर्याप्तता से से भी बहुत सारी बीमारिया होती हैं। विटामिन ए की कमी से रत्तींधी रोग होता है जिससे दुनिया भर में 5 वर्ष से कम आयु बाले लगभग 28 लाख बच्चे पीड़ित हैं और करीब 7 करोड़ लोग आयोडीन की कमी से पीड़ित हैं।

दाल भारत में प्रोटीन का महत्वपूर्ण स्रोत है। देश दालों के उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं है और इसका एक बड़ा हिस्सा अन्य देशों से आयात होता है। इसलिए दाल महँगी होती है और गरीब श्रेणी के लोग इसे खरीदने में असमर्थ होते हैं। प्रोटीन की तरह, फैटी एसिड, खनियों और विटामिन जैसे अन्य पोषक तत्वों के स्रोत को भी गरीब श्रेणी के लोग खरीदने में असमर्थ होते हैं। इसलिए, विभिन्न सरकारों और अंतरारष्ट्रीय संगठनों द्वारा लोगों के सभी वर्गों में गुणवत्ता प्रोटीन की पर्याप्त आपूर्ति के लिए पहल की जा रही है।

इस संदर्भ में, भूख और कुपोषण को खत्म करने के लिए मछली एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। मछली गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन, तेल (फैटी एसिड), और सूक्ष्म पोषक तत्व (विटामिन और खनियां) का एक अच्छा स्रोत है। इसके अलावा, मछली की बहुत सारी प्रजातियां उपलब्ध हैं जिनके दाम भी अलग-अलग हैं और सभी वर्ग के लोग अपनी

सुविधानुसार मछली की प्रजाति का चयन कर सकते हैं। विशेष रूप से छोटी देशी मछलियाँ विटामिन और खनियों की समृद्ध स्रोत हैं। इन मछलियों को उनकी सभी हड्डियों के साथ पूरी तरह से खाया जाता है और इस प्रकार उपभोक्ता को कैल्शियम, पोटेशियम, लौह, जिनके जैसे सूक्ष्मपोषकतत्व प्राप्त होते हैं। ये मछलियाँ विटामिन 'ए', 'डी', 'ई' और विटामिन 'के' की समृद्ध स्रोत हैं।

यद्यपि, छोटी देशी मछलियों जैसे एमब्लिफर्मिंगोडोन मोला (मोला), पुंटियस सोफोर (पोटिया या पोथी), अनाबास टेस्ट्यूडिनेस (कवाई) में सूक्ष्म पोषक तत्व बड़ी मछलियों की तुलना में कहीं अधिक है, फिर भी इन्हें कम प्राथमिकता दी जाती है। इंडियन मेजर कार्प (Indian major carps), रोहू, कतला और मृगल प्रजातियों का उत्पादन भारत में सबसे अधिक होता है। छोटी देशी मछलियों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की अधिकता के कारण ये लोगों के सूक्ष्म पोषक तत्वों के जरूरत को पूरा कर सकती हैं। इसलिए, छोटी देशी मछलियों के खाने के लाभ के बारे में लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। इससे इन मछलियों की मांग पैदा होगी जो इसकी उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव डालेगी। जलीय कृषि प्रथाओं के साथ-साथ एकीकृत कृषि प्रणालियों में इन मछलियों को शामिल करने से न केवल देश की पोषण सुरक्षा में योगदान होगा बल्कि किसानों की आय वृद्धि का भी यह एक महत्वपूर्ण साधन बनेगा।

सारणी: कुछ छोटी देशी मछलियां एवं उनमें पाये जाने वाले पोषक तत्व

मछली

- 1- एमब्लिफर्मिंगोडोन मोला
- 2- पुंटियस सोफोर
- 3- अनाबास टेस्ट्यूडिनेस

पोषक तत्व

- | | |
|----------------------------|----------------------------|
| विटामिन ए, कैल्शियम, आयरन | विटामिन इ, ए, डी, के, आयरन |
| विटामिन इ, ए, डी, के, आयरन | विटामिन ए, कैल्शियम, |

अभिस्वीकृति

लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए हम निदेशक, भा.कृअन.प.-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान और डॉ बिमल प्रसन्ना मोहंती, प्रभागाध्यक्ष, मात्रियकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय मात्र्यकी अनुसंधान संस्थान और समन्वयक, आईसीएआर-एफएसडी-आउटरीच गतिविधि-3 के आभारी हैं।



वीरों का कैसा हो वसंत

“आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार बार
प्राची पश्चिम भू नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत
वीरों का कैसा हो वसंत

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुंचा अनंग
बधु वसुधा पुलकित अंग अंग
है वीर देश में किंतु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भर रही कोलिका इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान
मिलने को आए आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत

गलबाहें हों या कृपाण
चलचितवन हों या धनुषवाण
हो रामविलास या दलितत्राण,
अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुङ्गमें क्यों लगी आग
ए कुरुक्षेत्र अब जाग जाग,
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत

हल्दीघाटी के शिला खंड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत

भूषण अथवा कवि चंद नहीं
बिजली भर दे वह दंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं,
फिर हमें बताए कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत”

- सुभद्रा कुमारी चौहान



खाद्य सुरक्षा में फसलों की जीन आभियांत्रिकी का योगदान

डॉ. एम.जे.बेग, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. सागर बनर्जी, तकनीकी सहायक

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

वैश्विक जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हमें कृषि स्थिरता सुनिश्चित करने, खाद्य मांगों को पूरा करने और कुपोषण और भूख को सीमित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। कृषि उत्पादकता के साथ-साथ उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने की दिशा में दक्षता को दुनिया भर में बढ़ाना होगा। बढ़ती आबादी के दबाव के अलावा, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं की अधिकता, कृषि के लिए सीमित उपलब्ध पानी और कृषि उत्पादकता को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में, यदि हम वर्तमान किस्मों की तुलना में बेहतर फसलों का विकास नहीं करते हैं, तो हमें 2050 तक लगभग 1 बिलियन हेक्टेयर की अतिरिक्त खेती योग्य भूमि की आवश्यकता होगी। इसलिए, हमें पर्यावरण के साथ समझौता किए बिना खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए एक विविध और एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा खाद्य सुरक्षा को एक ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है, जब हर समय, एक सक्रिय और स्वस्थ जीवन के लिए आहार की जरूरतों और खाद्य वरीयताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तक आम लोगों की सामाजिक और आर्थिक पहुंच हो। एक वैश्विक ढांचे में, खाद्य सुरक्षा जटिल है और यह बुनियादी ढांचे, राजनीतिक उद्देश्यों और सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि जैसे कारकों पर निर्भर करती है। हालांकि, पर्यावरण के अनुकूल तरीके से फसलों की उत्पादकता और उत्पादन को अधिकतम करना कृषि समुदाय के प्रयासों पर निर्भर करता है। इस संदर्भ में, जैव प्रौद्योगिकी के साधनों द्वारा फसल अभियांत्रिकी, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने की अपार संभावनाएं प्रदान करता है। फसल अभियांत्रिकी और कृषि जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है और भविष्य में स्थायी कृषि की दिशा में हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुसंधान और कार्यान्वयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विभिन्न जैव-प्रौद्योगिकीय साधनों में, जीन अभियांत्रिकी और जीनोमिकी जैसी तकनीकें कृषि स्थिरता एवं खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इन विशिष्ट उपकरणों का उपयोग आनुवंशिक संसाधनों के विकास के साथ-साथ जरूरतों के अनुसार फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

पुनःसंयोजित डीएनए तकनीक, पादप टिशू कल्वर, डबल हैल्पोइड्स और भ्रूण बचाव जैसी तकनीकों का उपयोग आवश्यकता के अनुसार फसलों के आनुवंशिक रूपरेखा में

हेरफेर करने के लिए किया जाता है और इस प्रकार की फसल को जीनपरिवर्धित अथवा जेनेटिकली मॉडिफाइट (जी. एम.) फसल कहा जाता है।

2017 में, 189.8 मिलियन हेक्टेयर जी.एम.फसलों को दुनिया भर के 24 देशों में उगाया गया था। 1996 में जी.एम. फसलों के लिए वैश्विक क्षेत्र केवल 1.7 मिलियन हेक्टेयर था, इसलिए यह 2017 तक लगभग 112 गुना बढ़ गया। वर्तमान रुझानों से संकेत मिलता है कि जी.एम. फसलों की स्वीकार्यता विकसित के साथ-साथ विकासशील देशों में भी जारी रहेगी। वर्तमान में, सोयाबीन, मक्का और कपास जैसी फसलें वैश्विक स्तर पर जीन अभियांत्रिकी के माध्यम से सुधार के लिए सबसे पसंदीदा फसलें हैं। कीट प्रतिरोधक प्रोटीन बेसिलस थुरिंगिनेसिस या ग्लोबोसिनेट अमोनियम ओर ग्लाइफोसेट जैसे हर्षिसाइड्स के प्रति सहिष्णुता को दर्शाते प्रोटीन मुख्य रूप से दुनिया भर के विभिन्न देशों में आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों में व्यक्त किए जाते हैं। कीट प्रतिरोध के अलावा; बायरल बैकटीरियल, फंगल और नेमाटोड प्रतिरोधी फसलों को इन बायोटिक तनाव कारकों के साथ मुकाबला करने के लिए जीन अभियांत्रिकी के माध्यम से विकसित किया जा रहा है। आनुवंशिक अभियांत्रिकी के माध्यम से सूखे, लवण्युक्त, गर्मी, ठंड, ऑक्सीडेटिव तनाव और धातु विषाक्तता जैसे अजैविक तनावों का प्रबंधन किया जा रहा है। इस क्षेत्र में उन्नति केवल जीन परिवर्धन के उद्देश्य तक ही सीमित नहीं है, बल्कि लक्ष्य फसलों की विविधता (जैसे अनाज, बागवानी फसल आदि को बढ़ाना भी है।

पारंपरिक पादप प्रजनन में, लाखों क्रॉस के बाद भी किसी विशेष जीन संयोजन की गारंटी नहीं दी जा सकती है। इसके अलावा, वांछनीय जीन के साथ-साथ अवांछित जीन के हस्तांतरण की संभावना है। दोनों माता-पिता के जीनों को एक साथ मिलाने और फिर से बनाने से संतानों में जीन की वांछनीय लाभ के साथ जीन की अनपेक्षित हानि भी हो सकती है। इन्हीं कारणों से पारंपरिक पादप प्रजनन में प्रायः वांछित फसल सुधार प्राप्त करना मुश्किल होता है। दूसरी ओर, विशिष्ट जीन को लक्षित जीव के आनुवंशिक रूपांतरण में अन्य जीनों के साथ हस्तक्षेप किए बिना वांछित एग्रोनोमिक लक्षणों को प्राप्त करने के लिए जीन अभियांत्रिकी के माध्यम से एक निकट या दूर से संबंधित जीव में स्थानांतरित किया जा सकता है।

इसी तरह, दुनिया के कुछ हिस्सों में कुपोषण से निपटने के



धान

लिए बायोफोर्टिफाइड जी.एम.फसलों को विकसित करने के लिए काम जारी है। यह महत्वपूर्ण है कि जीन परिवर्धित एकमात्र दृष्टिकोण नहीं है, जो समस्या की तात्कालिकता और उपलब्ध सीमिति संसाधनों को देखते हुए है। उदाहरण के लिए, गोल्डन राइस, आनुवांशिक रूप से विटामिन ए को शामिल करने के लिए परिवर्धित किया गया है और एक दशक से अधिक समय से विकास में है और अभी तक बाजार में उपलब्ध नहीं है। इस समय के दौरान विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शिक्षा और विकास कार्यक्रमों के साथ-साथ विटामिन 'ए' की खुराक वितरित करके हजारों लोगों की जान बचाई है। भविष्य में जी.एम.प्रौद्योगिकी, अन्य तरीकों के साथ, बदलती परिस्थितियों में फसलों में आवश्यक विशेषताएं बनाए रखने के

साथ एवं जलवायु परिवर्तन के बावजूद खाद्य उत्पादन को बनाए रखने में मदद कर सकती हैं। हालांकि पारंपरिक कृषि के कई तरीके जैसे जैविक कृषि और पारंपरिक पादप प्रजनन की जीन अभियांत्रिकी से उत्पादित फसलों की तुलना में किसानों एवं उपभोक्ताओं में स्वीकृति अधिक है। लेकिन समय के साथ विश्व के विकसित देश एवं विकासशील देश जीन अभियांत्रिकी के फायदों को आम किसान तक पहुंचाने के लिए आवश्यक नीतियों पर विचार कर रहे हैं। बढ़ती आबादी और अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए जी.एम.प्रौद्योगिकी एवं जीन अभियांत्रिकी का प्रयोग भविष्य में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



धान फसल के नाशककीटों का पारंपरिक नियंत्रण एवं उपाय

डॉ. प्रकाश चंद्र रथ, प्रभागाध्यक्ष, डॉ. लोटन कुमार बोस, प्रधान वैज्ञानिक, एसएससी पटनायक, वैज्ञानिक भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

धान फसल के नाशककीटों का पारंपरिक नियंत्रण एवं उपाय

- पीला तना छेदक:** धान की दीर्घावधि किस्मों की तुलना में कम ऊँचाई वाले धान के पौधों एवं शीघ्र परिपक्व की अवधि वाली धान की किस्मों में अपेक्षाकृत कम नुकसान होता है। धान-धान फसल प्रणाली में जिसमें शीघ्र पकने वाली किस्मों



की खेती की जाती है, इनमें नुकसान कम होता है जबकि एकल धान फसल प्रणाली में जिनमें लंबी अवधि धान किस्म की खेती की जाती है नुकसान अधिक होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोहरी खेती प्रणाली में दो बार फसल की कटाई के कारण तना छेदक कीट मर जाते हैं। कटाई के बाद, जुताई करते समय एवं खेत में पानी भरते समय इन कीटों के डिंभकों की संख्या में गिरावट होती है जिससे अगली फसल में इस कीट का प्रकोप बहुत ही कम हो जाता है। रोपाई या बुआई के समय को विलंबित करके इन कीटों की संख्या में रोकथाम की जा सकती है। इस कीट के नियंत्रण के लिए धान की बीज क्यारी को एक जाल फसल की तरह उपयोग किया जा सकता है।

- भूरा पौधमाहू/सफेदपीठ वाला पौध माहू:** नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों की अधिक मात्रा में प्रयोग, कम दूरी पर रोपाई, उच्च सापेक्षिक आर्द्रता इन कीटों की संख्या को बढ़ाते हैं। धान के खेतों से पानी की निकासी प्रारंभिक संक्रमण के स्तर को कम करने में



प्रभावी हो सकता है। गंभीर संग्रमण होने पर 3-4 दिनों तक खेत से पानी निकाल देना चाहिए। प्रत्येक वर्ष दो फसल से अधिक खेती न करने एवं शीघ्र पकने वाली किस्मों की खेती से पौधमाहू कीटों की संख्या में होती है तथा नुकसान कम होता है। उर्वरक का उचित एवं भागों

में प्रयोग से पौधमाहू कीटों की संख्या में कमी होती है। तुल्यकालिक रोपण (3 सप्ताह के भीतर पास वाले खेतों को रोपण करना) और धानमुक्त अवधि बनाए रखना प्रभावी हो सकता है।

- राइस मिलीबग:** खेत के आसपास के क्षेत्र में वैकल्पिक परजीवियों को हटाने से इस कीटों की संख्या में काफी कमी



होती है। यांत्रिक और हाथों से नियंत्रण विधियों, जैसा कि संक्रमित पौधों को हटाने और मिट्टी में दबाने के बाद फिर से रोपाई करने पर कीटों के फैलने से रोकने के लिए अच्छे उपाय हैं।

- धान पत्तामोड़क:** शीघ्र रोपाई से पत्ती क्षति से बचने में मदद मिल सकती है। 22.5×20 सेमी और 30×20 सेमी की दूरी बनाए रखने और नाइट्रोजन उर्वरकों के कम उपयोग



से पत्ती क्षति कम होती है। उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग वाले खेतों में मादा कीट अंडे देने के लिए आकर्षित करते हैं। इसलिए उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग न करने की सलाह दी जाती है। अंडे खाने वाले भक्षक (क्रिकेट) आसपास के घास के मैदानों में रहते हैं और भक्षण के लिए रात में मैदान में जाते हैं। गैर-धान क्षेत्रों का रखरखाव सार्थक हो सकता है। छायादार क्षेत्रों में अधिक नुकसान होगा। इसलिए, खेत के भीतर छांव मत बनने दें।

- राइस केसवर्म:** जिन धान के खेतों में 30×20 सेमी की पूँजा दूरी बनाए रखा जाता है, उनमें केसवर्म की कीटों से नुकसान कम होता है।



शीघ्र रोपाई से केसवर्म की चरम संख्या अवरथा से बचा जा सकता है। 5-7 दिनों तक खेत से पानी निकाल देने



धान

से केसर्वर्म के डिंभक मर जाते हैं। अधिक दिनों की पौध के प्रयोग से फसल में कीट लगने वाली अवधि कम होती है। नाइट्रोजन उर्वरक के उचित मात्रा और भागों में प्रयोग करने से धान के केसर्वर्म कीटों की संख्या में कम होता है।

6. राइस व्होर्ल मैगट:

मौसम शुष्क होने पर शीघ्र रोपाई करने या अति विलंबित करने से इस कीट के संक्रमण में कमी होती है। पौध में कीट लगने पर रोपाई करने से बचें। धान फसल खेत में कभी-कभी या साप्ताहिक आधार पर पानी भरने से संक्रमण में कमी आ सकती है। संक्रमित खेतों में, नए अंकुर के गठन को प्रोत्साहित करने के लिए उर्वरक का उपयोग किया जा सकता है। धान के साथ मक्का की अंतःखेती (धान क्षेत्र की प्रत्येक 5वीं पंक्ति में धान की फसल से 2 सप्ताह पहले मक्का की बुआई करना) से इस कीटों की संख्या में कमी होती है।



7. धान गालमिज़ :

पिछली फसलों के बचे हुए रातून सहित जुताई करने से संक्रमण को कम किया जा सकता है। आसपास के क्षेत्रों से घास वाले खरपतवार और जंगली धान (वैकल्पिक परजीवियों) पर नियंत्रण से गालमिज की घटना को कम किया जा सकता है। 5-7 दिनों तक खेत से पानी निकाल देने से मिज कीटों की संख्या कम होती है। शीघ्र रोपाई करने तथा शीघ्र पकने वाली किस्मों की खेती से गंभीर संक्रमण से बचा जा सकता है। नत्रजन एवं पौटेशियम उर्वरकों का मध्यम मात्रा में तथा भागों में प्रयोग करने से इन कीटों की संख्या में कमी होती है। टेढ़-मेढ़े रोपाई करने से बचें, 3 सप्ताह के भीतर एक क्षेत्र में पूर्ण रोपाई करें जिससे संक्रमण कम होता है।



8. धान हरी इल्ली:

फसल को पतझड़ सहिष्णु करने का बेहतर अवसर देने के लिए पास-पास या अधिक संख्या में पौध रोपाई करें। टेढ़े-मेढ़े



रोपाई करने से बचें जिससे कीटों की संख्या बढ़ती है। शीघ्र रोपाई करने से (प्रत्येक रोपाई के प्रथम कुछ सप्ताह) हरी इल्ली कम होते हैं। उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से अधिक हरी इल्ली होते हैं। अतः उर्वरकों की उचित मात्रा तथा भागों में प्रयोग करने की संस्तुत की जाती है।

9. धान हिस्पा:

फसल की प्रारंभिक वृद्धि अवस्था में अत्यधिक संक्रमित फसलों की पत्तियों में अंडों और ग्रब्स के साथ शीर्ष तीन-चौथाई भाग की कतरन करने और नष्ट करने से इनकी संख्या कम होती है।



स्वीप जाल से वयस्क कीटों का निरंतर संग्रह और उनको नष्ट करने से इन कीटों की संख्या कम होती है और फसल क्षति कम होती है। फसलमुक्त मौसम के दौरान धान रत्न को हटाने से चावल हिस्पा कीट की उत्तरजीविता कम हो जाती है और सर्दी में इनकी आबादी पर असर पड़ता है। गंभीर हिस्पा संक्रमण के मामले में, नत्रजन उर्वरक के प्रयोग न करें।

10. राइस इयर-कटिंग कैटरपिलर/राइस स्वार्मिंग कैटरपिलर/कटवर्म:

जब बीज क्यारी पर संक्रमण देखा जाए तो, डिंभकों को डूबोने के लिए जल स्तर बढ़ाएं। ग्रस्त क्षेत्रों में, चावल के बाद मेजबान फसलों, जैसे गेहूं या मक्का की



खेती मत करें। यदि ये कीट समस्या पैदा कर रहे हैं, तो नियमित रूप से चावल-गेहूं की फसल के पैटर्न से बचें। घास वाले खरपतवारों खेतों में और उसके आसपास में इन कीटों की आबादी बढ़ सकती है। इसलिए खरपतवारों को नियंत्रण में रखना चाहिए। नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग समझदारी से करें। नाइट्रोजन की अधिक मात्र में प्रयोग से उर्वरता, नष्ट होती है, कीटों की उच्च उत्तरजीविता, लार्वा भक्षण और क्षति होगी। जब कीटों की संख्या प्यूपा अवस्था में होती है, तो जल स्तर को बढ़ाया जा सकता है। अधिक जल स्तर उन्हें मिट्टी की दरारों में और धान पूंजाओं और दौजियों के बीच में



झूबो देगी। ट्रैप फसल के रूप में सूरजमुखी और अरंडी के पौधों (स्पोडोप्टेरा को आकर्षित करने हेतु) को खेतों के भीतर और चारों ओर रोपाई करनी चाहिए जिससे मुख्य फसल को नुकसान कम करता है।

11. राइस बग / गंधी बग:

किसी एक क्षेत्र में सभी खेतों में एक समान फसल की परिपक्वता राइस बग क्षति को कम करती है। टेढ़े-मेढ़े रोपाई करने से बचना चाहिए। बाद में कुछ



क्षेत्रों में चावल की परिपक्वता, जो अन्य क्षेत्रों में परिपक्व हो रही है, इनकी अधिक संख्या के कारण गंभीर नुकसान हो सकता है। गैर-मौसम के दौरान चावल कीटों अन्य पौधों पर जीवित रहने में सक्षम हैं। अन्य पौधों पर, विशेषकर गैर-मौसम में, बग पर नियंत्रण लाभदायक हो सकता है।

12. राइस ब्लैक बग: शीघ्र

पकने वाली किस्मों की खेती से इस कीट की संख्या में हो सकती है। कटाई के बाद, चावल के ठूंठ पर ब्लैक बग के सभी चरण बने रहते हैं। इसलिए, जुताई द्वारा मिट्टी में ठूंठों को दबाने



से उनके प्रजनन/छिपने के आवास को नष्ट कर देता है। स्वच्छ खेती वैकल्पिक मेजबान को हटाती है जो प्रजनन स्थलों के रूप में काम करती है और चावल के पौधों के मूल तक अधिक धूप की अनुमति देती है। बड़े संक्रामक क्षेत्रों में एक साथ रोपाई से अधिमानत: 1 किमी के दायरे

में, इस कीट की आबादी के स्तर को नुकसान पहुंचा सकता है और उनके जीवन चक्र को नष्ट सकता है।

- 13. हरा पत्ता माहूः**: प्रति वर्ष केवल दो बार चावल की खेती करने तथा खेतों में समन्वित स्थापना से हरा पत्ता माहू कीटों की संख्या और चावल वायरस या फाइटोप्लाज्मा रोगों के अन्य कीट वैक्टर कम हो जाते हैं। अधिक दिनों वाली पौधों की रोपाई (> 3 सप्ताह) करने से लीफ हॉपर्स द्वारा प्रसारित वायरल रोग की संवेदनशीलता भी कम हो जाती है। चरम गतिविधि (ऐतिहासिक अभिलेखों द्वारा दिखाया गया) पर रोपाई से बचें। किसी एक रोपाई अवधि में शीघ्र रोपाई विशेष रूप से शुष्क मौसम में करने से कीट-रोगवाहक रोग से बचा जा सकता है। नत्रजन की उचित मात्रा का प्रयोग से कीट संख्या में कमी होती है तथा पौधे वृद्धि होती है। खेत में तथा बांध पर खरपतवारों के नियंत्रण से घास वाले परजीवियां हट जाते हैं तथा फसल वृद्धि अच्छी होती है। शुष्क मौसम के दौरान गैर-चावल की फसल के साथ फसल अनुक्रम से रोग में कमी आती है। केवल चावल की एकल खेती की तुलना में उपरीभूमि चावल के साथ सोयाबीन की अंतराखेती से लीफहॉपर्स की संख्या को कम करता है।



कविताएँ





धान



इस कदर चुप ना तनहा रहा कीजिये

श्रीमती शैल सिंह

पत्नी, डॉ ओ एन सिंह (पूर्व प्रभागाध्यक्ष) भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

(आजकल लोग हँसने में भी कंजूसी करते हैं, मनहूस सैसी शक्ति बनाये सामने वाले को भी मनहूस कर देते हैं उसी विषय पर मेरी ये सरल भाषा में एक हिंदी गजल की कोशिश पेश है।)

हँसी सांसों में घोल सरगम की तरह
हँसाईए औरों को खुद हँसा कीजिये,

उदासियों में हँसी की वजह ढूँढकर
खुशनुमा जिन्दगी फिर बना लीजिए
कर कमबख्त खामोशियों को दफा
खूब असल जिंदगी का मजा लीजिए,

गर्दिशो दर्द जख्म हों हँसी पर फिदा
बिछा चौसर हँसी का जिया कीजिए
कितनी सस्ती हँसी हँसते-हँसते हुए
इसमें डुबकी लगा कर नहा लीजिए,

हँसी चारों तरफ अपने बिखरी पड़ी
सब से संवाद कर बस उठा लीजिए
कितनी कीमती हँसी तत्व है जान लें
इसको बेहतर बनाकर हँसा कीजिए

सुप्तावस्था में हैं क्यूँ हँसी के सामान
उसको स्फूर्त कर फिर जगा लीजिए
खोल के होंठ के चुप्पियों की सांकल
ऐसा दिल-गुदाज मन्जर बना लीजिए,

कभी दौड़ती भागती जिन्दगी से इतर
खुद की परवाह भी तो किया कीजिए
कितनी नीरस लगे बिन हँसी जिन्दगी
इस कदर चुप न तनहा रहा कीजिये

खिले होंठों पे शतदल कमल सी हँसी
गुलाब की पाँखुरी सी महका कीजिए
हँसी जख्म-जिगर की दवा मुस्तकिल
बनाके शरबत हँसी को पीया कीजिए

इक दिन महरूम हो जाएगी जिन्दगी
क्या पता था कभी इक तबस्सुम लिए
वॉट्सऐप, फेसबुक, चैटों, की गतिविधि
पर होगी कुर्बान हँसी भी सदा के लिए

फिर से जीवन्त बना जिन्दगी साथियों
हँसी का झरना भी निझर बहा दीजिए
बिडम्बनायों कोई या विसंगति कोई हो
हास्य सब में छिपा बस परखा कीजिए।

(दिल-गुदाज—गुदगुदाने वाला)



वैयक्तिक द्वेष से किसी की मेधा को चुनौती देने वालों पर कविता

श्रीमती शैल सिंह

जिसने सोच लिया परिस्थितियाँ अनुकूल बनाने की
बाधाएं पुल बना देतीं उसे मन्जिल तक पहुँचाने की।

जिसकी संकल्पनाएं बिछातीं लक्ष्य का गलीचा सदा,
वह बार-बार की पराजयों से हताश नहीं होता कभी।

जिसके नजरिए में जीत हासिल करने का जज्बा हो,
सामर्थ्यवान साथ ईमानदार निर्णायक का कुनबा हो।

इच्छा शक्ति सकारात्मकता को निराश नहीं करतीं,
असफलता जीवन में प्रयास के नित नया रंग भरती।

जिसने हार को चुनौती दे दिया हरा कर पछाड़ने की,
उसकी जीत सुनिश्चित है विजेता बनकर उभरने की।

दांव खेलने वाले चाहे जितनी, जैसी विसात बिछा लें,
हथेली में खींची लकीरें चाहे जितने भी बार मिटा लें।

इक दिन ईश्वर लिखी रचना का स्वयं ही संज्ञान
लेंगे,
जिस-लिए तराशे थे उसी मुकाम पर पहुँचा दम लेंगे।

विधि पर ग्रहण लगा कर विश्वास से छल करने वाले,
वैयक्तिक द्वेष से किसी के जीवनवृत्त से खेलने वाले।

देख कायनात पृष्ठ वर्षाती खुद फलित अरमानों पर,
दुश्मन भी अचांभित दाता के अकस्मात वरदानों पर।





भारत के किसान

डॉ. शिव मंगल प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक

जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान।
तुमने नहीं किया कभी आराम,
तुमने नहीं किया कभी विश्राम,
सर्दी गर्मी हो या बरसात का नाम,
हर दिन बस तुमने किया है काम।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान ॥

ग्रामीण परिवेश में तुम्हारा बसेरा,
खेत-खलिहान में तुम्हारा डेरा,
तुमको अनेक प्रकार की चिंता ने घेरा,
कभी मौसम ने तो कभी बाजार ने मुँह फेरा,
तुमको नहीं मिला अच्छा मकान,
तुमको नहीं मिला अच्छा परिधान।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान ॥

अपनी मेहनत परिवार संग लगा कर,
जो मिल जाए रुखी सूखी खा कर,
आलस्य को अपने से दूर भगा कर,
अपनी लहू को पसीने संग बहा कर,
उगा रहे हो सबके लिए तुम धान,
बचा रहे हो सब के तुम प्राण।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान ॥

कृषि वैज्ञानिकों के खोज को तुमने,
खेतों में उतारा-फैलाया अपने,
प्रयोगशाला से खेत तक उसे पहुँचाया,
नए-नए तकनीकों को अपनाया,

वैज्ञानिकों को दी नई पहचान,
अपना भी भर लिया घर-खलिहान।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान ॥

कृषि विज्ञान केंद्रों पर भी आप जाएँ,
अपनी समस्यायों का समाधान पाएँ,
नई तकनीकों से अवगत हो जाएँ,
खेती के उन्नत तरीके अपनाएँ,
अपने ज्ञान से मिलायें वहाँ का ज्ञान,
अच्छी होगी खेती अच्छे होंगे परिणाम।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान

सरकार लाई है ढेर सारी योजनाएँ,
संगठित हों, और उनका आप सब लाभ उठाएँ,
खेत की मिट्टी की जाँच कराएँ,
समन्वित कृषि प्रणाली अपनाएँ,
आय दुगुरी करने का यही संधान,
होंगे आप खुशहाल, देश का बढ़ेगा मान।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान ॥

महापुरुषों ने दिया जय जवान, जय किसान का नारा,
फिर आया जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान का नारा,
अब जुड़ गया जय अन्नसंधान हमारा,
सब का साथ-सब का विकास हो प्यारा,
अब होने लगा देश को तुम पर अभिमान,
हो क्योंकि तुम भारत देश की शान।
जय-जय भारत के किसान,
जय-जय भारत के किसान ॥





पर्यावरण

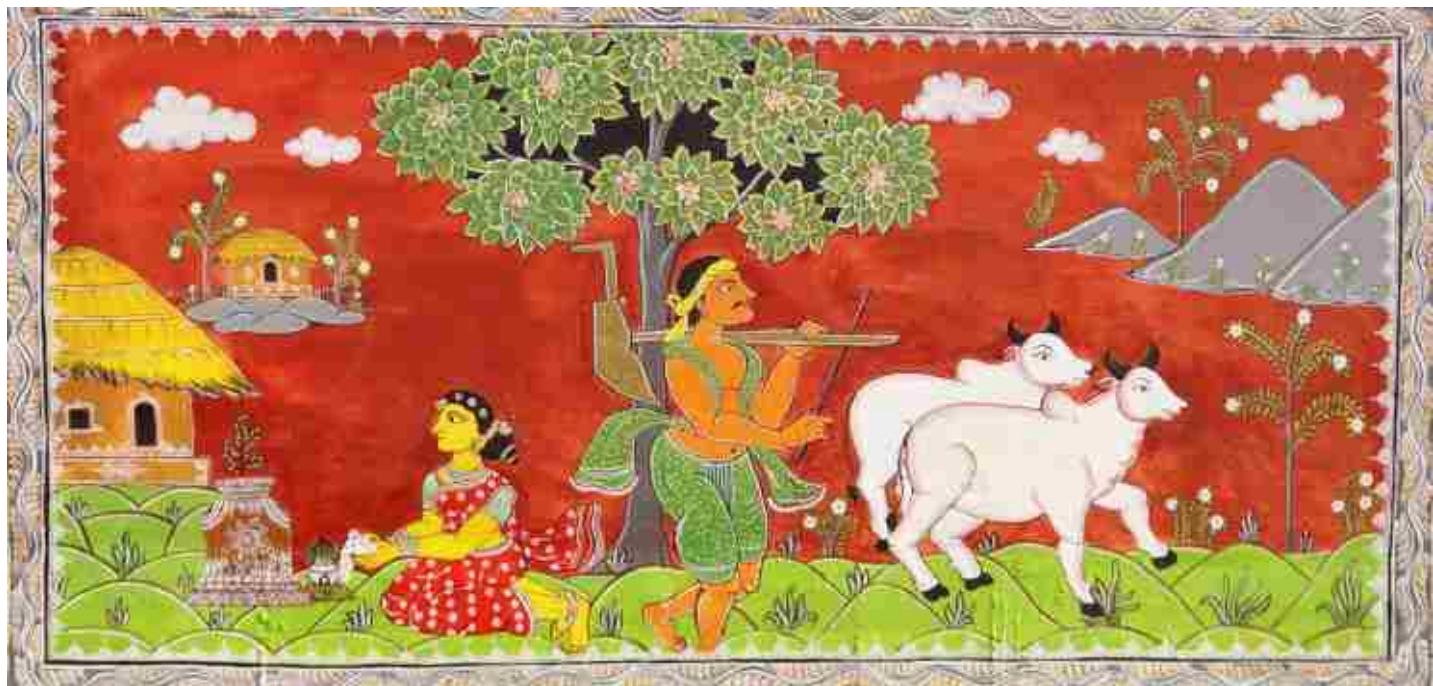
संदीप कुमार वर्मा, सहायक
केंद्रीय वर्षाश्रित उपराऊँ भूमि चावल अनुसंधान केंद्र हजारीबाग, झारखण्ड

धरती को बचाना है
कूड़ा-करकट हटाते जाओ,
साफ सफाई बढ़ाते जाओ।

गन्दगी को दूर हटाओ,
बीमारी से मुक्ति पाओ।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
प्रदूषण को दूर भगाएँ।
पर्यावरण हमारा है,
धरती को स्वर्ग बनाना है।

हल निकलेगा

कोशिश कर हल, निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा, साध निशाना,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
दुर्बल से भी बल निकलेगा।
कोशिश कर हल, निकलेगा।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



मेरा हाल ये हुआ

मिताश्री रथ

पत्नी, डॉ पी सी रथ, प्रभागाध्यक्ष, भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

कभी चाहा तुझसे नजरें चूरा लूं
कभी चाहा कि इश्क से अपना दामन बचा लूं
पता नहीं चला कब, कैसे, बिना किसी आहट के
पलकों पर सपने सजने लगे

आँखों में चाँद चमकने लगा
हाँठों पर जैसे ढेरों गुलाब खिल गए
क्यों किसी की चाहत भरी नजरें
खूबसूरत होने का एहसास कराती हैं,
क्यों उन नजरों में जिंदगी भर के लिए खो जाना
चाहती है।

लब खामोश है निगाहें क्या करती हैं
वो जो एक हल्की सी मुलाकात हुई थी,
आँखों ही आँखों में बात हुई थी,
मैं खुद को उस रोज वहीं छोड़ आया था।
घर तक तो लौटकर बस मेरा जिस्म भर आया था।

तुमको देखा तो रुक गई धड़कन
छा गया एक नशा
चाँदनी हो तुम, रूपसी हो तुम या हो कोई अप्सरा
वो तेरी मासूम अदा
वो तेरा अंदाज सबसे जुदा

छुआ था जब तुने अपनी नजरों से मुझे
तो मेरा हाल ये हुआ
ना बता सके ना सहन कर सके
हल पल तेरी याद
घुटते रहे अंदर ही अंदर
अपने आप को धोखा देते रहे
तेरे प्यार के पागलपन में।



वो दिन जब याद आये

सुश्री सृष्टि प्रसाद

सुपुत्री, डॉ शिवमंगल प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय वर्षाश्रित उपराऊ चावल अनुसंधान केंद्र, हजारीबाग, झारखण्ड

वो दिन जब याद आये
 आँखों में आँसू भर जाये,
 कानों में घंटी की आवाज फिर कब गुजेगी
 ठीचर की प्यार भरी डॉट कानों को छुकर निकलेगी,
 दोस्तों की प्यार भरी मुसकान, फिर थोड़ी सी नजाकत,
 हँसी ठहाके फिर थोड़ी-सी शरारत
 वो दिन जब याद आये,
 आँखों में आँसू भर जाये।

स्कूल बस से स्टूवार्ट स्कूल को जाना,
 नयाबाजार, ओ.एम.पी. और जोब्रा से गुजरना
 ठण्डी पवन के झाँकों का बहना,
 मन से महानदी के जल में उतरना
 बाली यात्रा का वह विराट मेला,
 भीड़ और देखनेवालों का रेला,
 वो दिन जब याद आये
 आँखों में आँसू भर जाये।

कटक के वो चावल अनुसंधान का प्रांगण
 खेतों- प्रक्षेत्रों का वह दृश्य मनोरम,
 साफ-सफाई जैसे हो स्वर्ग का दर्शन,
 मिलन सरिता का क्या वर्णन,
 शाम को साईकिल से कैम्पस का भ्रमण
 सभी अंकल-आंटी को करना नमन
 वो दिन जब याद आये
 आँखों में आँसू भर जाये।

संस्थान में कार्यक्रमों का आयोजन
 उन सबों में बच्चों का मनोरंजन,
 सबों में मेरा पार्टीशिपेशन,
 कुछ में द्वितीय तो कुछ में प्रथम

महापात्रा अंकल से प्रमाण-पत्र लेना
 और उनका वह हाथ मिलाकर बधाई देना,
 आँखों में आँसू भर जाये।

स्कूल और कटक की याद दिल के भीतर बस गई
 आँखों के सामने बीते हर लम्हे फंस गई,
 दोस्तों की एक झलक के लिए आँखें तरस गई,
 सभी के स्नेह और आशीष के लिए वो भी बरस गई
 सच कहें तो दिल की धड़कन वहीं पर बस गई,
 क्या करुं मजबूर हूँ, पापा के साथ सभी को रहना है,
 हजारीबाग भी अच्छा है, अब तो बस यही कहना है,
 वो दिन जब याद आयें, आँखों में आँसू भर जाये।
 वो दिन जब याद आयें, आँखों में आँसू भर जायेः॥



पापा

आरती मुदगल, पत्रकार एवं कवयित्री, उज्जैन

बिना तुम्हारे मेरे जीवन की ये पहली दीवाली है
रीती रीती, कुहरीली से, कुम्हलायी सी दीवाली है
तुम थे आतिशबाजी जैसे रंग बिरंगी लड़ियों जैसे
जगमग रोज दीवाली जैसे, स्वर व्यंजन की थाली जैसे

खुशी खुशी बिदा करते जब मैं ऑफिस जाती
लौट के आती तुम्हें पाती, हमेशा अपने इंतजार में
धुँधली आँख जमाए बैठे, जीवनदाता द्वार को खोले
तकते-तकते अनथक बैठे, लिए पानदान साथ में
अब यह कुर्सी खाली बैठी, जड़वत कोने में खोई है
पानदान भी बाट जोह रहा, जाने किसकी आस में
किसागोई खत्म हो गई, कमरे में चुप्पी सोई है
तुमसे हर दिन दीवाली थी पापा
कहने को अब दीवाली है.....



प्लास्टिक के आगोश में समाती ये दुनिया

शैलेश अवस्थी

सहायक नगर आयुक्त, ग्वालियर, मध्य प्रदेश सरकार

प्लास्टिक के आगोश में समाती ये दुनिया
आज पॉलीथिन की चादर ओढ़कर बेसुध है।
आँखों पर चढ़ गई है रंगीन पन्नियाँ
जो माटी का रंग देखने नहीं देती।
और ना ही उतरने देती हैं उस दर्द को
दिल के भीतर
जो माटी का चाक चलाते-चलाते बूँदा हो गया।

सवेरे के टूथब्रश से लेकर
रात के गुड़नाइट और ऑलआउट तक
प्लास्टिक का साम्राज्य है।

बेबी के बॉटल और बाबू के टिफिन पर
हो चुका है प्लास्टिक का कब्जा
और हम हैं कि बर्थ डे मनाए जा रहे हैं।

उरता हूँ उस दिन से कि जब कभी हम
नवजात बच्चे को प्लास्टिक की ऊमी के हवाले कर दें
और कह दें कि बेटा..... यह माँ है तुम्हारी !

और उससे भी बुरा ये कि
कहीं प्यार ना हो जाए उस नई पीढ़ी को
उस प्लास्टिकपन से..... ॥







जिन्हें हम भूला न सकेंगे.....



कृष्णा सोबती
(18 फरवरी 1925 से 25 जनवरी 2019)
हिंदी साहित्य की प्रख्यात कथाकार

उपन्यास
जिंदगीनामा, सूरजमुखी अंधेरे के, दिलोदानिश, समय सरगम

कहानियाँ
डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, यारों के यार, ऐ लड़की



कहानी

टिकियाबन आलूबर्गर

उमा रानी माथुर

आजकल घर-घर में हम बच्चों को चीज़ का स्वाद पसन्द है। यह बाजार में बिकने वाले पिज्जा की देन है। टी.वी. विज्ञापन में किसी के मुँह में खाते समय पिज्जा से निकलते तारों को देखकर सब बूढ़े बच्चों के मुँह में पानी आ जाता है। बिना खाए ही बस देखकर आनन्द आ जाता है। चीज़ का जादू आज सब पर है।

पर मेरी दादी जी को चीज़ के बारे में पचास सालों से पता है। वह एक बड़े अच्छे पढ़े लिखे परिवार से हैं और उन्होंने अपने बचपन में ही उन सब चीजों का स्वाद चखा जो हम अब दश-पन्द्रह साल से जान रहे हैं। जब अन्य परिवार नाश्ते में लड्डू मठरी पराठे खाते थे, मेरी दादीजी के परिवार में उनके बड़े भाई ने अपने छोटे भाई बहनों को केक, पेस्ट्री औमलेट का स्वाद ही क्या चक्का भी लगा दिया था। उनके घर की खाने की टेबिल पर अक्सर ये व्यंजन मौजूद होते थे। नाश्ते में कौर्न प्लेक्स भी खाए जाते थे। पर उनके घर में भी तब किसी को चीज़ के बारे में कुछ पता नहीं था। मेरी दादीजी की बातों से लगता है उन्होंने अपने बचपन में बहुत मस्ती की थी।

आज जब अमेरिका में हम भारतीयों का इतना जमावड़ा है मेरे दादाजी व दादीजी उस समय अमेरिका पढ़ने गए थे जब वहाँ के अधिकतर लोग भारत को साधु सन्तों और सर्पों के देश के रूप में जानते थे। एक ही विश्वविद्यालय में पढ़ने से दोनों में पहले दोस्ती हुई और फिर प्यार। थोड़े समय बाद उन्होंने वहीं शादी कर ली थी। मेरी दादीजी बताती हैं कि पचास-पचपन साल पहले पहली बार दादाजी उन्हें एक इटैलियन रेस्ट्रॉं में पिज्जा खिलाने ले गए थे। पिज्जा पूरी थाली के बराबर था। उन्हें कुछ समझ ही नहीं आया था पिज्जा का स्वाद। फिर वह दो तीन बार और गई तब भी उन्हें पिज्जा में मजा नहीं आया क्योंकि चीज़ और ओलिव का स्वाद उन्हें अजीब लग रहा था।

तभी दादाजी के प्रोफेसर ने उन्हें उनकी शादी के उपहार के रूप में एक सुन्दर सी डलिया भेंट में दी। ऊपर से सजी सजाई डलिया के अन्दर क्या है पता ही नहीं चल रहा था। उत्सुकतापूर्वक खोलने से उन्हें उसमें बीस पच्चीस अलग अलग रंग और आकार के टुकड़े दिखे। उन्हें लगा तरह तरह के साबुन हैं पर उठाकर सूँधने से वह समझ गई कि सब चीज़ के टुकड़े थे। उन्हें नहीं मालूम था कि चीज़ रंग बिरंगी भी हो सकती है। कुछ टुकड़े सादे थे कुछ में तरह तरह के मसाले मिले हुए थे। दादीजी ने बताया था कि इतनी सारी चीज

देखकर उन्हें खुश होना चाहिए था पर ऐसा नहीं हुआ क्योंकि तब तक उनको चीज़ का स्वाद पसन्द नहीं आया था। उन्होंने दादाजी से कहा था कि उनके प्रोफेसर ने उन्हें रंग बिरंगे साबुन दिए होते तो अच्छा होता। यह सब कैसे और कहाँ रखेंगे, कैसे खत्म करेंगे। उन्हें तो अब तक चीज़ का स्वाद अच्छा नहीं लगता। बहुत सोचकर दोनों ने सोचा आधी चीज़ अपने खास दोस्तों को दे देंगे और बाकी फ्रिज में रख लेंगे।

एक हफ्ते बाद दादीजी की नई बनी सहेली मिसेज बड़ेरा ने उन्हें अपने घर पर खाने को बुलाया। हिंदुस्तानी ढंग से बनाए चिकन और बैंगन भुरते के साथ उन्होंने ओवन में पकाए बड़े बड़े आलू के टुकड़ों पर चीज़ के पत्र लगाए थे जो थोड़े पिघल भी गए थे, वे दादाजी और दादीजी को बहुत स्वादिष्ट लगे। इसके अलावा मिसेज बड़ेरा ने चीज़ पकौड़े भी बनाए थे। प्याज हरी मिर्च और घिसी हुई चीज़ में कौर्न फ्लावर मिलाकर बनाए पकौड़े भी बहुत मजेदार लगे। अब मेरी दादीजी को चीज़ का स्वाद बहुत अच्छा लगा। अब उन्हें बहुत अफसोस हुआ कि अपनी ही दी चीज़ के व्यंजनों को कैसे चटकारे लेकर खा रही थीं। दादाजी भी उनकी ओर देखकर मुस्करा रहे थे। दादीजी ने बताया कि उस दिन उनको अपने ऊपर खून गुस्सा भी आया था।

इसके एक सप्ताह बाद फिर शनिवार को नये शादी शुदा जोड़े को झा राय ने अपने घर दावत दी। उन्होंने कीमा मटर के साथ चीज़ के पराठे खिलाए वे भी दोनों को बहुत अच्छे लगे। अब दादीजी को समझ में आ गया कि किसी भी खाने की वस्तु का स्वाद उजागर करने के लिए जरा सी अकल लगाने की जरूरत है तथा थोड़े अलग अलग प्रयोग करने से उसके स्वाद से प्यार हो जाता है। अब उन्होंने भी अपने घर में चीज़ के व्यंजन बनाने और खिलाने शुरू कर दिए। पर इतनी सारी चीज़ मिसेज बड़ेरा और मिसेज राय को देने का हमेशा अफसोस रहा।

अमेरिका से वापस आकर जब मेरी दादीजी ने घर बसाया तब भी भारत में चीज़ का सब दुकानों पर मिलना बहुत मुश्किल था तो उन्हें काफी सालों तक चीज़ को भूलना पड़ा। पर जब उनके दो बच्चे हो गए तो उनका मन करता था कि अपने बच्चों को चीज़ खिलाएं। बहुत पूछताछ करने से दादाजी को पता चला कि एक दुकान जो उनके घर से बहुत दूर है वहाँ चीज़ के क्यूब मिलते हैं। फिर क्या था करीब आठ किलोमीटर



साइकिल चलाकर वे उस दुकान से चीज़ का एक पैकेट ले आए जिसमें दस क्यूब थे। दादीजी बताती हैं कि भारत में उस समय चीज़ बहुत मँगी थी। उसके व्यंजन बनाने और खिलाना मन के मन में रह गया।

तभी एक बार दादीजी जब अपनी माँ के घर गई थीं तो उन्हें बहुत सारी चीज़ मिल गई। हुआ यह कि जब दादीजी पटना पहुँची तो उसके थोड़े ही दिन बाद उनका छोटा भाई सुधीर जो एयर फोर्स में था वह भी अपनी सालाना छुट्टी लेकर वहाँ पहुँचा। उसके सामान में चार चार किलो के दो टिन थे जिनमें धी न होकर चीज़ थी। दादीजी बताती हैं जब उनकी माँ सुधीर मामा पर चिल्ला रही थीं—“क्यों इस बला को लेकर आया है? कौन खायेगा? कहाँ रखेंगे? क्यों पैसा फेंक आया?” तब वह मन ही मन खूब खुश हो रहीं थीं कि अभी तक जो उन्होंने अपने घर में अमेरिका में बनाए व्यंजनों की बात की थी अब सबको बनाकर दिखायेंगी और खिलायेंगी और सबको चीज़ के स्वाद से प्यार हो जायेगा।

सुधीर मामा ने सबको पूरी परिस्थिति बताई। जब उनके कमान्डिंग ऑफीसर ने उन्हें और दलजीत सिंह को एयरमैनों के मैस का इन्वार्ज बनाया तो वे दोनों बहुत खुश हुए थे। उन्होंने अक्सर एयरमैनों को अपने मिलने वाले खाने से असन्तुष्ट पाया था। एन. डी. ए. की ट्रेनिंग के समय दोनों ने खूब चीज़ खाई थी और पसन्द भी की थी। उनके समय में भी कोई पिज्जा के बारे में नहीं जानता था। उनको मैस में चीज़ के चौकोर टुकड़े या फिर ब्रैड पर लगाकर खाने को मिलती थी। दोनों को चीज़ की पौष्टिकता के बारे में भी सारी जानकारी थी।

सुधीर मामा और दलजीत सिंह उस समय प्लाइंग आफीसर थे जब उन्हें दो सौ एयरमैनों के मैस का इन्वार्ज बनाया गया था। उनको कहा गया था कि मैस का खाना पौष्टिक, स्वादिष्ट और सन्तुलित होना चाहिए। प्रोटीन की मात्रा पूरी मिले इसलिए सुधीर मामा और उनके दोस्त ने यह तय किया कि एयरमैनों को भी चीज़ देनी चाहिए तो उन्होंने चारचार किलो के चार टिन मँगा लिए थे। पर किसी भी एयरमैनों को उसका स्वाद पसन्द नहीं आया। अब समस्या थी कि जो टिन आ गए हैं उनका क्या किया जाए और जो पैसा फँस गया है वह कहाँ से उठाया जाए। वे अपनी गलती सबके सामने नहीं लाना चाहते थे तो यह तय किया कि वे दोनों दो दो टिन खरीद लेंगे और अपने घर ले जायेंगे।

दलजीत एक हफ्ते ही बाद ही पंद्रह दिन की छुट्टी पर घर जाने वाला था तो वह एक बन्द और एक खुला टिन लेकर बलरामपुर अपनी बहन हरिप्रिया के घर पहुँच गया। उसके बहनोई सन्धू साहब एक छोटे शहर बलरामपुर में एक बेकरी चलाते थे। सन्धू साहब बेकरी में पाव रोटी, बन, कप केक, कर्झ

प्रकार के बिस्कुट तथा लम्बे लम्बे रस्क बनाते थे। उनके लम्बे रस्क की बहुत मँग थी। गरीब भी चाय के साथ ये लम्बे रस्क खूब खाते थे। आर्डर आने पर सन्धू साहब केक भी बनाते थे।

दलजीत के माँ बाप नहीं थे बहन का परिवार ही उसका परिवार था। यह सिख परिवार जो थोड़े ही साल पहले इस शहर में आया था, अपनी कड़ी मेहनत की बजह से देखते ही देखते एक समृद्ध परिवार बन गया था। परिवार के पाँचों सदस्य इस काम में लगे थे। उनके लड़के बलजीत और जगजीत तथा बेटी शीना जब स्कूल में थे तब से स्कूल से आते ही पापाजी के साथ काम करते थे। दोनों लड़के अब बारहवीं पास कर चुके थे और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने की सोच रहे थे। शीना ने होम साइन्स के साथ दसवीं कक्षा पास की थी।

उस समय टी.वी. नहीं था। किसी ने बर्गर या पिज्जा का नाम भी नहीं सुना था पर सरदार जी ने बम्बई के बड़ा पाव के बारे में सुना था तो जगजीत ने उसी तरह का कुछ बनाने का सोच कर दो छोटे साइज के बनों के बीच आलू टिकिया रखने की सलाह दी। उसने अपने पापाजी व बीजी को बताया—“ देखो जी, मेरी पढ़ाई पूरी हो गई है अब मैं टिकिया बन बनाकर अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहता हूँ। मुझे लगता है शहर के बच्चों के लिए यह एक नई चीज़ होगी और सबको खूब पसन्द आएगी। बीजी अगर आप रोज पचास आलू की टिकिया बना दें तो हम यह आज से ही शुरू कर सकते हैं। खट्टी मीट्ठी चटनी के साथ दो बनों के बीच यह चटपटी टिकिया सबको अच्छी लगेगी। अभी हम एक छोटा बन दो रुपये में बेचते हैं अब हम अपना टिकियाबन दस रुपए में बेचेंगे। पचास टिकियाबन बेचने से हमें पाँचरुपये मिल जायेंगे।” ऐसा जगजीत ने अपनी बीजी से कहा।

पापाजी बीजी और सबको जगजीत का विचार अच्छा लगा और उनकी टिकियाबन खूब चले। बाद में एक दिन शीना अचानक बोल बैठी कि हम टिकियाबन में प्याज का भी एक पर्त रख दें तो स्वाद और बढ़ जायेगा। बलजीत ने सुझाया कि प्याज के साथ एक टमाटर का भी स्लाइस लगा दें तो हमारा टिकियाबन देखने में और सुन्दर लगेगा। फिर पापा जी बोल उठे—“थोड़ा कटा धनिया भी डालने से शक्ति और सुन्दर लगेगी। अगर हमने यह सब लगाया तो एक टिकियाबन हम पंदरह रुपये में बेच सकते हैं।” जब यह वार्तालाप चल रहा था तभी दलजीत घर पहुँचा। वार्तालाप में भाग लेते हुए उसने टिकियाबन में चीज़ भी लगाने का सुझाव दिया और कहा कि एक टिकियाबन बीस रुपये में बेचा जा सकता है।

इस वार्तालाप को रोक कर मिसेज सन्धू ने अपने भाई के लिए चाय बनाई और तीन चार तरह के बिस्कुटों के साथ अपना



बनाया एक टिकियाबन भी पेश किया। दलजीत ने बिस्कुटों की ओर न देखकर टिकिया बन चखा जो उसे बहुत अच्छा लगा। उसने झट से बैग में से खुला चीज का टिन अपनी बहन को थमा दिया और कहा कि थोड़ी सी चीज को धिस कर ले आएं। फिर उसने जगजीत से और टिकियाबन मँगा कर उसमें चीज़ डाल कर सबको चीज का टेस्ट कराया जो सबको खूब अच्छा लगा। दलजीत की लाई चीज ने सारे शहर वालों को एक नये स्वाद से परिचित कराया। कुछ को अच्छा नहीं लगा पर अधिकतर लोगों और खास तौर पर बच्चों और कालेज जाने वाले लड़के लड़कियों को नया सन्धू टिकियाबन बहुत अच्छा लगा। दलजीत को खुशी थी कि चीज के पैसे वसूल हो गए। इस प्रकार एक छोटे शहर बलरामपुर में आधुनिक बर्गर ने “टिकियाबन” के रूप में जन्म लेकर शहर के लोगों का स्वाद बदल दिया अब कचौड़ी समोसों की जगह लोग टिकियाबन खा रहे थे।

दलजीत ने छुट्टी से वापस जाकर सुधीर मामा को सन्धू बेकरी के बारे में सब बताया तो मामा को बहुत अच्छा लगा। उन्होंने सोचा था कि उनके घर में भी चीज के नये नये प्रयोग किए जायेंगे और सबको चीज़ पसन्द आ जायेगी। पर उन्हें अपनी माँ की प्रतिक्रिया ने निराश किया। उन्होंने अपनी अमेरिका में रही बहन की ओर आशा भरी नजरों से देखा। मेरी दादीजी ने अपने भाई को आँखों ही आँखों में आश्वासन दिया।

पर अब समस्या यह थी कि एक टिन में चार किलो चीज़ थी। एक बार टिन खुल गया तो रखेंगे कहाँ। बड़ा परिवार होने के कारण उनका फ्रिज तो हमेशा भरा रहता है। चार किलो चीज़ एक दो दिन में खत्म नहीं की जा सकती थी और न फ्रिज में रख सकते थे तो क्या किया जाए? चार पाँच दिन सोच विचार करने के बाद दादीजी के बड़े भाई साहब ने कहा “सुधीर, चिन्ता मत करो। मैंने इस समस्या का समाधान निकाल लिया है। इस सारी चीज़ को लेकर कैलिंग संन्टर में चले जाओ और इस चीज़ के छोटे छोटे टिन बनवा लाओ। अगर चार सौ ग्राम चीज़ के टिन बनवाए तो बिस टिन बन जायेंगे और अगर दो सौ पचास ग्राम के टिन बनवाए तो बत्तीस टिन बन जायेंगे पर बत्तीस टिन बनवाने में बहुत पैसे लगेंगे। मेरे हिसाब से हमें बीस टिन ही बनवाने चाहिए। एक समय में एक टिन खोलकर फ्रिज में रखकर काफी दिन तक खा सकते हैं।” सबको बड़े भाई सा की सलाह सही लगी।

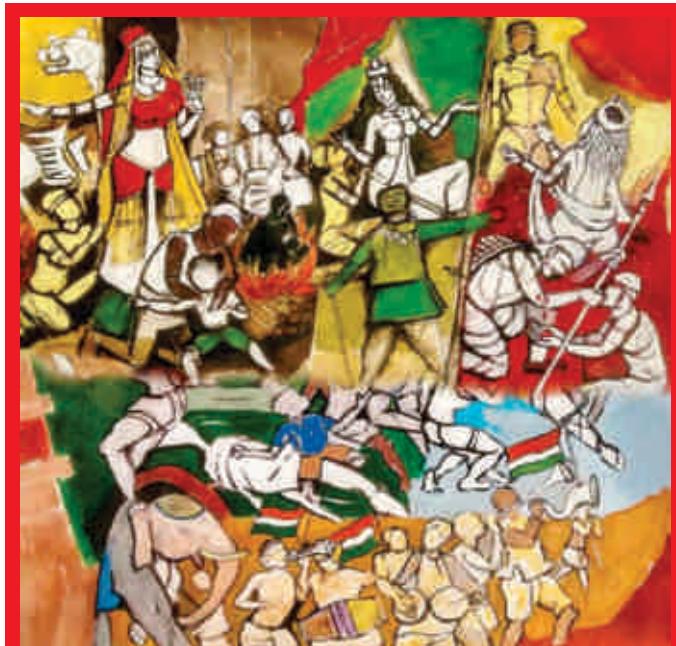
दूसरे दिन सुधीर मामा कैनिंग सेन्टर जाकर चीज़ के बीस टिन बनवा लाए। एक टिन को खोलकर सबने चीज़ का एक एक छोटा टुकड़ा मुँह में डाल कर बहुत देर इधर उधर घुमाया और उसके स्वाद को समझने और पसन्द करने की कोशिश की। दादीजी की माँ ने टुकड़ा बाहर निकाल कर प्लेट में रख दिया। उनको तो चीज का स्वाद बिल्कुल पसन्द नहीं

आया। दादीजी के और भाई बहनों की प्रतिक्रिया मिली झुली थी। जिनको चीज़ का स्वाद पसन्द आया उन्होंने दूसरे दिन नाश्ते में ब्रेड पर लगा कर चीज खाई। बाद में दादीजी ने एक दिन चीज के पराठे खिलाए और फिर एक दिन चीज के पकौड़े जो सबको बहुत पसन्द आए। दादीजी को सबसे अच्छे बेकड आलू लगे थे पर यहाँ अमेरिका जैसा ओवन नहीं था। तो वहाँ जैसे बेकड आलू नहीं बना पाई। उनके दूसरे बड़े भाई अक्सर भरवाँ आलू बनवाते थे और दादीजी को याद आया कि उनकी माँ सारे दिन इसी काम में लगी रहती थीं। दादीजी ने अपने बड़े भाई सा, से एक ओवेन खरीदने को कहा जिससे सब चीज़ वाले बेकड आलू खा सकें।

इसके बाद घर में एक दिन आलू टिकियाँ बनीं तो दादीजी को अमेरिका में देखे हैं मर्बर्गर याद आ गए। उन्होंने तुरन्त उठकर ब्रेड के दो स्लाइसों के बीच टिकिया रखकर उस पर घिसी चीज़ लगाकर सबको चटनी के साथ खिलाया तो उनका आलूबर्गर सबको अच्छा लगा। धीरे धीरे प्याज और टमाटर लगाकर उनके आलू बर्गर ने सन्धू बेकरी के टिकियाबन का रूप ले लिया। बाद में दादीजी के घर में उनकी भाभी जी ने चीज़ के व्यंजन बनाना शुरू कर दिया। सारी छुट्टियाँ इसी तरह तरह तरह के खाने बनाने और खाने में निकल गईं।

जब मेरी दादीजी वापस अपने घर आ रही थीं तो उनके सामान में उनकी माँ ने छै: चीज़ के टिन भी रख दिए यह कहकर कि अब वह अपने घर में जाकर सबको खूब चीज़ खिलाएँ। मेरे पापा और चाचा तो दादी जी के साथ थे तो वे दोनों भी टिनों को देखकर मन ही मन दादाजी की खुशी का अनुमान लगा रहे थे। उनके अपने घर में ओवन था तो दोनों सोच रहे थे कि भोपाल पहुँच कर उन्हें मम्मी द्वारा बनाए बेकड आलू भी खाने को मिलेंगे। पापा को भी अमेरिका का खाना याद आ जायेगा। भोपाल में दादीजी बताती हैं कि वे छै: टिन चीज़ खूब दिन थोड़ा थोड़ा खर्च करके चलाए। अपने लालन में किसी बाहर वाले को दादीजी ने कुछ चीज़ के व्यंजन नहीं खिलाए।

आज रंगीन टी.वी. के कारण सबको सब देश प्रदेश के खान पान के बारे में पता है। जगह जगह जगह मैकडोनल्ड और पिज़ज़ा बनाने वाले स्टोर हैं और सब खरीद खरीद कर खा रहे हैं लगता है सबको चीज़ पसन्द है। हर बार बाहर का बर्गर और पिज़ज़ा खाते समय पापा और चाचा अपने बचपन के उन दिनों के टिकियाबर्गर और टिकियाबन की याद करके हमको सुधीर मामा और दलजीत सिंह की कहानी जरूर सुनाते हैं। हमें अपनी दादीजी के बड़े भाई की चतुराई पर गर्व होता है। अगर उन्होंने बड़े टिन के छोटे टिन बनाने की ना सोची होती तो उन सबको समय से पहले बर्गर का स्वाद नहीं मिलता और न ही मेरे पापा और चाचा ने चीज की बनी इतनी चीज़ें खाई होती।



हिंदी हैं हम
वतन है हिन्दोस्तां हमारा

-इकबाल

राजभाषा विभाग, भारत सरकार



हमारे व्यवहार में हिंदी
को काम में लाना देश की श्रीम
उज्ज्ञति के लिए आवश्यक है

-महात्मा गांधी

राजभाषा विभाग, भारत सरकार



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) कटक राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा गठित वह समिति है जो किसी नगर में अवस्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों तथा उपक्रमों में राजभाषा के रूप में हिंदी का कार्यान्वयन सुनिश्चित करती है। यह समिति एक ऐसा संयुक्त मंच है जहां पर केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों के प्रमुख मिल-बैठकर सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग के उपायों पर चर्चा करते हैं और राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष जारी होने वाले 'वार्षिक कार्यक्रम' में दिए गए दिशानिर्देशों तथा नियमों का अपने कार्यालयों में अनुपालन सुनिश्चित करते हैं।

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान नराकास कटक का अध्यक्ष कार्यालय है। वर्ष 2016 में नराकास का दायित्व मिलने के बाद निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक की अध्यक्षता में यह कटक में अवस्थित कुल 86 कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए सतत रूप से प्रयासरत है और इस प्रयास में पर्याप्त सफलता भी मिली है। आज नराकास कटक के सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा समितियाँ गठित कर दी गई हैं जिनकी नियमित तिमाही बैठकें होती हैं। प्रत्येक कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यशाला आयोजित की जाती है और प्रत्येक कार्यालय द्वारा अपनी राजभाषा संबंधी तिमाही रिपोर्ट राजभाषा विभाग की सूचना प्रबंधन प्रणाली में अपलोड की जा रही हैं।

नराकास कटक की अर्धवार्षिक बैठकें मई और अक्टूबर में राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में आयोजित की जाती हैं और सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों को तकनीकी प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

नराकास की 50वीं बैठक आयोजित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कटक की 50वीं बैठक दिनांक 30.5.2018 को राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में आयोजित की गई। राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक के निदेशक तथा नराकास के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक ने इसकी अध्यक्षता की। इस बैठक में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कुल 36 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में सभा को संबोधित करते हुए डॉ. पाठक ने सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों को राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2018-19 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति पर सर्वाधिक बल दिया। इस संदर्भ में डॉ. पाठक ने राजभाषा संबंधी नियमों के



कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं का कार्यशालाओं तथा संगोष्ठियों के आयोजन के माध्यम से उनका समाधान के लिए नराकास के अध्यक्ष कार्यालय के रूप में एनआरआरआई के भरपूर सहयोग की बात कही। इस अवसर पर श्री बनबिहारी साहू, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, भुवनेश्वर को व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किया गया था जिन्होंने संसदीय राजभाषा समिति के प्रश्नावली को भरने से संबंधित तथ्यों पर सदस्य कार्यालयों के लाभ हेतु एक व्याख्यान दिया।

बैठक में पधारे अतिथियों एवं प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए नराकास के सदस्य सचिव एवं राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष





कुमार तिवारी ने 50वें नराकास की बैठक के कार्यवृत्त के प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा की और 49वीं नराकास बैठक की कार्यसूची प्रस्तुत की। नराकास के अध्यक्ष डॉ. हिमाशु पाठक ने राजभाषा विभाग द्वारा 2018-19 के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्षणों की प्राप्ति हेतु सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों के साथ विस्तृत चर्चा की। उन्होंने विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों द्वारा उनके कार्यालय में सामना किए जा रहे राजभाषा संबंधी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। बैठक के अंत में सदस्य सचिव ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।



नराकास की 51वीं बैठक आयोजित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कटक की 51वीं बैठक दिनांक 30 अक्टूबर 2018 को राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में आयोजित की गई। राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक के निदेशक तथा नराकास के अध्यक्ष डॉ. हिमाशु पाठक ने इसकी अध्यक्षता की। इस बैठक में कटक में स्थित सदस्य कार्यालयों से 40 अधिकारियों ने भाग लिया। विदेश व्यापार कार्यालय के उप महानिदेशक डॉ. सुखबीर सिंह बादल, जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद कार्यालय के सहायक आयुक्त श्री अमिताभ चटर्जी, प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय के प्रशासनिक अधिकारी श्री एस के

दत्त, भारतीय स्टेट बैंक, कटक के सहायक महाप्रबंधक श्री चंद्रमणि बारिक, कैनारा बैंक की मुख्य प्रबंधक श्रीमती मनस्विनी दास जैसे वरिष्ठ अधिकारियों की प्रतिभागिता ने नराकास बैठक के महत्व को बढ़ाया।



बैठक के आरंभ में नराकास के सदस्य सचिव एवं राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने सर्वप्रथम 50वीं अर्धवार्षिक बैठक का कार्यवृत्त प्रस्तुत किया जिसके विभिन्न बिंदुओं पर अध्यक्ष महोदय तथा सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों द्वारा चर्चा की गई और पुष्टि कर दी गई। इसके पश्चात सदस्य सचिव ने 51वीं अर्धवार्षिक बैठक में समिति के समक्ष 7 नए प्रस्ताव प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं:

- 1) राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित प्रोफार्मा में ही तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरा जाना।
- 2) नागरिक चार्टर तथा जनसूचना से संबंधित बोर्ड का द्विभाषी प्रदर्शन।
- 3) प्रशिक्षण के संबंध में राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों का अनुपालन किया जाना।
- 4) विभागीय/कार्यालयी राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन।





धान

- 5) प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन।
- 6) धारा 3 (3) के अंतर्गत सही आंकड़े दिया जाना।
- 7) प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय हिंदी समिति की दिनांक 6 सितंबर 2018 की बैठक में लिए गए संकल्प के अनुपालन में कार्यालय हिंदी में सहजता को बढ़ावा दिया जाना।



अध्यक्ष महोदय डॉ. हिमांशु पाठक ने सभी प्रस्तावों पर सभा के साथ विस्तृत रूप में विचार-विमर्श किया तथा नराकास के इन प्रस्तावों को अपने कार्यालयों में अपनाने के लिए सदस्य कार्यालयों से आवृत्ति की। राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान द्वारा अध्यक्षीय कार्यालय के दायित्वों के निर्वहन के क्रम में उन्होंने सदस्य कार्यालयों को यथासंभव सहयोग देने के लिए आवश्यक दिशानिर्देश दिए। अध्यक्ष महोदय ने नराकास के सदस्य कार्यालयों को राजभाषा संबंधी कार्यों के संदर्भ में तकनीकी रूप से दक्ष बनाने का अपना संकल्प दोहराया तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट rajbhasha.nic.in के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी सदस्य कार्यालयों से सूचना प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से ही अपनी तिमाही प्रगति रिपोर्ट भेजे जाने का अनुरोध किया। इस बैठक में नराकास के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक द्वारा स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुनर्वास प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान,



कटक को सर्वश्रेष्ठ द्विभाषी वेबसाइट का पुरस्कार प्रदान किया गया। सभा का समापन करते हुए नराकास सचिव श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने सभी सदस्य कार्यालयों को उत्साहजनक भागीदारी के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

नराकास कटक द्वारा तकनीकी कार्यशाला आयोजित



नगर राजभाषा कार्यालय समिति कटक के अध्यक्ष कार्यालय राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के तत्वाधान में 20.12.2018 को नराकास कटक के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों के लिए एक दिवसीय तकनीकी प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। राजभाषा विभाग की वेबसाइट की सूचना प्रबंध प्रणाली में तिमाही प्रगति रिपोर्ट का ऑनलाइन अपलोड करने हेतु सदस्य कार्यालयों का पंजीकरण करने के लिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।



यह कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई। प्रथम सत्र में संस्थान के पुस्तकालय के कंप्यूटर लैव में नराकास कटक के ऐसे सदस्य कार्यालयों को पंजीकृत करने का काम किया गया जिनका अब तक पंजीकरण नहीं किया गया था। इस सत्र के दौरान निम्नलिखित कार्यालयों का सूचना प्रबंध प्रणाली में पंजीकरण किया गया।



1. भारतीय खेल प्रधिकारण, बारबाटी, कटक
2. आयकर अपीलीय अधिकारण, सीडीए, कटक
3. डाक एवं दूरसंचार लेखा कार्यालय, बारबाटी, कटक
4. केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, मुंडली, कटक
5. बैंक ऑफ इंडिया, कटक
6. कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त, तुलसीपुर, कटक
7. राष्ट्रीय आपदा मोचन बल, मुंडली, कटक
8. कॉर्पोरेशन बैंक, बजरकबाटी रोड, कटक



द्वितीय सत्र संस्थान के सभागार में आयोजित किया गया जिसमें प्रोजेक्टर के माध्यम से सभी राजभाषा अधिकारियों को तिमाही प्रगति रिपोर्ट अपलोड करने में आने वाली समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया तथा प्रत्येक राजभाषा अधिकारी को राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर काम करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कटक के अध्यक्ष तथा एनआरआरआई के निदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने सभी राजभाषा अधिकारियों के साथ तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑलाइन भेजे जाने के संदर्भ में आने वाली समस्याओं पर परिचर्चा की और उनको प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भेजने के लिए प्रेरित किया। डॉ. बनविहारी साहू, प्रबंधक (राजभाषा) भारतीय स्टेट बैंक, भुवनेश्वर इस कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक



थे। प्रशिक्षण के अंत में नराकास, कटक के सचिव तथा सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने सभी राजभाषा अधिकारियों को इस कार्यशाला में सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया तथा अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कटक के द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों के अनुपालन का आव्वान किया।

नराकास की 52वीं बैठक आयोजित

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में दिनांक 27 मई 2019 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कटक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की 52वीं बैठक निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस बैठक में कटक में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों तथा उपकरणों के कुल 39 कार्यालय प्रमुखों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। आकाशवाणी कटक के उप महानिदेशक (आभियांत्रिकी) श्री प्रकाश कुमार पति इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे।



कार्यक्रम के आंरभ में नराकास के सचिव श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने सभी कार्यालय प्रमुखों का स्वागत करते हुए सर्वप्रथम 51वीं नराकास बैठक का कार्यवृत्त प्रस्तुत किया जिसके सभी शीर्षकों पर विचार-विमर्श करने के पश्चात पुष्टि कर दी गई। इसके पश्चात सदस्य सचिव ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के कैलेंडर वर्ष 2018-19 के दौरान नराकास कटक के सदस्य कार्यालयों के चारों तिमाहियों में प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा प्रस्तुत की जिसमें राजभाषा संबंधी वार्षिक कार्य निष्पादन में कार्यालयों की उपलब्धियों तथा कमियों की विवेचना की गई थी। कार्यक्रम के तीसरे चरण में 52वीं नराकास बैठक के लिए नए प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए जो इस प्रकार हैं-

- 1) नराकास कटक के सदस्य बैंकों की शाखाओं में राजभाषा संबंधी कार्य हेतु नोडल अधिकारी बनाया जाना।



- 2) राजभाषा अधिकारियों के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण।
- 3) हिंदी अनुवादकों के लिए शब्दकोश तथा प्रशासनिक शब्दावली की खरीद।
- 4) समाचारपत्रों में विज्ञापनों से संबंधित नियम का अनुपालन।
- 5) हिंदी प्रशिक्षण कार्यशालाओं के अतिथि वक्ताओं को मानदेय से संबंधित नियमों का अनुपालन।
- 6) कार्यालय में सरकारी कामकाज में हिंदी में टिप्पणी लेखन को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाना।
- 7) वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों में वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों को हिंदी मौलिक पुस्तक लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाना।
- 8) हिंदी शिक्षण योजना के प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ/पारंगत पाठ्यक्रमों में नामंकन की प्रक्रिया में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानदंडों का ही अनुपालन किया जाना।
- 9) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) तथा राजभाषा नियम 1976 के नियम 11 का शत-प्रतिशत अनुपालन किया जाना।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक ने 51वीं बैठक के कार्यवृत्त और 52वीं बैठक के नए प्रस्तावों पर सम्मिलित सभी कार्य-बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की और सभी कार्यालय प्रमुखों से भारत सरकार के नियमों के



आलोक में उन पर यथाशीघ्र कार्रवाई करने का अनुरोध में किया। अध्यक्ष महोदय डॉ. पाठक ने तिमाही रिपोर्ट के संदर्भ में तकनीकी कार्यशाला तथा सदस्य कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित करने के संदर्भ में सदस्य सचिव को निर्देश देते हुए राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में राजभाषा संबंधी प्रशिक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। अध्यक्ष महोदय ने इस अवसर पर कैलेंडर वर्ष 2018-19 में राजभाषा संबंधी कार्यनिष्पादन में सर्वश्रेष्ठ प्रदश्न के लिए आकाशवाणी कटक को राजभाषा शील्ड तथा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। आकाशवाणी कटक की ओर से उप महानिदेशक (आभियांत्रिकी) श्री प्रकाश कुमार पति तथा सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सस्मिता दास ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रकाश कुमार पति ने अपने संबोधन में नराकास कटक के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक के मार्गनिर्देशन में राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान द्वारा कटक में में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों में चलाए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यकलापों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि 'नराकास की यह बैठक मेरे अब तक के नराकास बैठकों के अनुभव में सबसे विशिष्ट है और ज्ञानवर्धक है।'

हिंदी शिक्षण योजना की सर्वकार्यभारी अधिकारी श्रीमती स्निग्धारानी प्रधान ने इस अवसर पर कटक शहर में हिंदी शिक्षण योजना के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया और सदस्य कार्यालयों से अधिक से अधिक संख्या में प्रवेश लेने की अपील की।

सभा के अंत में राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों के सम्यक अनुपालन तथा अगली नराकास बैठक में अधिकाधिक भागीदारी का संकल्प सभी कार्यालय प्रमुखों ने दोहराया।

सभा का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।



हिंदी पखवाड़ा आयोजित



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 14 से 29 सितंबर 2018 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह के आयोजन के साथ हुआ। डॉ.हिमांशु पाठक, निदेशक, एनआरआरआई ने हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता की। हिंदी दिवस समारोह में मंचासीन डॉ.हिमांशु पाठक तथा डॉ.जे.एन.रेड्डी, प्रभागाध्यक्ष, फसल उन्नयन प्रभाग एवं अध्यक्ष, हिंदी प्रतियोगिता निर्णायक मंडल ने हिंदी के महत्व और उसकी बढ़ती लोकप्रियता के संदर्भ में अपने-अपने विचार सभा के सम्मुख रखे। इस पखवाड़े के दौरान संस्थान के हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी वैज्ञानिकों/ अधिकारियों/ कर्मचारियों/ अनुसंधान अध्येताओं/ विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनके विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं।



हिंदी श्रूतलेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

श्री विशाल कुमार
डॉ.अंजनी कुमार
सुश्री विनीता सिंह

आयोजन तिथि **14.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

हिंदी श्रूतलेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

डॉ. सागर बनर्जी
सुश्री स्मिता होता
श्रीमती पंकजिनी सामल

शुद्ध एवं शीघ्र लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

श्री विशाल कुमार
डॉ.अंजनी कुमार
श्री प्रेमपाल कुमार

शुद्ध एवं शीघ्र हिंदी लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

डॉ.शिवशंकरी एम
डॉ.सुप्रिया प्रियदर्शिनी
सुश्री गोलिव प्रशांति

हिंदी पाठ-पठन प्रतियोगिता (केवल हिंदीतर भाषी)

श्रीमती पंकजिनी सामल
डॉ.नीतिप्रसाद जांभूलकर
श्री अलबिनुस कुल्लू

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

डॉ.हिमानी प्रिया
डॉ.अंजनी कुमार
श्री विशाल कुमार

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

डॉ. सुप्रिया प्रियदर्शिनी
श्रीमती पंकजिनी सामल
श्रीमती रोजालिन स्वार्इ

हिंदी लिप्यंतरण प्रतियोगिता (केवल हिंदीतर)

डॉ.सागर बनर्जी
डॉ.नीतिप्रसाद जांभूलकर
श्री अलबिनुस कुल्लू

हिंदी शब्द अंत्याक्षरी प्रतियोगिता (केवल हिंदीतर)

श्रीमती पंकजिनी सामल

आयोजन तिथि **14.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

आयोजन तिथि **15.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

आयोजन तिथि **15.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

आयोजन तिथि **17.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

आयोजन तिथि **19.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

आयोजन तिथि **19.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार

आयोजन तिथि **20.09.2018**

प्रथम पुरस्कार
द्वितीय पुरस्कार
तृतीय पुरस्कार



श्रीमती रोजालिन स्वाईं	प्रथम पुरस्कार
श्रीमती रोजालिया किडो	प्रथम पुरस्कार
डॉ.संगीता महांती	द्वितीय पुरस्कार
श्री दीप्तिरंजन साहु	द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती निर्मला जेना	द्वितीय पुरस्कार
डॉ.सुप्रिया प्रियदर्शिनी	तृतीय पुरस्कार
सुश्री सास्मिता होता	तृतीय पुरस्कार
सुश्री देवार्चना जेना	तृतीय पुरस्कार
हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)	आयोजन तिथि 24.09.2018
ई. प्रभात गुरु	प्रथम पुरस्कार
डा हिमानी प्रिया	द्वितीय पुरस्कार
डा अंजनी कुमार	तृतीय पुरस्कार
हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)	आयोजन तिथि 24.09.2018
डॉ.सागर बनर्जी	प्रथम पुरस्कार
सुश्री सबिता साहु	द्वितीय पुरस्कार
श्री संतोष सेठी	तृतीय पुरस्कार
सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (सभी कर्मचारियों के लिए)	आयोजन तिथि 25.09.2018
श्री वेंकट रमेया	प्रथम पुरस्कार
श्री सुर्यप्रसाद लेंका	प्रथम पुरस्कार
श्री अविनाश परिडा	प्रथम पुरस्कार
श्रीमती रोजालिन स्वाईं	द्वितीय पुरस्कार
श्री मुनाएल महांती	द्वितीय पुरस्कार
श्री अर्णब मलिक	द्वितीय पुरस्कार
डॉ.अंजनी कुमार	तृतीय पुरस्कार
डा प्रभात गुरु	तृतीय पुरस्कार
डॉ सुमंत चटर्जी	तृतीय पुरस्कार



कुल 12 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई और इन प्रतियोगिताओं में कुल 120 प्रतिभागियों ने भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह 2 अक्टूबर 2018 को संस्थान में आयोजित किया गया। डॉ.अंजुमन आरा, एसोशिएट प्रोफेसर, रेवेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक इस समारोह की मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी अत्यंत सहज एवं सरल भाषा



है। इसको बोलना भी सहज है और लिखना भी। अतः दैनिक व्यवहार तथा कार्यालयी कार्य दोनों में ही हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिंदी प्रतियोगिता निर्णायक मंडल के अध्यक्ष डॉ.जे.एन.रेड्डी ने हिंदी पखवाड़ा समारोह का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ.हिमांशु पाठक, निदेशक, एनआरआरआई ने हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को बधाई दी तथा हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के सदस्यों को पखवाड़े के सुचारू ढंग से संचालन करने एवं इसे सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े नियमों के अनुपालन पर जोर दिया तथा कर्मचारियों से कार्यालय में अपने सरकारी कार्य को हिंदी में करने के लिए आग्रह किया। श्री आशुतोष कुमार तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं एवं समापन समारोह से संबंधित सभी कार्यकलापों का समन्वयन किया।

हिंदी कार्यशाला आयोजित

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में दिनांक 29 जून 2018 को संस्थान के कर्मचारियों के लिए 'हिंदी'

कंप्यूटर टंकण में यूनिकोड का अनुप्रयोग' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री बनबिहारी साहु, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, भुवनेश्वर को इस कार्यशाला में व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किया गया था। कुल 16 प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया।



संस्थान के नवनियुक्त तकनीकी कर्मचारियों के लिए यूनिकोड का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 14 दिसंबर 2018 को 'कंप्यूटर टांइपिंग में यूनिकोड का अनुप्रयोग' विषय पर संस्थान के 25 नवनियुक्त तकनीकी कर्मचारियों के लिए हिंदी तकनीकी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के आरंभ में सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने हिंदी टांइपिंग में यूनिकोड की उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा सभी नवप्रशिक्षकों से अपने कार्यालयी कार्यों में प्रयोग करने का आग्रह किया। डॉ.बनबिहारी साहु, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, भुवनेश्वर को इस कार्यालय में उपरोक्त विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था जिन्होंने सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक दोनों रूपों में यूनिकोड की समग्र जानकारी संस्थान के सभी नवनियुक्त 25 तकनीकी कर्मचारियों को प्रदान की।





हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का विशिष्ट समारोह

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में दिनांक 22 जनवरी 2019 को संस्थान के निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिंदी शिक्षण योजना का एक विशिष्ट समारोह आयोजित किया गया। इसमें संस्थान के सभी प्रभागाध्यक्षों तथा हिंदी

शिक्षण वर्ष 2019 के प्रारंभिक सत्र जनवरी-मई में नामित सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। हिंदी शिक्षण योजना, कटक के मुख्यालय भारत संचार निगम लिमिटेड के प्रधान महाप्रबंधक श्री हरीश चंद्र महांती इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

कार्यक्रम के आरंभ में सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में हिंदी शिक्षण योजना के प्राध्यापक श्री मदन कुमार को शिक्षण योजना के बारे में जानकारी देने के लिए आमंत्रित किया। श्री मदन कुमार ने शिक्षण योजना की पृष्ठभूमि, उद्देश्य तथा सरकारी कर्मचारियों के लिए इसकी उपयोगिता पर महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया।



इसके पश्चात संस्थान के हिंदी अनुवादक श्री विभु कल्याण महांती ने संस्थान में हिंदी प्रशिक्षण की स्थिति पर एक तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया और बताया कि किस प्रकार विगत दो वर्षों में संस्थान में हिंदी प्रशिक्षण पाने वाले ज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.लोटन कुमार बोस ने विगत सत्र में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत अपने प्रशिक्षण के अनुभवों को सभा के साथ साझा किया और संतुष्टि व्यक्त की।

मुख्य अतिथि श्री हरीश चंद्र महांती ने अपने संबोधन में हिंदी भाषा की सहजता और इसकी व्यापकता की चर्चा की। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में अपने पदस्थापना के दौरान होने वाले भाषिक अनुभवों, चुनौतियों तथा इनमें हिंदी भाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और कहा कि हिंदी भाषा भारत की एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश में आसानी से बोली और समझी जाती है। उन्होंने हिंदी शिक्षण योजना, कटक के वर्ष 2019 के आरंभिक सत्र में राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों के रिकार्ड नामांकन



(37) के लिए संस्थान के निदेशक डॉ.हिमांशु पाठक को बधाई दी और प्रशिक्षार्थियों को शुभकामनाएं दी।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में निदेशक महोदय डॉ.हिमांशु पाठक ने हिंदी शिक्षण योजना क संस्थान में सफलतापूर्वक लागू होने पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने हिंदी भाषा की

वैश्विक स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि मंदारिन और अंग्रेजी के बाद हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जानी वाली भाषा है जो प्रत्ये भारतीय के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऐसी भाषा जो हमारी राजभाषा है और अपनी व्यापकता तथा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सबसे बड़ा संपर्क सूत्र हाने के कारण हमारी राष्ट्रभाषा भी है और विश्वस्तर पर जिसे तीसरी सबसे बड़ी भाषा होने का गौरव प्राप्त है, ऐसी भाषा के संवर्द्धन और विकास के लिए हम सभी को अपने व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करना चाहिए तथा अपने सरकार कामकाज के साथ-साथ वैज्ञानिक एवं साहित्यिक रचनाओं में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

सभा के अंत में सहायक निदेशक, राजभाषा ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक महोदय, सभी प्रभागों के अध्यक्षों तथा नवप्रशिक्षुओं को समारोह की सफलता के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।



राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की चहारदीवारी पर कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग



धान



इंद्रधनुष



धान

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह द्वारा किसान मेला का उद्घाटन

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 26 फरवरी 2019 को एक किसान मेला का आयोजन किया गया। भारत सरकार के माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह तथा केंद्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस तथा कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा इस मेले का उद्घाटन किया गया। इस मेले में लगभग 4000 किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर ओडिशा में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों, ओयूएटी, कृषि विज्ञान केंद्र एवं राज्य कृषि विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अधिकारी तथा प्रेस एवं मीडिया के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इस अवसर पर माननीय मंत्रिद्वय ने राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में नवनिर्मित केंद्रीय जीनोमिक्स एवं गुणवत्ता प्रयोगशाला का संयुक्त रूप से उद्घाटन करके राष्ट्र को समर्पित किया।

डेयर के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने केंद्रीय मंत्रियों, किसानों, गणमान्य व्यक्तियों एवं आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया तथा राष्ट्रीय खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्राप्त करने और किसानों की समृद्धि के लिए आईसीएआर की विभिन्न शोध उपलब्धियों के बारे जानकारी दी। अंत में राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने औपचारिक रूप से सभी को धन्यवाद दिया।







भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 'सार्क कृषि केंद्र' (एसएसी) की क्षेत्रीय सलाहकारी बैठक का आयोजन

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में दिनांक 14 अगस्त 2018 को निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक की अध्यक्षता में सार्क कृषि केंद्र (एसएसी) की क्षेत्रीय सलाहकारी बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में भूटान से श्री पेमा चोफिल, नेपाल से डॉ. राम बरन यादव, अफगानिस्तान से श्री अब्दुल तवाब दलावरी, श्रीलंका से डॉ. आर. एस. के. कीर्तिसेना, बांग्लादेश से डॉ. मोहम्मद जहांगीर कबीर तथा पाकिस्तान से डॉ. मोहम्मद युसूफ ने प्रतिनिधित्व किया। इस बैठक में सार्क कृषि केंद्र, ढाका, बांग्लादेश के निदेशक डॉ. एस. एन. बख्तियार तथा वरिष्ठ कार्यक्रम विशेषज्ञ (फसल) डॉ. प्रद्युम्नराज पांडेय उपस्थित थे। बैठक में अधिक उपज देने वाली जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों तथा किस्मों के परस्पर आदान-प्रदान को बढ़ावा देने, चावल आधारित स्थायी खाद्य मूल्य शृंखला प्रणाली को विकसित करने एसडीजी लक्ष्यों के अनुसार प्रौद्योगिकियों एवं ज्ञान के आदान-प्रदान तथा नीति वार्ता के लिए आईआरआरआई एवं राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली में वरिष्ठ वैज्ञानिकों के परिदर्शन कार्यक्रम जैसे प्रमुख बिंदुओं पर विचार-विमर्श किया गया।





“अखिल भारतीय समन्वित चावल उन्नयन परियोजना” (एक्रिप) के अंतर्गत चावल समूह की 54वीं वार्षिक बैठक राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के नवनिर्मित प्रेक्षागृह में एक्रिप के अंतर्गत चावल समूह की 54वीं वार्षिक बैठक 30 मई से 2 जून 2019 के दौरान आयोजित हुई। डॉ.डी के यादव, सहायक महानिदेशक (बीज) कार्यक्रम के अध्यक्ष, डॉ.एच एस गुप्ता, पूर्व निदेशक, आईएआरआई, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा डॉ. दिनेश कुमार, सहायक महानिदेशक (एफएफसी) कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि थे।

डॉ.डी.के.यादव, सहायक महानिदेशक (बीज) भाकृअनुप, नई दिल्ली ने एनआरआरआई में पहली बार चावल समूह की वार्षिक बैठक के संचालन के लिए एनआरआरआई की टीम की सराहना की। उन्होंने देश में सबसे बड़े क्षेत्र और उत्पादन के साथ चावल की फसल के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ.यादव ने एआरआईसीआरआईपी के सबसे बड़े नेटवर्क के महत्व को रेखांकित किया जिसमें 45 वित्तपोषित और 100 से अधिक स्वैच्छिक केंद्र हैं जो हर साल 939 प्रयोगों का



संचालन करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में चावल अनुसंधान के अंतर्गत चल रहे चावल की जैव-सुदृढ़ीकरण, आणविक प्रजनन और संकर चावल तथा सी3-सी4 और जैविक नाइट्रोजन निर्धारण जैसे उच्च प्राथमिकता वाले अनुसंधान परियोजनाओं की सीआरपी द्वारा सराहना की जाती है।

डॉ. दिनेश कुमार, सहायक महानिदेशक (एफएफसी) भाकृअनुप, नई दिल्ली ने अखिल भारतीय समन्वित चावल कार्यान्वयन परियोजना प्रणाली के तहत वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बावजूद राष्ट्रीय बीज प्रणाली में स्थान पाने में अधिकांश विमोचित किस्मों की विफलता पर अपनी चिंता व्यक्त की। डॉ. कुमार ने वैज्ञानिकों से नए वैज्ञानिक उपकरणों और तकनीकों के लाभ के साथ विविध पारिस्थितिकी के लिए रोग एवं कीट प्रतिरोधी तथा 10-12 टन की उपज क्षमता वाली चावल किस्में विकसित करने का आग्रह किया।



धान

भाकृअनुप-एनआरआरआई के निदेशक डॉ.हिमांशु पाठक ने गणमान्य व्यक्तियों और एआईसीआरआईपी, बीज उद्योग और अन्य प्रतिभागियों के प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, कम आय और अन्य मुद्दों की चुनौतियों के ढेरों के बावजूद एआईसीआरआईपी की उत्पत्ति ओर कृषि समुदाय की सेवा में इसके योगदान के बारे में बताया।

डॉ.एस.आर.वोलेटी, निदेशक, भाकृअनुप-आईआईआरआर ने एआईसीआरआईपी और आईआईआरआरआर के अनुसंधान पर प्रकाश डाला। उन्होंने पाँच दशक से अधिक समय से एआईसीआरआईपी की सफलता में योगदान के लिए एआईसीआरआईपी के सभी सदस्यों के समर्थन और सहयोग की सराहना की। सत्र के दौरान एनआरआरआई की 6, आईआईआरआर की 5, सीएसकेएचपीकेवी, मलान की 2 सहित कुल 13 प्रकाशन विमोचित किए गए और आईआईआरआर ने दो एंड्रॉयड मोबाइल एप का विमोचन किया गया।





‘कृषि शिक्षा दिवस’

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 3 दिसंबर 2018 को 7वाँ ‘कृषि शिक्षा दिवस’ मनाया गया जिसमें कटक शहर के 13 विद्यालयों एवं कनिष्ठ महाविद्यालयों के उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के 150 विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों ने भाग लिया। समारोह के अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान का चयन किसी अन्य विज्ञान की तरह चुनौतिपूर्ण और बौद्धिक रूप से संतोषजनक है। उन्होंने कृषि विज्ञान को अपने कैरियर का एक हिस्सा बनाने के लिए सलाह दी। उन्होंने विद्यार्थियों के लाभ के लिए “कृषि की ओर युवकों का आकर्षण” नामक शैक्षिक बुलेटिन का विमोचन किया। दिवस में प्रतिभागी विद्यार्थियों के लिए ‘क्या स्मार्ट कैरियर के लिए कृषि शिक्षा नई अवसरें उत्पन्न कर सकता है’ विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा ‘सामान्य कृषि’ पर एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने नमूनों, चार्ट ग्रैफ एवं लाइव सामग्रियों द्वारा ‘जलवायु स्मार्ट कृषि’ पर अपनी नवोन्मेषी परिकल्पनाओं को प्रदर्शित किया।







स्वच्छ भारत पखवाड़ा

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 'स्वच्छ भारत सेवा पखवाड़ा-2018' का आयोजन 15 सितंबर से 2 अक्टूबर 2018 के दौरान किया गया। इस अवधि में एनआरआरआई परिसर के साथ-साथ अपनाए गए गांवों में विभिन्न साफ-सफाई का काम किया गया। डॉ. हिमांशु पाठक, निदेशक द्वारा दिनांक 14.9.2018 को संस्थान के मुख्य द्वार पर स्थापित महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमाओं पर पुष्ट अर्पित करके 'स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा-2018' का उद्घाटन किया गया। निदेशक महोदय ने 'स्वच्छ भारत सेवा कार्यक्रम-2018' के महत्व पर जोर दिया और 'महात्मा गांधी जी से हमें क्या सीखना है' विषय पर एक भाषण दिया।

संस्थान में दिनांक 17.9.2018 को 'स्वच्छ भारत मिशन में बच्चों की भूमिका' विषय पर अंग्रेजी, हिंदी एवं ओडिया भाषा में सीआरआरआई हाई स्कूल के छात्रों को शामिल करते हुए एक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

संस्थान परिसर विकास समिति के सहयोग से संस्थान के कृषि इंजीनियरिंग अनुभाग के परिसर में दिनांक 18.9.2018 को 'वृक्षारोपण और सफाई अभियान आयोजित किया गया।

संस्थान में दिनांक 20.9.2018 से 28.9.2018 के दौरान एक सफाई अभियान चलाया गया जिसमें प्रभागाध्यक्षों द्वारा प्रयोगशालाओं एवं नेटहाउस की सफाई की गई।

एनआरआरआई द्वारा अपनाए गए गांवों में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। सत्याभासापुर और इसके आस-पास के गांवों के 150 ग्रामीणों ने भाग लिया। संस्थान के गणमान्य लोगों और अधिकारियों ने ग्रामीणों के साथ चर्चा करते हुए गांव के परिवेश और खेतों की सफाई पर जोर दिया। इसी गांव में स्थित कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के परिसर तथा गांव के सड़क की सफाई की गई।

संस्थान में 2 अक्टूबर 2018 को गांधीजी की 150वीं जयंती के पालन पर संस्थान के परिसर में एक सफाई अभियान हेतु 'श्रमदान' का आयोजन किया गया। गांधीजी की 150वीं जयंती मनाने के लिए एक भव्य समारोह आयोजित किया गया जिसका संयोजन डॉ श्रीकांत लेंका, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा एवं समारोह का मंच संचालन श्री आशुतोष कुमार तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया।







धान

कृषि विज्ञान केंद्र, संथपुर के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

डेयर के सचिव एवं भारतीय कृषि अनसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने 2 दिसंबर 2018 को कृषि विज्ञान केंद्र, संथपुर के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. ए.के. सिंह, उप महानिदेशक (विस्तार), डॉ. एस.एस. सिंह, निदेशक (अटारी, अंचल-5), एनआरआरआई के निदेशक डॉ. हिमांशु पाठक, एनआरआरआई के सभी प्रभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं वरिष्ठ अधिकारी, सीपीडब्ल्यूडी के कार्यकारी अभियंता तथा 120 उद्यमशील किसान उपस्थित थे।





वित्तीय प्रबंधन प्रणाली पर प्रशिक्षण

भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में 6-7 अप्रैल 2018 के दौरान वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (एफएमएस) पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में ओडिशा, अरुणाचल प्रदेश और अंडमान निकोबार में स्थित परिषद के संस्थानों से आए प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक ने की और श्री के.सी.जोशी, संयुक्त निदेशक (प्रशासन) ने संस्थान के गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समन्वयन श्री सुनील कुमार दास (वित्त एवं लेखा अधिकारी) द्वारा किया गया। समापन कार्यक्रम में श्री बसंत कुमार साहु (कार्यालय अध्यक्ष) ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।





अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस





अटल बिहारी वाजपेयी जी की स्मृति में कवि सम्मेलन





खेलकूद संबंधी उपलब्धियां

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान चावल अनुसंधान के अपने प्रमुख कार्य के साथ-साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित खेलकूद की प्रतियोगिताओं में भी अग्रणी स्थान रखता है। संस्थान आईसीएआर अंतर क्षेत्रीय प्रतियोगिता में क्रमशः वर्ष 2006 (आईएआरआई, दिल्ली), 2007 (नार्म, हैदराबाद), 2011(क्रायजैफ, बैरकपुर), 2012 (नार्म, हैदराबाद), 2013 (नार्म, हैदराबाद) में आयोजित प्रतियोगिताओं में एनआरआरआई 5 बार समग्र रूप से चैंपियन रहा है। आईसीएआर पूर्वी क्षेत्र खेल प्रतियोगिताओं में वर्ष 2002 से लेकर अब तक अर्थात् 2018 तक एनआरआरआई समग्र रूप से लगातार चैंपियन है। वर्ष 2007 तथा वर्ष 2008 में भुवनेश्वर में आयोजित सीनियर स्टेट ओडिशा कबड्डी प्रतियोगिताओं में एनआरआरआई चैंपियन रह चुका है। संस्थान के वर्तमान कार्यालय अध्यक्ष श्री बसंत कुमार साहु तथा श्री रवींद्र कुमार बेहेरा ने राष्ट्रीय कबड्डी चैंपियनशिप में तथा श्री दीप्ति रंजन साहु ने राष्ट्रीय बीच कबड्डी चैंपियनशिप में कोच की भूमिका निभाई है। श्री प्रशांत कुमार जेना और श्री प्रदीप कुमार परिङ्गा ने राष्ट्रीय कबड्डी चैंपियनशिप में ओडिशा राज्य का प्रतिनिधित्व किया है।







“मैं अपनों के हठान्त सत्यों से दंडित हूँ
 उनके विमूढ़ विश्वासों से हारा हूँ
 उनकी नादानी से
 कुछ ऐसे अपराधी साबित हूँ
 मानो अपना ही हत्यारा हूँ।
 जीवन में यह कैसा कुटिल द्वैध ?
 ये कैसे विधान-निर्भय जीना अवैध ?
 जीवित हूँ ? या केवल अपहृत हूँ ?
 संज्ञा हूँ ? या केवल व्यहृत हूँ ?
 क्यों इतना ऊहापोह
 यदि अनुकृति मात्र हूँ तुम्हारी ?

वे जिनसे पाया
 नगण्य सुख-साध कुछ....
 दान मिला,
 दान से अधिक एहसान मिला
 वे जिनको प्यार दिया जीवन को खाली कर
 उन्होंने दया की,
 मुझ पर उपकार किया,
 वे सब समृद्ध रहे अपने में,
 लेकिन मैं रीत गया आत्मा को व्यय करके,
 बदले में केवल एक कुंठा संचय कर।
 सोचा था जिनको-ये मेरे हैं मैं उनका हूँ
 वे केवल अपने थे,
 विश्वासी आँखों के कुछ मिथ्या सपने थे।”

-आत्मजयी (वाजश्वा का क्रोध), बाबू कुँवर नारायण



भारत सरकार

2019-20

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए
वार्षिक कार्यक्रम
गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' संख्या	'ख' संख्या	'ग' संख्या
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (इंग्रीज गाइड)	1. क. कोड से वा लेख जो 100% 2. क. कोड से छ. लेख जो 100% 3. क. कोड से ग. लेख जो 65% 4. क. कोड से वा वा छ. लेख 100% के सन्दर्भ में गाइड के आधारित व्यक्तिया	1. ग. लेख जो ना लेख जो 90% 2. द. लेख से या लेख जो 90% 3. या लेख से ना लेख जो 55% 4. न लेख से वा छ. लेख 90% के सन्दर्भ में गाइड के आधारित व्यक्तिया	1. ग. लेख दो का संख्या को 55% 2. ग. लेख दो दा लेख को 55% 3. ग. लेख दो ना लेख को 55% 4. न लेख से वा छ. लेख 55% के मान्यताप्राप्त रूप से के आधारित व्यक्तिया
2.	हिंदी में जाप्त मर्जी का उत्तम हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में दिप्पना	75%	50%	30%
4.	हिंदी साध्यन से प्रतिक्रिया कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी ट्रैक्शन बर्नले वाले बर्नरामी एवं आशुलिपिक की अती	80%	70%	40%
6.	हिंदी ने डिक्टेशन/की बोई पर सीधे दबावा (सरबं तथा लहानक दबाव)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (ग्रामा, देवनग, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	दावेभारी प्रशिक्षण ज्ञानगी तंत्रार वरना	100%	100%	100%
9.	जनान और नानक राष्ट्रीय पुस्तकों की लेनदेन पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल बर्नरामी अथवा हिंदी ई-पुस्तक, सौडी ई-वोडी, ग्रैन्ट्राइल तथा अंग्रेजी और शैरीय भाषाओं दो हिंदी में अनुवाद पर व्यव वी गई राशि सहित नियी पुस्तकों की खरीद पर विद्या गण कर्य।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित माझी पकाए के इत्तेज्ज्ञानिक उपकरणों की दृष्टिभाषी रूप में स्थान।	100%	100%	100%
11.	तेलसालट दृष्टिभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चाईर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन दृष्टिभाषी हो	100%	100%	100%



“मेरी एक ही इच्छा है
कि भारत एक आच्छा उत्पादक हो और
इस देश में कोई अज्ञ के
लिए आंसू बहाता हुआ भूखा जा रहे।”

सरदार वल्लभ भाई पटेल





भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान

(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)

विद्याधरपुर, कटक - 753006, ओडिशा

फोन : +91-671-2367768-783 (पीएचीएक्स) / 2367757, फेक्स : +91-671-23676663

ईमेल : director.nrri@icar.gov.in/crrictc@nic.in, वेब: www.icar-nrri.in

